प्रयागराज, शुक्रवार, 25 नवम्बर, 2022

मार्ग शीर्ष, शुक्ल पक्ष 2, वर्ष 11, अंक 216, पृष्ठ 12, मूल्य: 5.00

परख सच की

जनसंदेश टाइम्स

प्रयागराज, वाराणसी, लखनऊ, कानपुर एवं गोरखपुर से प्रकाशित

अंदर- वनडे वर्ल्ड कप की तैयारी शुरू करेगी टीम इंडिया, कीवी टीम के खिलाफ धवन होंगे कप्तान

अंदर- 'पापा चाहते थे कि हम बैरिस्टर या डॉक्टर बनें'

नगर संस्करण

E-paper : www.jansandeshtimes.net | Portal : www.jansandeshtimes.news

चुनाव आयुक्त की 'सुपरफास्ट' नियुक्ति पर सवाल

सुप्रीम कोर्ट ने पूछा–24 घंटे के भीतर ही नियुक्ति की प्रक्रिया कैसे कर ली पूरी

नई दिल्ली। मुख्य चुनाव आयुक्त और चुनाव आयुक्तों की नियुक्ति में पारदर्शिता लाने की मांग पर सुप्रीम कोर्ट की संविधान पीठ ने फैसला सुरक्षित रख लिया। सुनवाई के चौथे दिन सरकार को सुप्रीम कोर्ट के कई तीखें सवालों का सामना करना पड़ा। सुप्रीम कोर्ट के निर्देश के मुताबिक अटॉर्नी जनरल आर वेंकटरमनी ने चुनाव आयुक्त अरुण गोयल की नियुक्ति से जुड़ी फाइल कोर्ट में पेश की। कोर्ट ने फाइल देखकर इस नियुक्ति में सरकार की ओर से दिखाई तेजी पर सवाल खड़ा किया।

संविधान पीठ की अध्यक्षता कर रहे जस्टिस के एम जोसेफ ने कहा कि 18 नवंबर को हम इस मसले पर सुनवाई कर रहे थे उसी दिन नियुक्ति के लिए फाइल भेजी गई और पीएम ने उसी दिन नाम को मंजूरी दे दी। इतनी जल्दबाजी

फैसला सुरक्षित

किस आधार पर कानून मंत्री ने चार नामों को शॉर्ट लिस्ट किया

कोर्ट ने कहा- हम कोई टकराव नहीं चाहते, लेकिन यह जल्दबाजी का था फैसला

पूछा- बिजली की तेजी से चुनाव आयुक्त की नियुक्ति क्यों

की क्या जरूरत थी ? बेंच के एक दूसरे सदस्य जस्टिस अजय रस्तोगी ने भी सवाल उठाया कि चुनाव आयुक्त का पद 15 मई से खाली था। आप बताइए कि 15 मई से 18 नवंबर के बीच क्या हुआ। 24 घण्टे में ही नाम भेजे जाने से लेकर उसे मंजूरी दिए जाने की सारी प्रकिया पूरी कर ली गई। सुप्रीम कोर्ट ने

इस पद पर नियुक्ति के लिए कानून मंत्रालय की ओर से सिफारिश के लिए चार नामों के चयन और उनमें से भी एक नाम (अरुण गोयल) के चयन के आधार पर भी सवाल खड़ा किया।

कोर्ट ने कहा कि आप हमें बताइये कि लॉ मिनिस्ट्री ने इन 4 नामों को ही क्यों चुना। सवाल ये भी है कि आपने चयन के लिए लिस्ट को इन 4 लोगों तक ही सीमित क्यों रखा है। इनके अलावा और भी बहुत वरिष्ठ नौकरशाह है । सुनवाई के दौरान अटॉनी जनरल ने कहा कि इन नाम को शार्टलिस्ट करने के लिए कई आधार है मसलन अधिकारियों की वरिष्ठता, रिटायरमेंट, और उनका चुनाव आयोग में कार्यकाल देखा जाता है। इस प्रक्रिया में भी कुछ गलत नहीं हुआ। पहले भी 12 से 24 घंटे में नियुक्ति हुई है। ये चार नाम भी डीओपीटी के डेटाबेस से लिए गए। वह सार्वजनिक रूप से उपलब्ध है। इस पर भी सुप्रीम कोर्ट ने सवाल किया कि फिर इन 4 में से भी आपने ऐसे लोगों के नाम चुने हैं जिन्हें चुनाव आयुक्त के रूप में 6 साल भी नहीं मिलेंगे। हम उम्मीद करते हैं कि आप इस तरह से कार्य करेंगे कि आप वैधानिक अनिवार्यताओं का पालन करेंगे। आपको ऐसे लोगों को चुनना चाहिए जिन्हें आयोग में 6 साल का कार्यकाल मिले। अगर आप इस बात पर अड़े हुए हैं कि किसी भी चुनाव आयुक्त को पूर्ण कार्यकाल नहीं मिलेगा, तो आप कानून के खिलाफ हैं।

अरुण गोयल का नाम ही क्यों चुना गया

कोर्ट ने सवाल किया कि सिफारिश में भेजे गए चार नामों में से एक ही नाम का चयन किस आधार पर हुआ। हमें किसी से (अरुण गोयल) से कोई दिक्कत नहीं है। उनका बेहतरीन ऐकडेमिक रिकॉर्ड रहा है। हमारी चिंता नियुक्ति की प्रकिया/आधार को लेकर है। एक ऐसे शख्स जो दिसंबर में रिटायर होने वाले थे। जो इन 4 में सबसे ज्यादा युवा थे, आपने उनको किस आधार पर चुना। सुनवाई के दौरान अटॉनी जनरल ने ये भी कहा कि सवाल ये भी है क्या कार्यपालिका के हर छोटे छोटे काम की समीक्षा होगी। अगर आप हर कदम पर शक करेंगे तो ये चुनाव आयोग की स्वतंत्रता और गरिमा को प्रभावित करेगा। ये आयोग के बारे में लोगों की राय पर भी बुरा असर डालेगा। इस पर जस्टिस जोसेफ ने अटॉर्नी जनरल से कहा कि कोई भी यह न समझे कि हमने अपना मन बना लिया है या हम आपके खिलाफ हैं। हम केवल यहां पर बहस और चर्चा ही कर रहे हैं।

आदिवासी देश के असली मालिक : राहुल गांधी

भोपाल। मध्यप्रदेश में राहुल गांधी की भारत जोड़ो यात्रा दूसरे दिन 23 किलोमीटर चली। इस दौरान पहली बार यात्रा में प्रियंका गांधी शामिल हुईं। उनके साथ पति रॉबर्ट वाड्रा और बेटा रेहान भी पैदल चले। दूसरे दिन का आखिरी पड़ाव खंडवा का छैगांव माखन रहा। इससे पहले राहुल गांधी आदिवासी जननायक टंट्या मामा की जन्मस्थली पर पहुंचे। राहुल गांधी ने यहां एक सभा को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि आदिवासी इस देश के असली मालिक हैं। बीजेपी ने आदिवासियों को वनवासी कहा, इसके पीछे उनकी दूसरी सोच है। इसके लिए बीजेपी आदिवासियों से माफी मांगे।

राहुल गांधी ने कहा कि अंग्रेजों ने टंट्या मामा को फांसी पर चढ़ाया और आरएसएस की विचारधारा ने अंग्रेजों की मदद की। राहुल गांधी ने आरोप लगाया कि आदिवासियों पर सबसे ज्यादा अत्याचार मध्यप्रदेश में हो रहे हैं। ऐसा प्रदेश हमें नहीं चाहिए, हमें

भारत जोड़ो यात्रा

कहा-वनवासी कहने पर माफी मांगे बीजेपी

आदिवासियों को इज्जत और रक्षा देने वाला प्रदेश चाहिए।इससे पहले गुरुवार को यात्रा की शुरूआत सुबह खंडवा के बोरगांव बुजुर्ग से शुरू हुई। लंच ब्रेक रुस्तमपुर में हुआ। यहां से राहुल गांधी कार से टंट्या मामा की जन्मस्थली बड़ोदा अहीर पहुंचे। यहां सभा को संबोधित करने के बाद दूसरे चरण की यात्रा डूल्हार फाटा के गुरुद्वारा साहिब से शुरू हुई। यात्रा का रात्रि विश्राम खरगोन जिले के खेरदा में है। शुक्रवार को यहीं से यात्रा आगे बढ़ेगी। लंच ब्रेक के पहले सचिन पायलट भी राहुल गांधी के साथ यात्रा में शामिल हुए। हालांकि लंच ब्रेक के बाद पायलट नहीं दिखे। प्रियंका गांधी 3 दिन तक भारत जोड़ो यात्रा में हैं। वे अंबेडकर नगर महू तक यात्रा में रहेगी।

NARAYANDAS
नरायन दास सर्राफ ज्वेलर्स
(प्रा0लि0)
वाराणसी
सोने, चाँदी, हीरे, प्लेटिनम एवं कुंदन के आभूषण
• 916 हॉलमार्क ज्वेलरी •
रथयात्रा
0542-2361600, 2987700, 8318650589
अर्दली बाजार
0542-2505500, 2507700, 9455084195
SUNDAY OPEN
•रथयात्रा • अर्दली बाजार • चौक (ठठेरी बाजार) वाराणसी
• पार्किंग की सुविधा उपलब्ध •

मायावती की बड़ी कार्रवाई पांच नेताओं को बसपा से किया निष्कासित

लखनऊ। मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव में पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल रहने पर बसपा के चार पदाधिकारियों को निष्कासित कर दिया गया है। जिला यूनिट की जांच रिपोर्ट के बाद बसपा की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के निर्देश पर निष्कासन की कार्रवाई की गई है। लोकसभा उपचुनाव में मैनपुरी लोकसभा सीट पर बसपा ने प्रत्याशी नहीं उतारा है। कार्यकताओं के लिए पार्टी हाईकमान ने अभी तक कोई निर्देश भी जारी नहीं किए हैं। लोकसभा उपचुनाव के दौरान पार्टी के कुछ नेताओं द्वारा पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल रहने की शिकायत हाईकमान को मिली थी। जिसकी लोकल कमेटी से जांच कराई गई। लोकल कमेटी की जांच रिपोर्ट के बाद आगरा जोन इंचार्ज दीपक पेंटर और मनीष सागर, पूर्व जिलाध्यक्ष राजेंद्र सिंह सोनी, विधानसभा क्षेत्र भोगांव के पूर्व प्रत्याशी सुरेंद्र यादव, जिला महासचिव संजय सिंह को पार्टी की राष्ट्रीय अध्यक्ष पूर्व मुख्यमंत्री मायावती के निर्देश पर पार्टी से निष्कासित कर दिया गया है। दो दिन पहले बसपा से जिला सचिव विद्याराम मुनीम को भी पार्टी से निष्कासित किया जा चुका है। बसपा जिलाध्यक्ष प्रेमचंद्र शाक्य ने बताया कि जिला महासचिव संजय सिंह के पार्टी विरोधी गतिविधियों में शामिल रहने, अनुशासनहीनता करने की शिकायतें मिली थीं। इसकी जांच कराई गई। जांच में शिकायतें सही पाई गई हैं, जिसके बाद निष्कासन की कार्रवाई की गई है।

लड़कियों के प्रवेश पर दिल्ली जामा मस्जिद में पाबंदी हटी

नई दिल्ली। दिल्ली के जामा मस्जिद में लड़कियों के प्रवेश पर लगाई गई पाबंदी को एक दिन बाद ही हटा लिया गया है। सूत्रों के मुताबिक दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने जामा मस्जिद के शाही इमाम बुखारी से बात की और जामा मस्जिद में महिलाओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगाने वाले आदेश को तत्काल रद्द करने की अपील की।

इमाम बुखारी ने आदेश को रद्द करने पर सहमति जताई है। इससे पहले मस्जिद के शाही इमाम सैयद अहमद बुखारी के कहा था, 'मस्जिद परिसर में कुछ घटनाएं सामने आने के बाद यह फैसला लिया गया। उन्होंने कहा कि जामा मस्जिद इबादत की जगह है और इसके लिए लोगों का स्वागत है। लेकिन लड़कियां अकेले आ रही हैं और अपने दोस्तों का इंतजार कर रही हैं, यह

प्रतिबंध रद्द

उपराज्यपाल की दखल से वापस लिया फैसला, महिला आयोग ने जारी कर दिया था नोटिस

जगह इस काम के लिए नहीं है। इस पर पाबंदी है। दिल्ली महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने इसे महिलाओं के अधिकारों का उल्लंघन बताते हुए नोटिस जारी किया हैं। महिला आयोग की अध्यक्ष स्वाति मालीवाल ने कहा, 'ये बहुत ही शर्मनाक और गैर संवैधानिक हरकत है। इन्हें क्या लगता है ये भारत नहीं ईरान है कि इनका जब मन करेगा महिलओं से ये भेदभाव करेंगे और इन्हें कोई कुछ नहीं कहेगा। जितना हक एक पुरुष का इबादत करने का है उतना ही एक महिला का भी है।

पत्नी को टुकड़ों में काटकर फेंकने का अभियुक्त नहीं है जमानत के लायक

लखनऊ। इलाहाबाद हाईकोर्ट की लखनऊ खंडपीठ ने पत्नी को मारकर उसकी लाश को टुकड़ों में काटकर फेंकने के अभियुक्त पति की जमानत याचिका खारिज कर दी है। न्यायालय ने कहा कि अभियुक्त के जघन्य अपराध को देखते हुए उसे जमानत पर रिहा नहीं किया जा सकता। यह आदेश न्यायमूर्ति दिनेश कुमार सिंह की एकल पीठ ने अभियुक्त समीर खान की जमानत याचिका को खारिज करते हुए दिया। अभियुक्त बलरामपुर का समीर खान मुंबई में एक चिकन शॉप में काम करता था, उसका प्रेम संबंध वहीं की एक युवती से हो गया और दोनों ने शादी कर ली। शादी के कुछ समय बाद 2020 में वह बलरामपुर जनपद स्थित अपने गांव चला आया। उसने पुलिस को दिए अपने बयान में बताया कि वह जब भी अपनी पत्नी को फोन करता तो उसका फोन व्यस्त जाता था, इससे उसे पत्नी के चरित्र पर शक होने लगा। युवती का शव 7 जुलाई 2020 को बरामद हुआ था।

प्रयागराज व झांसी को करोड़ों की सौगात

प्रयागराज। सीएम योगी आदित्यनाथ गुरुवार को प्रयागराज पहुंचे। यहां प्रबुद्ध जन सम्मेलन में कहा, डबल इंजन की भाजपा सरकार में किसी गरीब, व्यापारी, बेटी और युवा के हितों के साथ खिलवाड़ संभव नहीं है। वर्षों तक जो माफिया प्रयागराज के विकास में बैरियर बने रहे, गरीबों के जमीन पर अवैध कब्जे करते रहे, जिन्होंने युवाओं के साथ छल किया, आज कराह रहे हैं।

योगी ने कहा, माफिया के अवैध कब्जे से मुक्त कराई गई भूमि पर आज प्रयागराज में गरीबों के लिए मकान बन रहे हैं। किसी ने भी अवैध कब्जा तो उसकी संपत्ति पर गरीबों के लिए ही घर बनाएंगे। इस दौरान प्रयागराज को 1295 करोड़ रुपए की विभिन्न परियोजनाओं की सौगात दी। इनमें 325.16 करोड़ की 35 परियोजनाओं का लोकार्पण और 969.57 करोड़ की 249 परियोजनाओं का शिलान्यास किया गया। मुख्यमंत्री ने गुरुवार को वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की धरती को बड़ी सौगात देने के साथ ही साथ प्रदेश सरकार की उपलब्धियों को भी गिनाया। सीएम योगी आदित्यनाथ ने झांसी के लक्ष्मी व्यायाम मंदिर इंटर कालेज में बटन दबाकर जिले में 328 करोड़ की परियोजनाओं का लोकार्पण तथा शिलान्यास किया। वहीं, झांसी डीएम रविंद्र कुमार द्वारा लिखी गई कॉफी टेबल बुक का विमोचन किया। जो पर्यटन विकास से संबंधित है। यहां क्या संभावना हैं, इस बुक में बताया गया है। बुंदेलखंड को आज सौगात देने के साथ ही साथ उन्होंने प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन को भी

सम्मेलन

प्रयागराज में 1295 और झांसी में 322 करोड़ की परियोजनाओं का सीएम योगी ने शुभारंभ और शिलान्यास किया

संबोधित किया। सीएम ने कहा कि जन भावनाओं को ध्यान में रखते हुए कुंभ से पहले अक्टूबर, 2018 में इलाहाबाद को पुराना नाम 'प्रयागराज' देने का गौरव मिला।

आज प्रयागराज में हर गरीब को घर मिल रहा है, गरीबों को फ्री बिजली कनेक्शन है, रसोई गैस दिया जा रहा है। सीएम ने कहा कि 2019 में प्रयागराज में पवित्र त्रिवेणी संगम पर 'दिव्य एवं भव्य कुंभ' आयोजित हुआ था। इतने विशाल मेले को सुरक्षा एवं स्वच्छता के साथ सकुशल सम्पन्न किया जाना अपने में एक कीर्तिमान था। अब 2025 कुंभ के लिए प्रयागराज तैयार हो रहा है। स्वनिधि योजना, आवास योजना के 20 लाभार्थियों को चाबी सौंपी। इस मौके पर डिप्टी सीएम केशव प्रसाद मौर्य, बृजेश पाठक, मंत्री नंदगोपाल गुप्ता नंदी, पीयूष रंजन निषाद, प्रवीण पटेल, गुरु प्रसाद मौर्य, महापौर अभिलाषा गुप्ता, सांसद केशरी देवी, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ. वीके सिंह, भाजपा काशी प्रांत अध्यक्ष महेशचंद्र श्रीवास्तव, शहर अध्यक्ष गणेश केशरवानी, अवधेशचंद्र गुप्त सहित तमाम विधायक और बड़ी संख्या में लोग मौजूद रहे।

यह चुनाव विधायक और सरकार बनाने का नहीं

यह चुनाव अगले 25 सालों के लिए गुजरात का भविष्य तय करेगा

चुनावी रैली

पालनपुर में बोले पीएम मोदी, अब समय लंबी छलांग लगाने का है

बनासकांठा। गुजरात विधानसभा चुनाव को लेकर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की ताबड़तोड़ रैलियों का दौर जारी है। गुरुवार (24 नवंबर, 2022) को एक बार फिर पीएम मोदी ने बनासकांठा के पालनपुर में चुनावी रैली को संबोधित किया। इस दौरान पीएम मोदी ने विपक्षी दलों पर जहां जमकर निशाना साधा। वहीं बीजेपी सरकार में किए गए विकास कार्यों की सराहना की।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि गुजरात का आगामी विधानसभा चुनाव न तो विधायक और न ही सरकार चुनने को लेकर है, बल्कि यह अगले 25 सालों के लिए राज्य की किस्मत तय करने को

लेकर है। बनासकांठा जिले के पालनपुर में आयोजित एक चुनावी सभा को संबोधित करते हुए मोदी ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के नेतृत्व वाली केंद्र और गुजरात की सरकारों ने राज्य में विकास के बहुत सारे काम किए हैं, लेकिन अब समय लंबी छलांग लगाने का है। मोदी ने कहा कि एक मजबूत सरकार बनाने के लिए मुझे आपका समर्थन चाहिए। आप लोगों को मुझे अपनी समस्याएं बताने की आवश्यकता नहीं है, क्योंकि मैं यहीं पला बढ़ा हूं और मुद्दों को अच्छी तरह समझता हूं। मैं आप सभी से अपील करता हूं कि आप बनासकांठा जिले की सभी सीटों पर भाजपा की जीत सुनिश्चित करें। प्रधानमंत्री ने कहा कि पिछले दो दशकों में भाजपा सरकार ने गुजरात में पशुपालन क्षेत्र के विकास के लिए अभूतपूर्व प्रयास किए हैं। मोदी ने कहा कि आज जब पूरी दुनिया में पर्यटन उद्योग बहुत तेज गति से आगे बढ़ रहा है, हमारा बनासकांठा जिला पर्यटकों को आकर्षित करने में सफल रहा है।

गुजरात रैली में पीएम की सुरक्षा में हुई चूक

अहमदाबाद। बावला में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सुरक्षा में चूक हुई। सूत्रों के मुताबिक बावला में एक ड्रोन प्रधानमंत्री की तरफ बढ़ रहा था जिसे एनएसजी ने गोली मारकर गिराया दिया। इस मामले में एक व्यक्ति को कस्टडी में लिया गया और कई जांच एजेंसियों को इन्वेस्टिगेशन में लगाया गया है। पीएम मोदी की रैली के दौरान सुरक्षा में चूक हुई। गुजरात में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं पीएम मोदी इन दिनों अपने गृह प्रदेश गुजरात में लगातार रैली कर रहे हैं। ज्ञात हो कि बीजेपी पिछले 27 सालों से राज्य की सत्ता में है। वह लगातार सातवां विधानसभा चुनाव जीतने के लिए अपना पूरा दमखम झोंक रही है। गुजरात की 180–सदस्यीय विधानसभा के लिए दो चरणों में मतदान होंगे। पहले चरण में राज्य की 89 सीटों पर और दूसरे चरण में 93 सीटों पर मतदान होने हैं। मतों की गिनती 8 दिसंबर को होगी। इस चुनाव के मैदान में कुल 1621 उम्मीदवार ताल ठोंक रहे हैं।

पाक में पहली बार 'मुल्ला जनरल' बना आर्मी चीफ

इस्लामिक कट्टरपंथ का खतरा, विशेषज्ञों ने भारत को सतर्क रहने की दी सलाह

इस्लामाबाद। पाकिस्तान की शहबाज शरीफ सरकार ने वर्तमान सेना प्रमुख जनरल कमर जावेद बाजवा के साथ मिलकर देश में नए आर्मी चीफ की तैनाती कर दी है। शहबाज शरीफ ने इमरान खान के पत्नी बुशरा बीबी के भ्रष्टाचार की पोल खोलने वाले लेफ्टिनेंट जनरल असीम मुनीर को नया आर्मी चीफ नियुक्त किया है। इस्लाम के नाम पर भारत से अलग होकर बने पाकिस्तान में संभवतः पहली बार हुआ है जब एक ऐसा शख्स देश के सबसे शक्तिशाली पद की कुर्सी पर बैठा है जो 'मुल्ला जनरल' के नाम से जाना जाता है। विशेषज्ञों ने भारत को पाकिस्तानी सेना में इस्लामिक कट्टरपंथ से सतर्क रहने की सलाह दी है। दरअसल, असीम मुनीर ने कुरान को पूरी

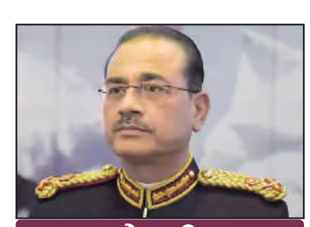

तैनाती

पाकिस्तान की शहबाज शरीफ सरकार ने देश में नए आर्मी चीफ की तैनाती की

तरह से याद कर रखा है और यही वजह है कि उन्हें मुल्ला जनरल कहा जाता है। पाकिस्तान मीडिया के मुताबिक असीम मुनीर सऊदी अरब में लेफ्टिनेंट कर्नल के पद पर तैनात रहने के दौरान कुरान को पूरी तरह से याद कर लिया था। यही वजह है कि उन्हें हाफिज-ए-कुरान कहा जाता है। मुनीर को धार्मिक रूप से बहुत कट्टर माना जाता है। पाकिस्तान के मामलों पर नजर रखने वाले भारतीय खुफिया एजेंसी रॉ के पूर्व विशेष सचिव रामनाथन कुमार का कहना है कि ऐसा पहली बार हुआ है जब पाकिस्तान में कोई ऐसा आर्मी चीफ बना है जो कुरान को पूरी तरह से याद करने वाला है। इसलिए उन्हें मुल्ला जनरल कहा जा सकता है। रॉ अधिकारी रामनाथन कुमार ने कहा कि पाकिस्तान में पहले भी ऐसे सैन्य अधिकारी हुए हैं जो हाफिज-ए-कुरान रह चुके हैं लेकिन आर्मी चीफ पहली बार हुआ है।

सपा अध्यक्ष का लोकसभा चुनाव पर बड़ा ऐलान

लखनऊ। वर्ष 2024 में होने जा वाले लोकसभा चुनावों को लेकर सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने बड़ा एलान कर दिया है। उन्होंने कहा कि वह कन्नौज से 2024 का चुनाव लड़ेंगे। दरअसल, कन्नौज में एक कार्यक्रम के दौरान सवाल के प्रतिउत्तर में ये बात कही।

उन्होंने कहा कि खाली बैठा हूं क्या करूंगा, चुनाव तो लड़ लूंगा। हमारा काम ही है चुनाव लड़ना है, जहां से पहली बार चुनाव लड़ा था, वहीं से लड़ लूंगा। वैसे भी पार्टी है तय करेगी की चुनाव में क्या करना है। हमारी चुनावी रणनीति पार्टी की सहमति के आधार पर बनेगी। बता दें कि एक निजी शादी समारोह में पहुंचे सपा अध्यक्ष और पूर्व सीएम अखिलेश यादव ने कन्नौज लोकसभा से चुनाव लड़ने की बात कही। उन्होंने कहा कि कन्नौज में

बोले अखिलेश

जहां से पहली बार चुनाव लड़ा था, वहीं से लड़ूंगा

उन्होंने विकास कार्य कराएं हैं। इससे चुनाव भी लड़ेंगे। गुरुवार को कन्नौज नगर पालिका के पूर्व चेयरमैन सुनील कुमार गुप्ता उर्फ मुन्ना के बेटे यश चंद्रगुप्त का तिलक समारोह हुआ।

जीटी रोड एफएफडीसी के पास फार्म हाउस में बधाई देने अखिलेश यादव पहुंचे। उन्होंने पत्रकारों को संबोधित करते हुए कन्नौज लोकसभा से चुनाव लड़ने का एलान किया। उन्होंने कहा कि प्रदेश में कानून व्यवस्था धड़ाम हैं। सरकार के लोग खनन कर रहे हैं। गिरफ्तारी पर खुलेआम भाजपाई थाने से आरोपियों को छुड़ाकर ले जाते हैं।

राजस्थान में क्रांग्रेस की आपसी कलह तेज, गहलोत मुखर

सचिन पायलट 'गद्दार' हैं, कभी मुख्यमंत्री नहीं बन पाएंगे : अशोक गहलोत

जयपुर। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत अब संयम खो चले हैं। पार्टी के वरिष्ठ नेता राहुल गांधी के साथ गुजरात में प्रचार करने पहुंचे अशोक गहलोत ने बातचीत के दौरान अपने पूर्व डिप्टी सचिन पायलट पर बहुत बुरी तरह बरसे, और पूरी बातचीत में उन्हें छह बार 'गद्दार' कहकर पुकारा। उन्होंने कहा कि एक गद्दार मुख्यमंत्री नहीं बन सकता। हाईकमान सचिन पायलट को मुख्यमंत्री नहीं बना सकता, एक ऐसा शख्स, जिसके पास 10 विधायक भी नहीं हैं। ऐसा शख्स, जिसने विद्रोह किया। उन्होंने पार्टी को धोखा दिया, वह गद्दार हैं।

अशोक गहलोत ने 2020 में हुई 'बगावत' के बारे में विस्तार से बताया, यह संभवतः हिन्दुस्तान में पहली बार हुआ होगा, जब एक पार्टी अध्यक्ष ने अपनी ही सरकार गिराने की कोशिश की। अशोक गहलोत ने कोई सबूत पेश

सियासत

अशोक गहलोत ने 2020 में हुई 'बगावत' के बारे में विस्तार से बताया, साफ हो गया कि दोनों नेताओं में कोई मुकाबला था ही नही

नहीं किया, लेकिन कहा कि इस बगावत को 'भारतीय जनता पार्टी ने फंड किया था' और इसके पीछे केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह सहित भाजपा के वरिष्ठ नेता शामिल थे। उस वक्त, दो साल तक राजस्थान के डिप्टी सीएम रह चुके सचिन पायलट 19 विधायकों को लेकर दिल्ली के निकट एक पांच-सितारा रिसॉर्ट में पहुंच गए थे। यह कांग्रेस को

सीधी चुनौती थी - या उन्हें मुख्यमंत्री बनाया जाए, या वह कांग्रेस छोड़कर चले जाएंगे, और इसी वजह से कुछ ही राज्यों में शासन कर रही पार्टी एक राज्य में टूट भी गई थी। लेकिन यह चुनौती कतई नाकाम साबित हुई, क्योंकि 45-वर्षीय सचिन पायलट से 26 साल सीनियर अशोक गहलोत ने उन्हें आसानी से पटखनी दे दी थी, और उन्होंने भी एक पांच-सितारा रिसॉर्ट में ही 100 से भी ज्यादा विधायकों को ले जाकर अपनी ताकत दिखाई थी। साफ हो गया कि दोनों नेताओं में कोई मुकाबला था ही नहीं।

सचिन पायलट को इस नाकामी के बाद नतीजा भी भुगतना पड़ा था। एक समझौता तैयार किया गया, और जुर्माने के तौर पर उन्हें पार्टी प्रदेशाध्यक्ष पद से तो हटाया ही गया, बल्कि उपमुख्यमंत्री के पद से भी हटा दिया गया। अशोक गहलोत ने आरोप लगाया कि उस बगावत के दौरान सचिन पायलट ने दो वरिष्ठ केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात की थी। गहलोत ने कहा कि अमित शाह और धर्मेंद्र प्रधान शामिल थे। उन लोगों के बीच दिल्ली में बैठक हुई थी। अशोक गहलोत को पार्टी ने लताड़ा, और टीम पायलट ने भी - कि गहलोत ने अपनी अलग बगावत की। अशोक गहलोत ने कहा कि वे विधायक मुख्यमंत्री (मेरे) वफादार नहीं थे, वे हाईकमान के वफादार थे। उन्होंने जोर देकर बताया कि वह उस विवादास्पद बैठक में शामिल नहीं थे, और कहा कि इसका दोष सचिन पायलट के सिर मढ़ा जाना चाहिए, क्योंकि उन्होंने ही यह थ्योरी उड़ाई थी कि उन्हें सीएम बनाया जाने वाला है। एक अफवाह उड़ाई गई कि सचिन पायलट को सीएम बाया जाएगा। उन्होंने खुद ही इसे फैलाया था।

लोगों को लगा कि उन्हें सीएम बनाया जाएगा। इससे विधायक नाराज हो गए कि उन्हें कैसे सीएम बनाया जा सकता है, जबकि उन्होंने अपनी ही सरकार को गिराने की कोशिश की थी। वैसे, अशोक गहलोत भी ऐसा ही सोचते हैं, मैं सहमत हूं, किसी गद्दार को मुख्यमंत्री कैसे बनाया जा सकता है। इसके बाद उन्होंने फिर बिना किसी सबूत के आरोप लगाया कि सचिन के साथ मौजूद विधायकों में से किसी को 5 करोड़ मिले, किसी को 10 करोड़।

डंफर की टक्कर से युवक गंभीर रूप से घायल

घायल युव को अस्पताल ले जाती एंबुलेंस

हादसा

जंघई की तरफ से जा रही डंफर ने मारी जोरदार टक्कर, दाहिने पैर में फैक्चर

प्रतापपुर। पहलवान वीर बाबा उग्रसेनपुर के समीप बनगांव तरहठी सड़क से लोढ़ी डीह जा रहे युवक को डंफर ने जोरदार टक्कर मार दिया जिससे युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। मछली शहर निवासी जितेंद्र प्रजापति 25 वर्ष गुरुवार को करीब 10 बजे अपने मामा के घर लोढ़ी डीह उग्रसेनपुर जा रहा था मामा के घर से करीब एक किलोमीटर पूर्व पहुंचा ही था कि पहलवान वीर बाबा हनुमान मंदिर के ठीक सामने जंघई की तरफ से जा रही डंफर ने जोरदार टक्कर मार दिया। जितेंद्र काफी दूर तक बाइक के साथ घिसकर चला गया जिससे उसके दाहिने पैर में फैक्चर हो गया। मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने 112 पुलिस को सूचना दिया और पुलिस की सूचना पर 108 एंबुलेंस पहुंची और घायल जितेंद्र की प्रतापपुर सीएचसी लेकर गई जहां इलाज जारी है परिजनों एवं मामा के घर पर सूचना हुई तो रोते बिलखते पहुंचे।

नहर में पलटा मिनी राइस मिल सहित ट्रैक्टर

अनियंत्रित मिनी राइस मिल ट्रैक्टर सहित नहर में पलटी

बहरिया। थाना बहरिया के बाजार निवासी संगम लाल गुप्ता की मिनी ट्रैक्टर राइस मिल जोकि सरायगनी गांव में धान कुटाई करने के लिए गई थी। वहां से वापस आते समय जैसे ही श्रुति नर्सिंग होम के पीछे पहुंची ही थी। कि मोड़ पर ट्रैक्टर ड्राइवर का संतुलन बिगड़ जाने के चलते बगल नहर में ट्रैक्टर सहित मिनी राइस मिल पलट गई। किंतु ड्राइवर सतर्कता दिखाते हुए कूदकर बगल खेत में चला गया। जिससे उसकी जान बची। मौके पर उपस्थित ग्रामीणों ने दूसरा ट्रैक्टर बुलाकर किसी तरीके से रस्सी से बांधकर मिनी ट्रैक्टर राइस मिल को नहर से बाहर निकाला।

बारा, शंकरगढ़ से तीन वारंटी समेत चार गिरफ्तार

बारा। यमुनापार के बारा और शंकरगढ़ थाने की पुलिस ने चार अभियुक्तों को गिरफ्तार किया है, इसमें तीन वारंटी और एक वांछित शामिल है। बारा थाने के प्रभारी निरीक्षक अनिल कुमार ने बताया कि सब इंस्पेक्टर कौशलेंद्र बहादुर सिंह ने न्यायिक मजिस्ट्रेट-3 के मुकदमा अपराध संख्या 1003-12, धारा 498ए, 494, 323 व डीपी एक्ट के अभियुक्त राजू उर्फ राजेश पुत्र संतलाल कोरी (निवासी ग्राम कोटवारन का पूरा,पांडर, बारा) को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ के बाद आरोपी का चालान भेज दिया गया है। इसी क्रम में शंकरगढ़ थाने की पुलिस धारा 332, 353, 504 व सार्वजनिक संपत्ति क्षति निवारण अधिनियम के वांछित अभियुक्त गुड्डू केसरवानी को गिरफ्तार किया गया है। यह गिरफ्तारी सब इंस्पेक्टर विवेक कुमार राय और कांस्टेबल शशिकांत यादव, बलिराम सिंह ने की है। दूसरी तरफ एसओ शंकरगढ़ मनोज कुमार सिंह ने बताया कि थाने की पुलिस टीम ने दो वारंटियों को गिरफ्तार किया है। एसओ ने बताया कि सब इंस्पेक्टर गंगाराम सोनकर ने अपनी पुलिस टीम के साथ स्पेशल कोर्ट (पाक्सो एक्ट) के वारंटी राम सिंह पुत्र राम अवतार सिंह (निवासी बजड्डी, नारीबारी, शंकरगढ़), धारा 363, 366, 376 व पाक्सो एक्ट के अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया है। इसी क्रम में उक्त पुलिस टीम द्वारा धारा 447, 172 के वारंटी अभियुक्त सुरेश कुमार पुत्र नारायण (निवासी मवैया, शंकरगढ़) को गिरफ्तार किया गया है। दोनों के खिलाफ आगे की विधिक कार्रवाई की जा रही है।

पूर्व सांसद रेवती रमण सिंह का हुआ माण्डा दौरा

कार्यकर्ताओं से मुलाकात करते हुए

माण्डा। पूर्व सांसद रेवती रमण सिंह गुरुवार को मांडा क्षेत्र के दौरे पर थे। जिसमें वह अपने कार्यकताओं से मिले और आगामी चुनाव को लेकर के चचाएं की। सबसे पहले वह मांडा क्षेत्र के भारतगंज कस्बें के सपा कार्यकर्ता व उनके पूर्व मित्र अशोक सेठ के आवास पर गए और उनसे मिले उसके बाद वह मांडा खास में अपने पूर्व प्रदेश उपाध्यक्ष यूथ ब्रिगेड सत्यप्रकाश यादव के आवास पर आये और कार्यकताओं से मिले इसके बाद यूथ कार्यकर्ता अफरोज अहमद के बेटे मोहम्मद हुसैन के सुन्नत के कार्यक्रम में शामिल हुए।

सपा कार्यकताओं ने जगह-जगह उनका काफिला रोककर गर्मजोशी से उनका स्वागत किया उम्र ज्यादा होने के कारण वह थोड़ा असहज महसूस कर रहे थे।

संक्षेप

आरआरबी कान्वेंट के बच्चों ने जाना सुरक्षित यातायात के नियम

नैनी। आरआरबी कान्वेंट स्कूल एडीए कालोनी में गुरुवार को बच्चों को सुरक्षित यातायात के नियम बताए गए। । नैनी थाने में तैनात सब इंस्पेक्टर शालिनी सिंह नागर ने बच्चों को बताया कि सड़क पर हमेसा बांए चले और बाइक चलाते समय हेलमेट लगाना चाहिए। सब इंस्पेक्टर रणविजय सिंह, मनोज सिंह व रामानंद ने बच्चों को यातायात के विषय में बताया। इस अवसर पर विद्यालय के निदेशक पिंकेश मिश्रा ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में प्रधानाध्यापिका सुलेखा मिश्रा, अजय कुमार समेत शिक्षक व विद्यार्थी शामिल रहे।

जालसाजी और फ्राड करने वाले आरोपियों की गिरफ्तारी न होने से भुक्तभोगियों में असंतोष

मऊआइमा। विगत पांच अक्टूबर को ए डी जी ने अपने कार्यालय में मऊआइमा के एक जालसाज के सरगना को गिरफ्तार करा कर मऊआइमा पुलिस को सौंप दिया था। भुक्तभोगियों ने सोलह के खिलाफ मुकदमा दर्ज करा दिया था। पुलिस ने सरगना को जेल भेजने के बाद आज तक शेष बचे पन्द्रह आरोपियों की गिरफ्तारी न करने पर भुक्तभोगियों में आक्रमण व्याप्त है। सभी ने उच्च अधिकारियों से गिरफ्तारी की मांग की है। मिली जानकारी के अनुसार मऊआइमा कस्बा के कजियाना कलां पानी की टंकी निवासी आमिर महमूद ने एक गिरोह बना कर एक जमीन को दो से तीन बार बैनामा किया और किसी को कब्जा नहीं मिला।यही नहीं मदरसा मोहम्मदिया के शिक्षकों को फर्जी मुकदमा में फंसा कर जेल भेजने की धमकी देकर बीस हजार रुपये हर महीना रंगदारी वसूलता था। आरोप है कि एक दर्जन बेगुनाहों को फर्जी मुकदमा दर्ज करा कर जेल भेज चुका है। जिससे आमिर महमूद गैंग के खिलाफ मोहम्मद उमर ,रिजवान अहमद,रईस अहमद ने गैंग के सरगना आमिर महमूद सहित पन्द्रह के खिलाफ जालसाजी एंव रंगदारी मांगने के आरोप में मुकदमा दर्ज करा दिया था। आमिर महमूद के अलावा मऊआइमा पुलिस आज तक शेष बचे पन्द्रह आरोपियों को गिरफ्तार न करने से भुक्तभोगियों में असंतोष व्याप्त है। तथा आला अधिकारियों से गिरफ्तारी की मांग की है ।

होलागढ़ पुलिस के हाथ लगा वांछित अभियुक्त

होलागढ़। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रयागराज के निर्देश में चलाए जा रहे अभियान एवं क्षेत्राधिकारी सोरांव के पर्यवेक्षण के मार्गदर्शन में प्रभारी निरीक्षक अमीत कुमार सिंह के नेतृत्व में नफर अभियुक्त जगत बहादुर पटेल पुत्र राम जश एवं अजीत पटेल पुत्र पुत्र राजबहादुर पटेल निवासी मलाक पयागी जमुना यादव पुत्र धुरंधर निवासी गोहरी को होलागढ़ पुलिस ने गिरफ्तार किया गिरफ्तारी में सुभाष चन्द्र यादव अनिरुद्ध सिंह करन सिंह थे तीनों अभियुक्त को गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया

पुलिस ने वारंटी को किया गिरफ्तार

माण्डा। मांडा क्षेत्र के जिला गांव में एक वारंटी को पुलिस ने गिरफ्तार किया। मामला 2017 का था जिसमें वारंटी के ऊपर एससी/एसटी एक्ट व मारपीट का मामला दर्ज था जिसमें एडीजे न्यायालय के द्वारा वारंट किया गया था। गुरुवार को वारंटी लवकुश दुबे उर्फ ननकऊ पुत्र कृष्ण कुमार दुबे उम्र लगभग 24 वर्ष गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया।

प्रयागराज से तबादला होने पर भी डाक्टर ने छोड़ा नहीं आवास, नोटिस

प्रयागराज। स्थानांतरण के दो साल बाद भी सिद्धार्थनगर में तैनात चिकित्साधिकारी डा. रामचंद्र ने सरकारी आवास खाली नहीं किया है। इसलिए लोक निर्माण विभाग (ढहऊ) ने उनसे 5.27 लाख रुपये की रिकवरी का नोटिस जारी किया है। उन्हें इस धनराशि को जमा कराने के साथ ही जल्द से जल्द आवास खाली करने का निर्देश दिया गया है।प्रयागराज के अंदावा प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र में तैनाती के दौरान डा. रामचंद्र को 2013 में बाल चिकित्सालय कालोनी का आवास 375/4 आवंटित किया गया था। 2020 में उनका तबादला सिद्धार्थनगर हो गया था। वह 19 सितंबर 2020 को यहां से कार्यमुक्त भी हो चुके हैं। फिर भी आवास खाली नहीं किया है। उस आवास में डा. रामचंद्र के कई सगे संबंधी रहते हैं। उनके तबादले के बाद इस आवास को मनोहर दास नेत्र चिकित्सालय में तैनात डाक्टर बृजेश यादव को आवंटित कर दिया गया था। जब वह वहां कब्जे लेने पहुंचे तो उनसे विवाद किया गया। आवाज से कब्जा न हटे इसके लिए उन्होंने नए आवंटी के खिलाफ कई शिकायतें भी की। कई झूठे आरोप भी लगाए। डा. रामचंद्र की पत्नी के नाम झूसी में आवास है फिर भी वह सरकारी आवास पर कब्जा जमाए हुए हैं। लोक निर्माण विभाग ने उन्हें आवास खाली करने के लिए नोटिस दिया था। एडीएम सिटी ने भी उन्हें आवाज खाली करने के लिए कहा था। सरकारी आवास खाली न करने पर निर्माण खंड एक के अधिशासी अभियंता के-के श्रीवास्तव ने अब रिकवरी नोटिस जारी कर दिया है। आवास खाली न करने पर डा. रामचंद्र से आवास किराया, जलकर, सीवर कर आदि के रूप में 5,27,165 रुपये वसूला जाएगा। रिकवरी का यह नोटिस उनके वर्तमान तैनाती स्थल सहित सभी संबंधित उच्च अधिकारियों को भेजा गया है। इसका भुगतान न करने पर उनके वेतन से कटौती की जाएगी।

मुख्यमंत्री से दर्ज कराई गई शिक्षिका की मनमानी की शिकायत

कोरांव। तहसील क्षेत्र के ग्राम पंचायत झरवनिया केडवर में स्थित प्राथमिक विद्यालय की प्रधानाचार्य की मनमानी की शिकायत मुख्यमंत्री पोर्टल पर दर्ज कराई गई है । मामले में जांच कराते हुए कार्यवाही की मांग की गई है । गांव के ही आशीष कुमार मिश्रा द्वारा मुख्यमंत्री पोर्टल पर दर्ज कराई गई शिकायत में आरोप लगाया गया है कि विद्यालय में तैनात प्रधानाध्यापिका रीना मिश्रा पिछले 5 वर्षों से स्कूल में तैनात हैं जो नियमित विद्यालय में नहीं आती हैं महीने में एक या दो बार आकर अपनी हाजिरी लगा कर चली जाती हैं जिसके चलते स्कूल में पढ़ने वाले नौनिहालों का भविष्य चौपट हो रहा है । इसके अलावा विद्यालय के मरम्मत एवं रखरखाव के लिए आने वाली धनराशि को भी अपने निजी कार्यों में खर्च करती हैं । मनमानी की वजह से विद्यालय में हर जगह पूरे करकट का अंबार लगा हुआ है जिस कारण बच्चों को संक्रामक बीमारी होने का खतरा बना हुआ है । आरोप है कि उक्त शिक्षिका की शिकायत स्थानीय स्तर पर कई बार की गई लेकिन कोई कार्यवाही अमल में नहीं लाई गई। शिकायतकर्ता का आरोप है कि शिक्षिका द्वारा शिकायत करने पर यह धमकी दी जाती है कि मेरी पहुंच बहुत ऊपर तक है कोई मेरा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकता। मामले में जांच पड़ताल कराते हुए कार्यवाही की मांग की गई है।

पुलिस ने सात वारंटियों को दबोचा

मेजा। मेजा पुलिस के कई दरोगा व पुलिसकर्मियों ने मिलकर सात वारंटियों को गिरफ्तार कर नियमानुसार कार्रवाई किया। बता दें कि गुरुवार को प्रभारी निरीक्षक मेजा ज्ञानेश्वर मिश्र के नेतृत्व मे चौकी प्रभारी मेजारोड रामभवन वर्मा, चौकी प्रभारी सिरसा जगदीश कुमार, चौकी प्रभारी जेवनिया प्रदीप अस्थाना, दरोगा परलोक चौधरी व दरोगा निलेश मौर्य ने हमराही पुलिसकर्मियों के साथ सात वारंटी प्रेम शर्मा पुत्र जगनारायण शर्मा निवासी समहन थाना मेजा, हरीश्चंद्र पुत्र सिपाही पासी निवासी सोनाही थाना मेजा, कौशलेश दुबे पुत्र दूधनाथ निवासी निवासी बेदौली थाना मेजा, चंद्रभान पासी व राम बहारे पुत्रगण रामलखन पासी निवासीगण नीवी भटान थाना मेजा, भीखू पासी पुत्र राजकन पासी निवासी चंदापुर थाना मेजा व वकील पटेल उर्फ राजबहादुर पुत्र अमृतलाल निवासी रामपुर (कठौली) थाना मेजा को गिरफ्तार किया। कोतवाल ने बताया कि उक्त लोगों के खिलाफ लिखापढ़ी कर अगली कार्रवाई की गई।

जर्जर पीडब्ल्यूडी सड़क निर्माण को लेकर समाजसेवी की पहल जारी

जर्जर सड़क का दृश्य

उतरांव। हंडिया तहसील अंतर्गत खराब सड़कों को लेकर समाजसेवी स्वप्निल सिंह की पहल लगातार जारी है। वहीं कई बार जिला पंचायत अध्यक्ष,पीडब्ल्यूडी विभाग,मंत्री, विधायक से मिलकर तहसील के अंतर्गत आने वाले सड़के उमरी मनोहर पुर, सरीफपुर मार्ग,अंजना से बमैला मार्ग, सैदाबाद से सिरसा, हण्डिया से लाक्षागृह,कटाहरा से दम गड़ा मार्ग,सराय हुसे मार्ग, मदारीपुर से महरुपुर मार्ग,उतरांव से सैदाबाद के लिए गई मार्ग,आरा कला से प्रतापपुर के लिए गए मार्ग आदि जैसे दर्जनों जर्जर सड़कों का लिखित रूप से समाजसेवी द्वारा ज्ञापन दिया गया। लेकिन आज तक इन सड़कों पर काम नहीं लगा जर्जर सड़क होने से आवागमन में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ता है। लोग आए दिन उसी सड़क पर गिरकर चोटिल हो रहे हैं।गड्ढा मुक्त सड़क प्रदेश सरकार का एक सपना है। लेकिन यहां गड्ढा युक्त सड़कें की भरमार हो गई है।विभागीय तथा मंत्री विधायक इस पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। लगातार समाजसेवी स्वप्निल द्वारा यह पहल जारी है। उनका कहना है कि हम हार नहीं मानेंगे लगातार इस आवाज को बुलंद करते हुए मुख्यमंत्री तक पहुंचाने का काम करेंगे। गड्ढा मुक्त सड़कों को बनाने का सपना डॉक्टर समाजसेवी स्वप्निल ने प्रण कर लिया है। उन्होंने बताया कि सबसे ज्यादा समस्या बारिश के मौसम में होती है। बड़े-बड़े गड्ढे हो जाने से पानी गड्ढों में समा जाता है। जिससे आ रहे राहगीरो व बड़े वाहन को समझ में ना आने पर बड़ी दुर्घटना कई बार हो चुका है। लेकिन इस पर विभागीय अधिकारी मौन बैठा है। लगता है बड़े हादसे का इंतजार कर रहे हैं।

चोरों का बोलबाला चोरों को पकड़ने में पुलिस नाकामयाब

बहरिया। बहरिया थाना के ग्राम सभा सारीपट्टी में बीती रात अज्ञात चोरों ने चाय पान की दुकान का ताला एवं छत काटकर दुकान में रखे नगदी सहित उसमें रखे हजारों के सामान पर हाथ साफ कर दिया। सूत्रों के अनुसार राम कैलाश निवासी महपूरा जो कि सारीपट्टी चौराहे पर एक चाय पान की दुकान खोल रखी है। उक्त चोरी उसी के दुकान पर हुई। इसी प्रकार दुर्गा प्रसाद पुत्र बालादीन निवासी महपूरा जोकि महपूरा चौराहे पर ही एक इलेक्ट्रॉनिक की दुकान खोल रखी है। जब वह बीती रात दुकान बंद करके अपने घर चला गया। तो देर रात अज्ञात चोरों ने उसकी भी दुकान का ताला तोड़कर नगदी सहित दुकान में रखे हजारों के इलेक्ट्रॉनिक के सामान पर हाथ साफ कर दिया। दोनों ने इस घटना की लिखित तहरीर बहरिया थाने में दी।

महीनों से चकरोट पर खुदी नाली गन्दे जल का भराव, जीना दुस्वार

गोबरा तरहार गांव की बजबजाती नाली

लालापुर। क्षेत्र के ब्लाक जसरा अंतर्गत गोबरा तरहार गांव में प्रधानमंत्री सड़क से उत्तर की तरफ जाने वाला नदी के तरफ का चकरोट महीनों से जबरजस्त जे सी बी के द्वारा गड्ढा खुदाई कर दिया।गड्ढे में आधे गांव का नाबदान का पानी बहकर पूरी तरह बजबजा कर गन्दगी फैल रही है। पूरी नाली भर चुकी है,नाली की खुदाई इतनी जबरजस्त हुई है कि पूरी नाली छोटी नहर की तरह दिखाई पड़ रही है।

उसी रास्ते से ग्रामीणों को किसानी से लेकर सुबह शाम आना जाना लगा रहता है।खुदाई भी हुई तो बे तरतीब इस समय सात फुट का गड्ढा मौके पर मौजूद है उसी के मेड़ से निकलना जान जोखिम भरा रहता है।एक तरफ घर के बगल गन्दे जल भराव से जीना दुस्वार है,तो दूसरी तरफ मच्छरों से फैलने वाली डेंगू बीमारी का खतरा बरकरार है।गांव के कल्लू मिश्रा, जुगुल किशोर शुक्ला, मुन्ना शुक्ला ने ब्लाक जसरा के अधिकारियों से मांग किया है कि नाली जल्द बनवाए जिससे ग्रामीणों की समस्या सदैव के लिए दूर हो सके।

पुलिस ने पांच देशी बम के साथ एक को गिरफ्तार कर भेजा जेल

मेजा। कोतवाली क्षेत्र के कोहड़ार पुलिस ने गुरुवार को एक अभियुक्त को पांच देशी बम के गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। अपराध और अपराधियो पर अंकुश लगाने के लिए चलाये गये अभियान के क्रम मे कोतवाली प्रभारी निरीक्षक मेजा ज्ञानेश्वर मिश्र के नेतृत्व में गठीत पुलिस टीम उपनिरीक्षक अखिलेश कुमार सिंह चौकी प्रभारी कोहडार व पुलिस टीम द्वारा मुखबिर की सूचना पर अभियुक्त उमेश कुमार निषाद पुत्र किशुन पाल निषाद निवासी ग्राम इसौटा थाना मेजा को पांच देशी बम के साथ गिरफ्तार कर जेल भेज दिया । आवश्यक विधिक कार्यवाही की गयी।

भाजपा के प्रबुद्ध सम्मेलन में सिरसा से पहुंचे सैकड़ों कार्यकर्ता

प्रबुद्ध सम्मेलन में जाते सिंटू सेठ साथ मे भाजपा कार्यकर्ता

मेजा। पूर्व विधायक श्रीमती नीलम करवरिया के निर्देश पर भाजपा नेता शिवाकांत उर्फ पिंटू सेठ के नेतृत्व में प्रदेश के मुखिया योगी आदित्यनाथ को सुनने के लिए आधा दर्जन चार पहिया वाहन और दर्जनों बाइक से सैकड़ों भाजपा कार्यकर्ता प्रयागराज पहुंचे ।

गौरतलब हो कि गुरुवार को प्रयागराज के परेड ग्राउंड में भाजपा का प्रबुद्ध सम्मेलन था जिसमें बतौर मुख्य अतिथि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ रहे । उसी कार्यक्रम में योगी को सुनने मेजा विधान सभा के सिरसा नगर पंचायत से शिवाकांत सेठ उर्फ पिंटू सेठ के नेतृत्व में सैकडों कार्यकर्ता पहुंचे थे । जाने वालों में मुख्य रूप से द्वारिका प्रसाद केशरी, रोहकेशरी , राकेश सेठ अनिल यादव, उमाकांत सेठ उर्फ सिंटू सेठ उद्योग कारीगर व्यापार मण्डल प्रदेश उपाध्यक्ष, सभजीत गौतम सहित सैकड़ों कार्यकर्ता रहे ।

रामजानकी दास की उपाधि और श्रृंगवेरपुर आश्रम के उत्तराधिकारी बने जितेंद्र शांडिल्य महाराज

जितेंद्र शांडिल्य महाराज का माला पहनाकर स्वागत करते संत समाज

लालगोपालगंज। श्रृंगवेरपुर धाम के श्रीराम वर विश्राम धाम आश्रम के महंत राम प्रसाद दास शास्त्री जी महाराज ने गुरुवार को जितेंद्र शांडिल महाराज का अभिषेक कर राम विश्राम धाम आश्रम का उत्तराधिकारी घोषित कर महंत रामजानकी दास की उपाधि दी गई। इस दौरान साधु संतों के साथ स्थानीय ग्रामीणों की उपस्थिति रही।

उत्तराधिकारी घोषणा कार्यक्रम के दौरान निंबार्क आश्रम से पधारे स्वामी राधा माधव दास महाराज ने कहा कि आज समाज व्यक्तिवाद के कारण टूट रहा है। समाज को पुनः वेदों की ओर लौटने की आवश्यकता है। जिसमें परिवार और उसके संस्कारों का विस्तृत वर्णन किया गया है। समाज ने एकांत विचारधारा को अपनाते हुए संयुक्त अवधारणाओं को पीछे छोड़ दिया है। जगतगुरु रामानुजाचार्य प्रयाग पीठाधीश्वर धराचार्य महाराज के उत्तराधिकारी महाराज ने उत्तराधिकारी घोषणा कार्यक्रम के दौरान हिंदुओं को पुनः जोड़ने की बात कही। बताया कि हिंदू एक सभ्यता है, संस्कृति है, जिसने समाज के हर वर्ग का सृजन किया है। हम सभी को हिंदुत्व की विचारधारा को अपनाते हुए सनातन संस्कृति को शिखर तक पहुंचाने का संकल्प लेना चाहिए। ताकि प्राचीन काल से प्रख्यात विश्वगुरु की संकल्पना चरमोत्कर्ष तक पहुंच सके। कार्यक्रम में आचार्य चंद्रदेव महाराज, सच्चा बाबा आश्रम अरेल स्वामी लाल बाबा, बैकुंठ धाम के वैष्णव राम संप्रदाय मुरारी देवाचार्य महाराज, तुलसीदास जी बड़ा स्थान भारतगंज, महामंडलेश्वर स्वामी बृज किशोर जी महाराज, चंद्रशेखर जी महाराज, पुजारी जी महाराज, भंडारी जी महाराज उपस्थित रहे। जितेंद्र शांडिल्य महाराज ने उत्तराधिकारी बनाये जाने पर अपने आश्रम और समाज के प्रति कर्तव्यों को नई रूपरेखा देने की बात कही। श्री तुलसी साहित्य प्रचार समिति उपाध्यक्ष अरुण द्विवेदी और समाजसेवी अटल त्रिपाठी ने आये हुए अतिथियों का अंगवस्त्र देकर सम्मान किया। इस दौरान डा. सुभाष मिश्र, हरि भट्ट, वैभव मिश्र समेत अन्य लोग उपस्थित रहे।

अस्पताल में गर्भवती महिला की मौत, मायके वालों ने कहा- दस लाख रुपये नहीं देने पर की हत्या

प्रयागराज। प्रयागराज सिटी के सिविल लाइंस स्थित शकुंतला अस्पताल में प्रसव के दौरान गर्भवती युवती की मौत हो गई। बेटी की अचानक मृत्यु होने से दुखी मायके वालों ने इसे कत्ल का मामला करार देते हुए आरोप लगाया कि दहेज में 10 लाख रुपये कैश की डिमांड नहीं पूरी करने पर उसे मार डाला गया। पिता ने कौशांबी के पिपरी थाने में ससुराल वालों के खिलाफ तहरीर दी तो पुलिस ने शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजकर छानबीन शुरू की। कौशांबी में तिलहापुर मोड़ निवासी शंकरलाल ने अपनी बेटी संजना का विवाह दो साल पहले पिपरी के भगवतपुर गांव निवासी सुजीत वर्मा पुत्र सुरेंद्र कुमार से किया था। संजना मौजूदा समय में गर्भवती थी। बुधवार रात प्रसव पीड़ा उठने पर परिवार के लोगों ने प्रयागराज में झलवा स्थित एमजीएम अस्पताल में भर्ती कराया। वहां से रेफर करने पर पूनम अस्पताल ले जाया गया। वहां भी हालत गंभीर देखकर डाक्टरों ने हाथ खड़े किए तो सिविल लाइंस स्थित शकुंतला अस्पताल में भर्ती कराया। मगर इलाज और प्रसव के दौरान संजना की मौत हो गई। घटना की जानकारी पर पहुंचे पिता शंकर लाल ने कहा कि उनकी बेटी को मारा गया है। ससुराल वाले दहेज में 10 लाख रुपए की मांग कर रहे थे। यह डिमांड नहीं पूरी होने पर संजना का कत्ल किया गया है। अस्पताल ले जाना तो बचाव का पैंतरा है।

प्रयागराज

मौसम

अधिकतम : 29.00
न्यूनतम : 15.00
सूर्योदय : 06.19
सूर्यास्त : 05.15

मातृ स्नेह फाउंडेशन द्वारा पॉलिथीन मुक्त अभियान

प्रयागराज। प्रयागराज में मातृ स्नेह फाउंडेशन द्वारा अपने पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम के तहत सफाई एवं जागरूकता अभियान चलाया गया। जिसमें दुकानदारों और एक आम जनता द्वारा पॉलिथीन के प्रयोग बिल्कुल बंद करने के लिए जागरूक किया गया तथा समाज के लोगों से आह्वान किया गया कि अपने नैतिक और सामाजिक दायित्व के तहत पॉलिथीन के होने वाले नुकसान को देखते हुए तुरंत बंद करें। इसके साथ साथ लोगों को कपड़े के बैग भी दिए गए। इस अवसर पर मातृ स्नेह फाउंडेशन के अध्यक्ष नागेंद्र सिंह ने बताया कि पॉलिथीन के प्रयोग का गंभीर परिणाम हमें आने वाले दिनों में भुगतना होगा। इसलिए हर हालत में इस परिणाम के प्रति समाज के हर व्यक्ति को गंभीर होना चाहिए। इस अवसर फाउंडेशन के सभी कार्यकर्ता, पदाधिकारी एवं स्वयंसेवक अपनी सेवाएं बढ़-चढ़कर दिए। अंत में अध्यक्ष नागेंद्र सिंह सभी को धन्यवाद ज्ञापन किया।

मुख्यमंत्री ने प्रयागराज वासियों को दिया करोड़ों की सौगात

1295 करोड़ रुपए की 284 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण करते हुए प्रबुद्धजन सम्मेलन को किया सम्बोधित

सम्मेलन

- मुख्यमंत्री ने विभिन्न योजनाओं के लाभार्थियों को वितरित किए चेक और आवास की चाभी
- लोकार्पण एवं शिलान्यास कार्यों से प्रयागराज के विकास को मिलेगी गति
- माफियाओं के साथ जीरो टॉलरेंस की नीति के साथ की जा रही कार्रवाई योगी आदित्यनाथ
- महाकुम्भ-2025 का और भी भव्य रूप से होगा आयोजन

परेड ग्राउण्ड में प्रबुद्धजन सम्मेलन को संबोधित करते मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ व उपस्थित भीड़

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गुरूवार को आस्था, शिक्षा और प्रगति के संगम तीर्थराज प्रयागराज के परेड ग्राउण्ड में 1295 करोड़ रुपए की 284 विकास परियोजनाओं का लोकार्पण शिलान्यास एवं प्रबुद्धजन सम्मेलन को सम्बोधित किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्र ने योजनाओं के लाभार्थियों को चेक, आवास की चाभी प्रदान की। इसके पश्चात मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ प्रबुद्धजन सम्मेलन में उपस्थित लोगो को सम्बोधित करते हुए कहा कि तीर्थराज प्रयाग सम्पूर्ण भारतवासियों की आस्था का प्रतीक है। द्वादश माधव तीर्थराज प्रयाग की शोभा बढ़ा करके इसे तीर्थों में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाते है। उन्होंने कहा कि जब कुम्भ की बात आती है, तो सभी का ध्यान प्रयागराज की ओर स्वतः ही चला जाता है। उन्होंने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व एवं मार्गदर्शन में अक्टूबर 2018 में कुम्भ के ठीक पहले प्रयागराज को उसका पुरातन नाम वापस प्राप्त हुआ। दुनिया का पहला गुरूकुल महर्षि भारद्वाज मुनि का आश्रम यहीं पर है और सरकार द्वारा उनकी भव्य प्रतिमा जो यहां पर स्थापित की गयी है, यह भी हमें गौरव की अनुभूति कराती है। प्रधानमंत्री जी ने आजादी के अमृत महोत्सव वर्ष में मुख्य महोत्सव को सम्बोधित करते हुए पंचप्रण की बात कहीं थी। उन्होंने विकसित भारत, विरासत के सम्मान, गुलामी की हर सोच से मुक्ति, एकता और एकीकरण तथा नागरिकों के कर्तव्य पालन के पंच प्रण का संकल्प लिया था। अयोध्या में भव्य मंदिर के निर्माण का कार्य हो या काशी में काशी विश्वनाथ कॉरिडोर, मां विंध्यवासिनी कॉरिडोर का कार्य या प्रयागराज का ऐतिहासिक कुम्भ हो, ये सभी उसी परम्परा के हिस्से है। जिस सुव्यवस्था, सुरक्षा और स्वच्छता के लिए प्रयागराज कुम्भ-2019 जाना गया, उससे भी दिव्य एवं भव्य आयोजन के साथ महाकुम्भ-2025 का आयोजन कराया जायेगा। मा0 मुख्यमंत्री जी ने कहा कि आज यहां पर 1295 करोड़ के कार्यों का लोकार्पण/शिलान्यास हुआ है, इससे प्रयागराज के विकास को और गति मिलेगी। स्मार्ट सिटी मिशन के अन्तर्गत प्रयागराज में अनेक कार्य हुए है और लगातार अनेक कार्य कराये जा रहे है। ग्रामीण क्षेत्र में हर घर जल योजना के अन्तर्गत नल से पानी पहुंचाने की योजना पूरी हो रही है, इससे ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लोगो को घर पर ही पीने का साफ पानी नल के माध्यम से उपलब्ध हो रहा है। अमृत योजना के अन्तर्गत शहरी क्षेत्रों में भी पीने का साफ पानी उपलब्ध करा रहे है। मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार आम-जनमानस की सुविधा के लिए पूरी तत्परता के साथ कार्य कर रही है तथा प्रयागराज के विकास के लिए प्रबुद्धजनों द्वारा दिए गए सुझावों का सरकार स्वागत करेगी। सरकार, युवाओं के स्वावलम्बन व स्वरोजगार के लिए ईमानदारी से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि विकास के क्षेत्र में व्यवधान उत्पन्न करने वाले माफियाओं के साथ जीरो टॉलरेंस की नीति अपनायी जा रही है। आज माफियाओं, भ्रष्टाचारिओं के अवैध कब्जे वाले जमीनों को मुक्त कराकर वहां पर गरीबों, अधिवक्ताओं, शिक्षकों, चिकित्सकों के लिए आवास का निर्माण कराया जायेगा। उन्होंने कहा कि आज अभ्युदय योजना के माध्यम से लाखों युवाओं को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करायी जा रही है।आज परीक्षाओं को पूरी पारदर्शिता के साथ आयोजित कराया जा रहा है, जो भी इसमें रूकावट डालेगा, उसके साथ सख्ती से निपटते हुए कठारेतम कार्रवाई की जायेगी। वही उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्य ने कहा कि प्रयागराज की पावन धरती पर आज प्रबुद्धजनों का कुम्भ हो रहा है। प्रधानमंत्री व मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में देश व प्रदेश, विकास के पथ पर तेजी से आगे बढ़ रहा है। मा0 प्रधानमंत्री जी एवं मा0 मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में पात्र व्यक्तियों को आवास उपलब्ध कराये गये है। कहा कि सरकार की यह प्राथमिकता है कि कोई भी गरीब व्यक्ति ऐसा न रह जाये, जिसके पास अपनी छत न हो। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में प्रदेश ही नहीं बल्कि प्रयागराज का भी चैहुमुखी विकास हुआ है। आज प्रयागराज विकास की नई ईबारत लिख रहा है।

उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रयागराज एक ऐतिहासिक पावन धरती है। इस धरती को मैं शीश झुकाकर नमन करता हूं। कहा कि देश व प्रदेश की सरकार आमजनता व गरीबों के लिए ईमानदारी के साथ काम कर रही है। प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में भारत का विश्व में सम्मान बढ़ा है। आज डबल इंजन की सरकार होने से योजनाओं को गरीबों तक पहुंचाने में सफलता मिली है। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में केन्द्र सरकार की सभी योजनाओं को धरातल पर उतारने में व प्रदेश के अन्तिम व्यक्ति तक उसका लाभ दिलाने में प्रदेश अग्रणी रहा है। प्रदेश में माफिया राज को ध्वस्त कर उनकी कमर तोड़ दी गयी है। पूरे देश में उत्तर प्रदेश के लॉ एण्ड आर्डर की चर्चा होती है। उन्होंने कहा कि शहरों व ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो रही है। शिक्षा के क्षेत्र में प्रदेश आगे बढ़ रहा है। प्रदेश में उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए प्रदेश सरकार के द्वारा ग्लोबल इंवेर्स्टस समिट का आयोजन किया जा रहा है। इलाहाबाद प्रो0 रीता बहुगुणा जोशी ने अपने सम्बोधन में कहा मुख्यमंत्री जी ने प्रबुद्धजन सम्मेलन में सम्मिलित होकर सांसद फूलपुर केशरी देवी पटेल ने अपने सम्बोधन में कहा कि प्रयागराज की धरती से बहुत से प्रबुद्धजन आगे बढ़े है, जो हर क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य कर रहे है। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री जी और मुख्यमंत्र जी के नेतृत्व में देश व प्रदेश में विकास के जो कार्य हुए है, उससे आज व कल के भारत में अंतर स्पष्ट दिखाई पड़ रहा है। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में प्रयागराज में बहुत से विकास के कार्य कराये गये है और कराये जा रहे है। सांसद भदोही रमेश चन्द्र बिंद ने प्रयागराज की धरती पर मुख्यमंत्री का स्वागत करते हुए अपने सम्बोधन में कहा कि प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के नेतृत्व में देश और प्रदेश नई ऊंचाईयों को छू रहा है।

इस अवसर पर महापौर अभिलाषा गुप्ता नंदी, जिला पंचायत अध्यक्ष डॉ0 वी0के0 सिंह, विधायक शहर पश्चिमी सिद्धार्थ नाथ सिंह, विधायक शहर उत्तरी हर्षवर्धन वाजपेयी, मा0 विधायक फूलपुर प्रवीण पटेल, विधायक फाफामऊ गुरू प्रसाद मौर्य, मा0 विधायक बारा डॉ0 वाचस्पति, विधायक कोरांव राजमणि कोल, विधायक करछना पीयूष रंजन निषाद, विधान परिषद सदस्य सुरेन्द्र चौधरी, निर्मला पासवान, के0पी0 श्रीवास्तव, प्रदेश उपाध्यक्ष लक्ष्मण आचार्य, क्षेत्रीय अध्यक्ष महेश चन्द्र श्रीवास्तव, प्रभारी ओमकार केसरी, महानगर अध्यक्ष भाजपा गणेश केसरवानी, गंगापार अध्यक्ष अश्वनी दुबे एवं यमुनापार के अध्यक्ष सहित अन्य जनप्रतिनिधिगण उपस्थित रहे।

संक्षेप

अखिल भारतीय रेलवे बाक्सिंग चैम्पियनशिप में रेफरी जज नियुक्त

मनीष जायसवाल

प्रयागराज। उत्तर मध्य रेलवे के प्रयागराज मंडल में ट्रेन मैनेजर के पद पर कार्यरत मनीष जायसवाल को रेलवे बोर्ड ने 76वीं पुरुष एंव 15वीं महिला अखिल भारतीय रेलवे बाक्सिंग चैम्पियनशिप में रेफरी जज नियुक्त किया है। आपको बताते चलें कि 23 नवम्बर से 26 नवम्बर तक पूर्वोत्तर सीमांत रेलवे में मालेगाँव गुवाहाटी तक में आयोजित हो रही है। इनको इस प्रतियोगिता के लिए रिलीव कर दिया गया है और इस अवसर पर इनके शाखाधिकारी सहित उत्तर मध्य रेलवे खेल संघ के सभी पदाधिकारियों ने शुभकामनाएं दीं है।

खाद-बीज की किल्लत, कांग्रेसियों ने किया प्रदर्शन

प्रयागराज। खाद-बीज की किल्लत और कालाबाजारी के विरोध में यूपी कांग्रेस के आवाहन पर जिला शहर कांग्रेस के पदाधिकारी और कार्यकर्ताओं ने प्रदर्शन किया। गुरुवार को सिविल लाइन्स स्थित धरना स्थल पर जुटे कांग्रेसियों ने योगी सरकार पर किसान विरोधी आरोप लगाते हुए जमकर नारेबाजी कर राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंप कर समस्याओं के जल्द निस्तारण की मांग की। यमुनपार जिलाध्यक्ष अरुण तिवारी और गंगापार जिलाध्यक्ष सुरेश यादव ने केन्द्र और प्रदेश की भाजपा सरकार को किसान विरोधी करार दिया। उन्होंने कहा की इस सरकार में किसानों की अनदेखी हो रही है। गेहूं की फसल की बुआई का समय चल रहा है, लेकिन जिले के किसानों को डीएपी और यूरिया नहीं मिल रहा है। प्रदेश महासचिव मुकुंद तिवारी ने आरोप लगाते हुए कहा की जिले की अधिकांश साधन सहकारी समितियों एवं खाद विक्रय केंद्रों पर ताला लटक रहा है। मजबूरन किसानों को बाजार से महंगे दाम पर खाद खरीदनी पड़ रही है। जिला प्रवक्ता हसीब अहमद ने आरोप लगाते कहा बताया की सरकार की लापरवाही के चलते खाद और बीज की खुलेआम कालाबाजारी हो रही है। जिसपर प्रशासन मौन है। कांग्रेसियों ने जिले के सभी साधन सहकारी समितियों और खाद विक्रय केंद्रों पर पर्याप्त मात्रा में खाद उपलब्ध कराने की मांग की। इस दौरान अरुण तिवारी, सुरेश यादव, प्रदीप मिश्रा, मुकुंद तिवारी, संजय तिवारी, हसीब अहमद, राकेश पटेल, आशीष पाण्डेय, अब्दुल कलाम, मो० असलम, मनोज पासी, विवेक पाण्डेय, दिनेश सोनी, रईस अहमद, जितेश मिश्रा, नागेश पाण्डेय, रियाज अहमद, विवेक पाण्डेय, शादाब अहमद, मो०हसीन समेत आदि लोग मौजूद रहे।

शहीद चंद्रशेखर आजाद पार्क में जल्द ही ड्रैगन फ्रूट के पौधों की शुरू हो जाएगी बिक्री

प्रयागराज। राजकीय उद्यान शहीद चंद्रशेखर आजाद पार्क में प्रतिदिन हजारों लोग मार्निंग और इवनिंग वाक के लिए आते हैं। इसके अलावा परिवार के साथ कई लोग पिकनिक मनाने भी पहुंचते हैं लेकिन अब यहां पर सेहत बनाने वाले पौधों की बिक्री होगी। शहर का दिल कहे जाने वाले शहीद चंद्रशेखर आजाद में जल्द ही ड्रैगन फ्रूट के पौधों की बिक्री शुरु हो जाएगी। इसकी नर्सरी तैयार कर ली गई है। दिसंबर से बिक्री की प्रक्रिया शुरु कर दी जाएगी। आजाद पार्क में ड्रैगन फ्रूट के पौधों की बिक्री 40 से 50 रुपए में की जाएगी। पिछले वर्ष यहां पर नर्सरी डाली गई थी। आजाद पार्क में पहली बार ड्रैगन फ्रूट के पौधों की बिक्री की जाएगी। आजाद पार्क में फ्लावर शो की तैयारी शुरू हो गई है। अलग-अलग किस्म के फूलों को आकर्षक रुप से तैयार किया जाने लगा है। फरवरी में मंडल स्तरीय पुष्प प्रदर्शनी का आयोजन किया जाए।

अधीक्षक का कहना है कि आजाद में ड्रैगन फ्रूट के पौधों को तैयार कर लिया गया है। दिसंबर से बिक्री शुरू हो जाएगी। छह माह में पौधों को तैयार किया गया है। पहली बार आजाद पार्क में पौधे की बिक्री की जाएगी।

सनातन धर्म का आधार है आस्था व विश्वास : नीलम

मेजा। विधायक श्रीमती नीलम करवरिया सोरांव गांव के नर्मदेश्वर महादेव प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम और शिव परिवार वार्षिक मेले में पहुंचकर भोलेबाबा का आशीर्वाद लिया। उन्होंने कहा कि शिव परिवार वार्षिक सनातन धर्म जन आस्था और विश्वास में निहित है, बाबा सब का कल्याण मेला महोत्सव में की करेंगे। सोरांव गांव में पांच दिवसीय नर्मदेश्वर महादेव प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम शिरकत और शिव परिवार वार्षिक महोत्सव में आमंत्रित अतिथि के रूप में पूर्व विधायक नीलम करवरिया ने बुधवार को पहुंचकर बाबा का आशीर्वाद लिया। उन्होंने सहयोगियों के साथ धार्मिक आयोजन के साथ चल रहे शिव परिवार वार्षिक महोत्सव का अवलोकन किया है। कार्यक्रम का उद्घाटन बीते 20 नवम्बर को बतौर मुख्य अतिथि पूर्व विधायक नीलम करवरिया को करना था लेकिन निजी कारणों से वह नही आ पाई थी। बुधवार को प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में जुड़कर उन्होंने बाबा का आशीर्वाद लेकर सनातन धर्म को मजबूत करने का काम किया है। कार्यक्रम के आयोजक शारदा प्रसाद केसरवानी ने पूर्व विधायक का सम्मान किया है। उन्होंने कहा कि वर्षों से मेरी दिली ईच्छा रही कि बाबा की सेवा का मौका मिले। यह आयोजन उनकी कृपा से ही सम्भव हो पाया है। मौके पर प्रधान राजेश द्विवेदी, राहुल दुबे, राजू दुबे, राजीव तिवारी, जितेंद्र शुक्ल सहित भक्तों की भीड़ मौजूद रही।

शुआट्स में तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तर का सांस्कृतिक उत्सव एस्पेरांजा का उद्घाटन

सांस्कृतिक उत्सव एस्पेरांजा का उद्घाटन करते मुख्य अतिथि

नैनी, प्रयागराज। जोसेफ स्कूल ऑफ बिजनेस स्टडीज एंड कॉमर्स द्वारा शुआट्स में तीन दिवसीय राष्ट्रीय स्तर के सांस्कृतिक उत्सव एस्पेरांजा सीजन-4 का उद्घाटन किया गया। उद्घाटन सत्र के पहले दिन डॉ. अभिलाषा जे. लाल, निदेशक, (एचआरएम एंड आर) मुख्य अतिथि थीं, जिन्होंने छात्र के विकास के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रमों की आवश्यकता पर जोर दिया। विनोद बी. लाल, निदेशक, (प्रशासन) विशिष्ट अतिथि थे जिन्होंने पाठ्येतर गतिविधियों के साथ-साथ शिक्षा के महत्व पर भी जोर दिया। इस कार्यक्रम में जैम, पोस्टर मेकिंग, डांस प्रतियोगिता, गायन, जंक यार्ड वार, फूलों की सजावट, रंगोली मेकिंग, बिजनेस प्लान, शायरी, स्टैंड-अप कॉमेडी, नुक्कड़ नाटक, फेस पेंटिंग, ग्रामीण-ले-कार्ट, फैशन शो जैसी विभिन्न बहु- सांस्कृतिक गतिविधियां आयोजित की गईं। इस उत्सव में विभिन्न स्टॉल और गेम्स स्टॉल शामिल हैं।

इस कार्यक्रम को डीन प्रो. (डॉ.) स्टीफन दास, एसोसिएट डीन डॉ. रोनाल्ड वी. मणि और हेड डॉ. एनिड मसीह द्वारा प्रोत्साहित किया गया। पहले दिन प्रयागराज के कई स्कूलों, कॉलेजों के छात्रों की भारी भीड़ देखने को मिली। यह आयोजन 25 नवंबर, 2022 को समाप्त होगा। यह जानकारी डॉ. एनीड मसीह ने दी।

यूपी की माफिया मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त कानून व्यवस्था पूरे देश में एक मिसाल बनी : नन्दी

प्रयागराज। मुख्यमंत्री योगीनाथ की अध्यक्षता में परेड मैदान में आयोजित 1295 करोड़ रुपए की विकास परियोजनाओं के लोकार्पण एवं शिलान्यास समारोह में उत्तर प्रदेश सरकार के औद्योगिक विकास मंत्री नन्द गोपाल गुप्ता नन्दी ने कहा कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ 24 करोड़ प्रदेशवासियों के उन्नयन एवं विकास के लिए निरंतर कार्य कर रहे हैं। प्रदेश के अंतिम गांव तक विकास की रोशनी पहुंचे और अंतिम व्यक्ति के दरवाजे पर सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचे यह मुख्यमंत्री जी सर्वोच्च प्राथमिकता है। 2017 के पहले उत्तर प्रदेश की पहचान एक बीमारू राज्य के रूप में थी, जहां एक ओर सपा, बसपा, कांग्रेस की सरकारों ने केवल और केवल जातिवाद परिवारवाद की राजनीति को पोषित किया। वहीं दूसरी ओर हमारी सरकार ने जाति मजहब और क्षेत्र के ऊपर उठकर सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सब का प्रयास मंत्र को धरातल पर सरकार किया। आज माफिया मुक्त, भ्रष्टाचार मुक्त उत्तर प्रदेश की कानून व्यवस्था पूरे देश में एक मिसाल बनी है। सपा, बसपा की सरकारों में जो माफिया शासन और प्रशासन को नियंत्रित करते थे वे आज जेल की सलाखों के पीछे अपनी बदहाली के दिन गिन रहे हैं। माफियाओं के काले साम्राज्य पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सुशासन का बुलडोजर चल रहा है। उत्तर प्रदेश पिछड़ेपन के दौर से आगे निकलकर विकास के एक्सप्रेस वे पर तेजी से आगे बढ़ा रहा है। मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में उत्तर प्रदेश की अर्थव्यवस्था वन ट्रिलियन डॉलर बनने की ओर तेजी से अग्रसर है। हर गुजरते दिन के साथ उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास और आर्थिक प्रगति के नए अध्याय लिख रहा है। मुख्यमंत्री जी के नेतृत्व में फरवरी 2023 में ऐतिहासिक ग्लोबल इन्वेस्टर्स समिट आयोजित होने जा रहा है। इस समिट में हमारी सरकार ने 10 लाख करोड़ के निवेश का लक्ष्य निर्धारित किया है। यह आयोजन उत्तर प्रदेश के विकास को एक नई रफ्तार देगा और प्रदेश के युवाओं के लिए रोजगार की अपार संभावनाओं के द्वार खोलेगा। हम सभी प्रयागराज वासी उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक एवं आध्यात्मिक उत्थान के साक्षी हैं। संगम के इस पावन भूमि पर दिव्य कुंभ एवं भव्य कुंभ के आयोजन से प्रयाग की महिमा को देश और दुनिया ने जाना। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में हम सभी ने गोस्वामी तुलसीदास जी की पंक्तियां को कही सके प्रयाग प्रभाऊ को धरातल पर साकार होते हुए देखा। आगामी 2025 में एक बार फिर से प्रयाग की पावन भूमि सनातन संस्कृति के महा उत्सव की साक्षी बनने जा रही है। महाकुंभ 2025 का आयोजन अभूतपूर्व एवं अविस्मरणीय होने जा रहा है। अयोध्या में प्रभु श्री राम जी के भव्य मंदिर के निर्माण का कार्य तेजी से चल रहा है। 2024 की शुरूआत से देश दुनिया के करोड़ों राम भक्त प्रभु श्री राम लला विराजमान के दर्शन कर सकेंगे। आज उत्तर प्रदेश औद्योगिक विकास, आर्थिक समृद्धि और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत करने के मिशन को एक साथ आगे बढ़ा रहा है। आने वाले समय में उत्तर प्रदेश भारत की अर्थव्यवस्था एवं सांस्कृतिक पहचान का मुकुट बनने जा रहा है।

संदिग्ध अवस्था में मिला महिला का शव

प्रयागराज। कोतवाली थाना क्षेत्र के रामबाग स्थित सुंदरम टॉवर के पास स्थित फ्लैट नंबर 2 के सेकेण्ड फ्लोर में एक 35 वर्षीय महिला का शव मिलने से हड़कंप मच गया । खबर लिखे जाने तक महिला का शिनाख्त नहीं हो पाया। सूत्रों की माने तो धूमनगंज के रहने वाला एक डॉक्टर ने उस महिला को फ्लैट गिफ़्ट दिया था फ्लैट में रहने वाले लोगो का कहना है की बदबू आने के वजह से लोगों सम्बंधित थाने की सूचना दी सूचना मिलते ही मौके पर थाना कोतवाली की फोर्स औ? फोरेंसिक टीम पहुंची दरवाजा तोड़कर अंदर गये और देखा कमरे में लाश पड़ी थी लाश देखकर पुलिस के होश उड़ गए। महिला का नाम संगीता बताया जा रहा है.इस मामले में थाना कोतवाली एसएसआई मुदित राय ने बताया कि महिला नाम संगीता है फ्लैट में एक मोबाइल फोन बिना सिम का मिला है शव पीएम के लिए भेज कर पुलिस जांच पड़ताल कर रही है।

फॉगिंग, एन्टी लार्वा का छिड़काव तथा वार्ड समिति की हुई बैठक

शहर के विभिन्न क्षेत्रों में फागिंग करते कर्मी व बैठक में उपस्थित लोग

प्रयागराज। वार्डवार गठित समिति की देख-रेख में 135 साईकिल माउण्टेड मशीन, 8 बड़ी मशीन एवं 143 कर्मचारियों/मशीनों को लगाकर फॉगिंग कार्य कराया जा रहा है। एन्टी लार्वा के छिड़काव हेतु क्षेत्र में 212 हैण्ड स्प्रे मशीन, 20 व्हीकल माउन्टेन एवं 352 कर्मचारियों को तैनात करते हुए नगर निगम प्रयागराज द्वारा चुनाव वार्ड- खुल्दाबाद क्षेत्र, मुट्ठीगंज क्षेत्र, कटरा क्षेत्र, अल्लापुर क्षेत्र, नैनी क्षेत्र, मुण्डेरा, बम्हरौली, पीपल गांव, झलवां क्षेत्र, फाफामऊ शान्तिपुरम क्षेत्र, झूंसी नगर पंचायत, आदि क्षेत्र में फॉगिंग तथा एन्टी लार्वा का छिड़काव कराया गया।

मलिन बस्ती- मऊ सरैंया, नेवादा, गुलाब बाड़ी, गढ़ी कला, भुलई का पुरा, नौधरवा, आजाद नगर, चिल्ला गांव, करैलाबाग लाल कालोनी, लोकपुर, अतरसुईया, अम्बेडकर नगर, मोरी, नार्थ मलाका आदि क्षेत्र में फॉगिंग तथा एन्टी लार्वा का छिड़काव कराया गया। अस्पताल- जय प्रकाश हास्पिटल, गंगादीन हास्पिटल, आयूषी हास्पिटल, काल्विन हास्पिटल, मयंक हास्पिटल, प्रा0स्वा0केन्द्र तुलसीपुर, शिवा हास्पिटल, आर0डी0 मेमोरियल हास्पिटल, संजीवनी हास्पिटल, पूनम हास्पिटल, सदा सेवा हास्पिटल आदि क्षेत्र में फॉगिंग तथा एन्टी लार्वा का छिड़काव कराया गया। सरकारी कार्यालय- एस0एस0पी0 कार्यालय, बी0एस0ए0 कार्यालय, जिला परियोजना कार्यालय, पोस्ट आफिस, रैन बसेरा, थाना मुठ्ठीगंज, ठाकखाना मुठ्ठीगंज, संयुक्त आयुक्त कार्यालय, आर0टी0ओ0 आफिस आदि में फॉगिंग तथा एन्टी लार्वा का छिड़काव कराया गया। हॉट स्पॉट- तेलियरगंज, नैनी, अल्लापुर, भोला का पुरा, हिम्मतगंज, झूंसी क्षेत्र में फॉगिंग तथा एन्टी लार्वा का छिड़काव कराया गया। स्कूल/कॉलेज- प्रा0वि0 राजापुर, मोरीना स्कूल, परशुराम विधालय, सेंट कोलम्बस स्कूल, ए0पी0एस0 स्कूल, अब्बास स्कूल, बालिका इण्टर कालेज, ज्वाला देवी स्कूल, सेंट पीटर्स स्कूल, रमा देवी इण्टर कालेज, डी0ए0वी0 इण्टर कालेज, एम0एल0 कान्वेंट, सरस्वती विधा मन्दिर आदि में फॉगिंग तथा एन्टी लार्वा का छिड़काव कराया गया। इसके अतिरिक्त नियमित वाटर लॉगिंग के शिकायत निस्तारण की कार्यवाही करायी जा रही है।

नगर निगम प्रयागराज द्वारा नियमित रूप से आई0ई0सी0 एक्टिविटी के तहत विभिन्न माध्यमों जैसे-पी0ए0 सिस्टम माध्यम द्वारा सभी 198 डोर-टू-डोर कलेक्शन वाहनों से द्वारा डेंगू सम्बन्धी जानकारी दी जा रही है। वी0एम0डी0 द्वारा 40 बडे चैराहों पर, नुक्कड़ नाटक के माध्यम से मुटठीगंज तथा मीरापुर जोन-2 क्षेत्र में डेंगू एवं मलेरिया से रोकथाम हेतु जन जागरूक किया गया। 03 नगर निगम प्रचार वाहनों के माध्यम से तथा यमुना बैंक रोड सरस्वती घाट क्षेत्र में कराया गया तथा 6 वार्ड समिति की बैठक द्वारा जनमानस को जागरूक किया जा रहा हैं।

संक्षेप

किशोरी को भगा ले गया पड़ोसी का रिश्तेदार

कौशांबी। कोखराज कोतवाली के एक गांव की किशोरी को पड़ोसी का रिश्तेदार प्रेमजाल में फंसाकर भगा ले गया। घटना की बुधवार की शाम पीड़ित पिता ने थाने पहुंच मामले की नामजद शिकायत पुलिस से किया। पीड़ित की तहरीर पर पुलिस ने आरोपित युवक समेत मददगारों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर प्रेमी युगल की तलाश शुरू कर दी है।

पट्टीदारों ने पड़ोसन के घर किया तांडव

कौशांबी। पिपरी कोतवाली के लालापुर गांव की शोभा देवी पत्नी मुकेश का गांव के उमेश से विवाद चल रहा है। इसी अदावत में दोनों परिवार के बीच कहासुनी हो गई। तीखी झड़प के बाद पट्टीदारों ने घर में शोभा देवी को बेरहमी से पीटते हुए घायल कर दिया। सूचना पर गांव पहुंची पुलिस ने घायल महिला का प्राथमिक उपचार कराने के बाद तहरीर लेकर आरोपित उमेश समेत चार लोगों के खिलाफ मारपीट का मुकदमा दर्ज कर लिया है।

उर्वरक की कालाबाजारी पर सकिपा ने जताया आक्रोश

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी ने जिले भर में निर्धारित दाम से अधिक दामों में हो रही उर्वरक की बिक्री, नकली उर्वरक बिक्री एवं उर्वरक की कालाबाजारी को लेकर आक्रोश जाहिर किया है। साथ ही ऐसा करने वालों पर प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की है।

पार्टी नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी ने पिछले दिनों उप कृषि निदेशक कौशांबी उदयभान गौतम से मुलाकात कर उर्वरक की कालाबाजारीए नकली उर्वरक की बिक्री एवं निर्धारित मूल्य से अधिक मूल्य पर बिक्री करने वालों पर समुचित कार्यवाही करने की मांग की थी जिसपर उन्होंने जल्द ही समुचित कार्यवाही का करने का आश्वासन दिया था। बावजूद इसके करीब सप्ताह भर बीत जाने के बाद भी कोई विभागीय कार्यवाही नही हुई और जिलेभर में खुलेआम उर्वरक की कालाबाजारीए नकली उर्वरक की बिक्री एवं अधिक मूल्य पर उर्वरक बिक्री जारी है जिसे लेकर समर्थ किसान पार्टी अक्रोशित है। समर्थ किसान पार्टी के नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी ने किसानो की शिकायत पर ग्राम बड़नपुर घाटमपुर स्थित इफको आई एफ एफ डी सी केंद्र भ्रमण कर स्थलीय जायजा लिया। मौके पर मौजूद रहे किसानो से अजय सोनी द्वारा पूंछने पर उर्वरक के अधिक दामों बिक्री करने की बात सच निकली। दुकानदार प्रति बोरी अधिक दाम पर उर्वरक की बिक्री करते पाया गया। श्री सोनी ने विभागीय अधिकारी से पूरे जिले भर में उर्वरक बिक्री में अधिक दाम वसूलने, नकली उर्वरक की बिक्री एवं उर्वरक की कालाबाजारी करने वाले दुकानदारों पर पर सीधे प्राथमिकी दर्ज करने की मांग की। इस अवसर पर मौजूद रहे लोगों से वार्ता करते हुए अजय सोनी ने कहा कि पूरे जिले में उर्वरक की दुकानों में उर्वरक की कालाबाजारी ही रही हैए नकली उर्वरक की बिक्री खुलेआम हो रही है और निर्धारित मूल्य से अधिक मूल्य पर किसानो को उर्वरक बेंचा जा रहा है जिससे किसानो का शोषण हो रहा है और खेतों की मिट्टी भी खराब हो रही है। समर्थ किसान पार्टी ने इन मुद्दों को लेकर संबंधित विभाग से जल्द समुचित कार्यवाही एवं छापामारी करने की मांग की है। इस अवसर पर वीरेंद्र तिवारी, नरेंद्र पटेल, मुन्ना पटेल, घसीटे सरोज आदि मौजूद रहे।

विरोध प्रदर्शन करते साकिपा के पदाधिकारी

डीएपी खाद की किल्लत को लेकर सहकारिता कार्यालय को घेराव साकिपा

समर्थ किसान पार्टी किसानों के साथ है : अजय सोनी

कौशाम्बी। समर्थ किसान पार्टी के तत्वावधान में डीएपी खाद की किल्लत को लेकर शुक्रवार को सहकारिता कार्यालय विकास भवन मंझनपुर का घेराव किया जाएगा। इस संबंध में पार्टी नेता एवं जिला पंचायत सदस्य अजय सोनी ने बताया कि जिले की अधिकतर समितियों में डी ए पी खाद नदारद है और किसान परेशान हैं। आगे कहा कि समर्थ किसान पार्टी किसानों के साथ है और उनकी डी ए पी की समस्या को लेकर शुक्रवार को समय 12 बजे जिला सहकारिता कार्यालय विकास भवन मंझनपुर का घेराव किया जायेगा। साथ ही ज्ञापन सौंपकर तत्काल जिले भर की सभी समितियों में डी ए पी खाद की प्रचुर मात्रा में उपलब्धता सुनिश्चित कराने की मांग की जायेगी। अजय सोनी ने पार्टी के सभी कार्यकताओं को शुक्रवार 12 बजे विकास भवन मंझनपुर पहुंचने का आह्वान किया है।

पड़ोसी ने परिजनों के साथ मिलकर दंपति समेत बेटी को पीटा

कौशांबी। थाने के चौराड़ीह गांव निवासी हनुमान प्रसाद मजदूरी कर परिवार का गुजारा करता है। हनुमान प्रसाद के अनुसार बुधवार रात वह परिवार के साथ घर के नीचे वाले कमरे में सो रहे थे। इसी दौरान रात में पड़ोस की महिला अपने छत से हनुमान के छत पर आ गई और कमरे में रखा दो डिब्बा पार कर दिया। हनुमान के अनुसार एक डिब्बे में देशी घी और दूसरे डिब्बे में पांच हजार रुपया रखा था। सुबह उलाहना देने पर पड़ोसी ने परिजनों के साथ मिलकर हनुमान, उसकी पत्नी सीमा और बेटी रिंकी को पीट दिया। शोर सुनकर मौके पर जुटे लोगों ने बीच बचाव कर मामला शांत कराया। घायलों ने थाने जाकर आरोपी दबंगों के खिलाफ तहरीर दी। तहरीर मिलने के बाद पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

बाइक की टक्कर से साइकिल सवार युवक जख्मी

कौशांबी। सरायअकिल कोतवाली के गोटइया का पुरवा निवासी श्रवण कुमार बुधवार की शाम बाजार से घर लौट रहा था। गांव के समीप पीछे से आए तेज रफ्तार बाइक चालक ने साइकिल में जोरदार टक्कर मार दिया। हादसे में साइकिल सवार युवक गंभीर रूप से घायल हो गया। दुर्घटना के बाद बाइक चालक मौके से फरार हो गया। स्थानीय लोगों ने घटना की जानकारी परिजनों के साथ पुलिस को देते हुए घायल को उपचार के लिए नजदीकी अस्पताल में भर्ती कराया। पुलिस ने पीड़ित की तहरीर पर मुकदमा दर्ज कर बाइक चालक की तलाश शुरू कर दी है।

घर के बाहर बंधी सात बकरियां खोल ले गये चोर

कौशांबी। पिपरी थाने के औधन गांव निवासी राम औतार और टेंघन ने बताया कि उन्होंने बकरियां पाल रखी थी। वह उन्हें घर के बाहर बने छप्पर के नीचे बांधता था। बुधवार रात वह घर के अंदर सो रहा था। इसी दौरान आधी रात में चोर पिकअप लेकर वहां पहुंचे और राम औतार की दो व टेंघन की पांच बकरियां खोलकर लाद ले गए। सुबह घर के बाहर से बकरियां गायब देख कर भुक्तभोगियों के होश उड़ गए। उन्होंने थाने जाकर घटना की तहरीर दी। तहरीर मिलने के बाद पुलिस मामले की जांच में जुट गई है।

दिव्यांगजन दिल्ली में दिखायेंगे अपनी प्रतिभा

कौशाम्बी। जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण अधिकारी अभिषेक उपाध्याय ने जनपदवासियों से अपील की है कि ऐसे दिव्यांग युवा व बच्चे जो गायन, वादन व नृत्य कला में अपना हुनर दिखाना चाहते है, उन्हें 10 दिसम्बर को रंगशाला ऑडिटोरियम आकाशवाणी, नई दिल्ली में आयोजित रंगारंग कार्यक्रम में प्रस्तुति का अवसर प्रदान किया जायेंगा। उन्होंने बताया कि कार्यक्रम में प्रतिभाग करने वाले इच्छुक दिव्यांग युवा व बच्चे अपना नाम, पता, दिव्यांगता दशार्ने वाला एक फोटो, जन्मतिथि, लिंग, दिव्यांगता का प्रकार, निपुण प्राप्त कला का नाम, सोलो डांस,सोलो सांग,ग्रुप डांस,ग्रुप सांग,स्ट्रीट प्ले स्क्रिप्ट एकरिंग इत्यादि का एक मिनट का ऑडियो वीडियो क्लिप बनाकर जिला दिव्यांगजन सशक्तीकरण कार्यालय, विकास भवन मंझनपुर में उपलब्ध करायें।

लक्ष्य के लिए निरन्तर प्रयास पार्टी कार्यकर्ताओं का मूल मंत्र : श्रीचन्द्र शर्मा

समीक्षा बैठक

जिला मुख्यालय स्थित पार्टी कार्यालय में आयोजित हुई समीक्षा बैठक

कौशाम्बी। मंझनपुर स्थित भाजपा जिला कार्यालय में बृहस्पतिवार को इलाहाबाद झांसी स्नातक एमएलसी चुनाव को लेकर समीक्षा बैठक आयोजित हुई। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने किया, मुख्य अतिथि रूप में शिक्षक प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक एमएलसी श्रीचंद्र शर्मा रहे, विशिष्ठ अतिथि के रूप में एमएलसी उमेश चन्द्र द्विवेदी रहे। इस दौरान कार्यकताओं से बात करते हुए मुख्य अतिथि श्री चंद शर्मा ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी के एक कार्यकर्ता के रूप में उन्होंने अपनी राजनीति की शुरूआत किया है। भाजपा ही एक ऐसा दल है जो कार्यकताओं को अपना मूल आधार मानकर काम करता है। इस मौके पर कार्यकताओं से सीधे बात करते हो उन्होंने कहा कि लक्ष्य के लिए निरंतर संघर्ष करना ही भारतीय जनता पार्टी के कार्यकताओं का मूल्य लक्ष्य है। इस मौके पर पार्टी के पदाधिकारियों से बात करते हो उन्होंने कहा कि शिक्षक स्नातक का चुनाव बुद्धिजीवियों का चुनाव होता है जिसमें ऐसे लोग वोट करते हैं जो भविष्य में भारत का भविष्य युवाओं को शिक्षा देकर संवारने का काम करते हैं। पार्टी का के चुनाव में लगाए गए पदाधिकारियों का आवाहन करते हुए उन्होंने कहा कि वह शिक्षकों के पास पहुंचकर अधिक से अधिक मतदाता बनवाने का काम करें। इस मौके पर बतौर विशिष्ट अतिथि बोलते हुए एमएलसी उमेश द्विवेदी ने कहा कि जिले से उनका पुराना संबंध रहा है। पहले भी वह चुनाव में जिले से रहे हैं ऐसे में उन्हें पता है कि कौशांबी जनपद में शिक्षकों का मूल भाजपा से पहले से ही जुड़ा हुआ है बस पार्टी कार्यकताओं को उनके पास पहुंचकर अधिक से अधिक संख्या मतदाता बनाने की जरूरत है। कार्यक्रम में बोलते हुए पार्टी जिलाध्यक्ष अनीता त्रिपाठी ने चुनाव में लगाए गए पदाधिकारियों से बात करते हुए कहा कि वह पूरे मनोयोग के साथ चुनाव कार्य में लग जाएं जिससे पार्टी जिले की सभी पोलिंग से अपनी जीत दर्ज कराएं। इस मौके पर प्रमुख रूप से लाल बहादुर, कमलेश कुमार, जिला संयोजक अजय पाण्डेय, जितेन्द्र सोनकर, बाबूलाल तिवारी, चक्रेश मिश्रा, सुरेंद्र मिश्रा, कमल कुशवाहा, करुणेश त्रिपाठी, दिनेश पाण्डेय, तारा देवी वर्मा, वेद प्रकाश पाण्डेय, उमेश केशरवानी, जय प्रकाश विश्वकर्मा, बाबू लाल प्रजापति, हरेन्द्र, जितेन्द्र साहू सहित बड़ी संख्या में पार्टी कार्यकर्ता मौजूद रहे।

कार्यक्रम को सम्बोधित करते एमएलसी व बैठे अन्य पदाधिकारीगण

प्रत्येक बच्चा हो निपुण, बीआरसी कड़ा में हुई समीक्षा बैठक

दारानगर, कौशाम्बी। शासन के निर्धारित किए गए लक्ष्यों और उनकी प्राप्ति के लिए बेसिक शिक्षा विभाग में बहुत सी कार्य योजनाएं संचालित की जा रही है। जिसके शत प्रतिशत रूप से विद्यालयों में लागू कर क्रियान्वयन होने के लिए हर माह बी आर सी स्तर पर खंड शिक्षा अधिकारी, प्रधानाध्यापकों व ए आर पी और इस आर जी के बीच समीक्षा बैठक आयोजित की जाती है जिससे हर विद्यालय की प्रगति रिपोर्ट शासन को भेजी जा सके और आ रही समस्याओं का निराकरण किया सके ।

गुरुवार को कड़ा बी आर सी में खंड शिक्षा अधिकारी डा. किरन पांडेय की अध्यक्षता में कड़ा ब्लाक के परिषदीय स्कूलों की समीक्षा बैठक की गई । जिसमें उन्होंने कहा की निरीक्षण के दौरान देखने में आया है की अधिकांश स्कूलों में घंटी का प्रयोग, आदेश पंजिका का अपडेट, शिक्षक संकुल के माध्यम से विद्यालय को निपुण बनाने की कार्ययोजना का निर्माण पर काम शुरू हो गया है । यदि कोई विद्यालय नही कर रहे है तो अविलंब शुरू करा लें। उन्होंने कहा की स्कूल के हर शिक्षक को निपुण लक्ष्य कंठस्थ होए सभी बच्चों को बताएं । विद्यालय में प्रतिदिन सामूहिक रूप से कराई गई गतिविधि को वीडियो के माध्यम से प्रेषित करना, हमारे शिक्षक बोर्ड अनिवार्य रूप से लगे होनाए समय सारिणी हर कक्षा में लगी होनी चाहिए । एस आर जी दिलीप तिवारी ने स्कूल में पुस्तकालय एवं रीडिंग कार्नर का प्रयोग नियमित रूप से करनेए एस आर जी ओम प्रकाश सिंह ने प्रत्येक अध्यापक को दीक्षा ऐप का सौ प्रतिशत प्रयोग करने की विस्तृत जानकारी दी। के आर पी डी के श्रीवास्तव ने प्रेरणा पोर्टल की समस्त पेंडेंसी को पूर्ण करने में आ रही समस्याओं के निराकरण की जानकरी दी। ए आर पी प्रभाकर मिश्रा ने निपुण भारत मिशन को जन आंदोलन बनाने, एआरपी रणधीर सिंह ने प्रत्येक विद्यालयो में गणित और भाषा की संदर्शिकाओ के माध्यम से अध्यापन सुनिश्चित करने पर जानकारी प्रदान किया। एआरपी सुरेंद्र मौर्य ने दीक्षा ऐप पर गतिमान प्रशिक्षण और उसकी प्रगति पर एआरपी राम कृष्ण ने सरल ऐप के माध्यम से होने वाली छात्र परीक्षा प्रक्रिया पर चर्चा करते हुए सभी को जानकारी दिया। ए आर पी कौशल कुमार गुप्ता ने टी एल एम निर्माण और शिक्षण के दौरान कक्षा में प्रयोग करने की बात बताई । अंत में खंड शिक्षा अधिकारी ने कहा की आधार वेरिफिकेशन में हमारा जनपद प्रदेश में आंठवे स्थान पर इसे सभी मिलकर पूरा करते हुए प्रथम स्थान पर लाने का करें एवं बच्चों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करते हुए उन्हे निपुण लक्ष्य प्राप्त कराएं।

बैठक में मौजूद लोग

शोहदे ने किशोरी से की छेड़खानी

कौशांबी। महेवाघाट कोतवाली इलाके के एक गांव की किशोरी के साथ मनचले युवक ने सरेराह छेड़खानी किया। बुधवार की शाम किशोरी खेत की ओर से घर जा रही थी। किशोरी के शोर मचाने पर आरोपित युवक कहीं भी शिकायत पर जान से मारने की धमकी देते हुए भाग निकला। पीड़ित पिता से तहरीर लेकर पुलिस मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

गंगा में डूब रहीं युवतियों को समाजसेवी ने बचाया

दारानगर,कौशाम्बी। कड़ा स्थित कुबरी गंगा घाट स्नान को गई दो युवतियों का पैर फिसल जाने के कारण वह गंगा में डूबने लगी। इतना ही नहीं युवतियों को डूबता देख एक तीसरी युवती भी उन्हें बचाने को कूद गई। तीनों युवतियां डूबता देख समाजसेवी विनय पांडेय की मदद से उनकी जान बचाई गई।

गंगा स्नान करने पहुंची खुशी यादव पुत्री शिवकुमार, छोटी बहन ज्योति यादव गंगा स्नान कर रही थी। इस दौरान पैर फिसल जाने के कारण दोनों युवतियां गहरे पानी में जाने लगी। यह देख गंगा गोमती संस्था के चेयरमैन विनय पांडेय ने गोताखोरों को आवाज देकर बुलाया और सभी को साकुशल बाहर निकलवाया।

सफाईकर्मी नदारत गंदगी का लगा ढेर

कौशांबी। सरसवां ब्लॉक के सेगरहा गांव में सफाईकर्मी के नियमित गांव नहीं आने से गंदगी का अंबार लगा हुआ है। जिससे गाँव के लोग बदबूदार माहौल में रहने को मजबूर है। गाँव के लोगों ने इसकी शिकायत ग्राम सभा के जिम्मेदारों से किया। इसके बावजूद ग्राम सभा के जिम्मेदारों ने इस ओर कोई ध्यान नही दिया।

सेगरहा गाँव की नालियां पूरी तरह से चोक हो चुकी है। नालियां चोक होने की वजह से नालियों का गंदा पानी रास्तों पर बह रहा है। रास्तों पर बह रहा गंदा पानी लोगों के घरों तक पहुंच रहा है। गांव में पानी निकासी के लिए बनाई गई नालियां पूरी तरह से चोक हो चुकी हैं। लोगों के घरों का गंदा पानी रास्ते में जमा रहता है। ऐसे में लोगों का घर से निकलना दुश्वार हो गया है। शिकायत के बाद भी सफाईकर्मी के खिलाफ कोई

कार्रवाई नहीं की जा रही है। गाँव के लोगों ने इसकी शिकायत ग्राम सभा के जिम्मेदारों से किया। इसके बावजूद ग्राम सभा के जिम्मेदारों ने इस ओर कोई ध्यान नही दिया। जिससे गाँव के लोगों में काफी आक्रोश है। गाँव के लोगों ने इस ओर विकास खण्ड के जिम्मेदारों का ध्यान आकृष्ट कराते हुए गाँव मे सफाई करने की मांग किये है।

छुट्टा घूम रहे गोशाला से भागे मवेशी, किसान परेशान

कौशाम्बी। विकास खंड कौशाम्बी के बिदांव गांव की गोशाला से एंगल और तार तोड़कर फरार हुए 325 मवेशी छुट्टा घूम रहे हैं। इन्हें पकड़कर फिर से गोशाला में संरक्षित नहीं किया जा रहा है। आवारा मवेशी किसानों की फसलें चौपट कर रहे हैं। इसे लेकर किसान परेशान हैं। उनमें गुस्सा है। वहींए पशु पालन विभाग के अधिकारी हाथ पर हाथ धरे बैठे हैं।

बिदांव गांव में करीब एक करोड़ 20 लाख की लागत से स्थाई गोशाला का निर्माण कराया गया है। नवम्बर के पहले हफ्ते में ही यह गोशाला बनकर तैयार हुई है। इसकी क्षमता 400 गोवंशों को संरक्षित करने की है। ग्राम प्रधान पंचमलाल ने बताया कि बुधवार रात 325 मवेशी तार और एंगल तोड़कर गोशाला से भाग निकले थे। पशु पालन विभाग के अधिकारियों ने दावा किया था कि जल्द ही मवेशियों को पकड़वाकर फिर से गोशाला में संरक्षित करा दिया जाएगा लेकिनए सोमवार को पांच दिन बाद भी ऐसा नहीं किया गया। किसानों का कहना है कि आवारा घूम रहे मवेशी सड़कों पर दुर्घटना का कारण बने हुए हैं तो खेतों में पहुंचकर फसलों को नुकसान पहुंचा रहे हैं। किसान फसल की रखवाली के लिए रतजगा करने को मजबूर हो गए हैं। किसानों ने समस्या का समाधान न करने पर आंदोलन की चेतावनी दी है।

ट्रांसफार्मर व तार खोल ले गए चोर

कौशांबी। कोतवाली के ऊनो निवासी लवलेश कुमार का गांव के समीप निजी नलकूप है। आरोप है कि रात चोरों ने नलकूप का ट्रांसफार्मर व पांच खंभे की तार को पार कर दिया। घटना की जानकारी पीड़ित को सुबह नलकूप पहुंचने पर हुई। खोजबीन करते हुए बुधवार को पीड़ित नलकूप स्वामी थाने पहुंचा और मामले की नामजद शिकायत पुलिस से किया। पुलिस ने अज्ञात के खिलाफ चोरी का मुकदमा दर्ज लिया है।

बेजुबान मवेशी को पीटकर मार डाला

कौशांबी। सैनी कोतवाली के अझुवा निवासी अमित कुमार की गाय को पड़ोसी ने पीटकर मार डाला। मवेशी के खेत में जाने के बाद आरोपित नाराज था। जानकारी होने पर पशु पालक ने विरोध किया तो उसके साथ भी मारपीट पर अमादा हो गए। पीड़ित युवक की तहरीर पर पुलिस ने आरोपित नियामत अली के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

युवती ने अपर पुलिस अधीक्षक से की शिकायत

कौशांबी। करारी कोतवाली इलाके के एक गांव की युवती ने गांव के युवक के साथ चार माह पहले प्रेम विवाह किया था। प्रेम विवाह की जानकारी युवती के ससुराल वालों को हुई तो वह आग बबूला हो गए। आरोप है कि ससुराल वाले आए दिन जान से मारने की धमकी दे रहे हैं। अनहोनी की आशंका से भयभीत युवती ने गुरुवार को मामले की शिकायत अपर पुलिस अधीक्षक से की है।

सड़क पर बने जानलेवा गड्ढे

कौशांबी। सिराथू-मंझनपुर मार्ग से मगरोहनी होते हुए सेहिया गांव को जाने वाली सड़क गड्ढे में तब्दील हो चुकी है। आए दिन बाइक व साइकिल सवार गड्ढे में गिरकर चोटिल हो रहे हैं। सड़क की मरम्मत कराए जाने के लिए स्थानीय लोगों ने मामले की शिकायत उच्चाधिकारियों से किया। आरोप है कि शिकायत के बाद भी जिम्मेदार सड़क की मरम्मत नहीं करा रहे हैं। जिसे लेकर लोगों में रोष व्याप्त है।

शिविर में 173 मरीजों की जांच, दवाओं का भी हुआ वितरण

शिविर

चंद्रशेखर सिंह आयुर्वेद संस्थान कोईलहा की चिकित्सक टीम ने लगाया शिविर

दारानगर, कौशाम्बी। काफी दिनों से सर्दीए जुकाम और मौसमी बुखार से जुड़े मरीजों की संख्या हर गांव में बढ़ रही है। जिससे अस्पतालों और डाक्टरों के यहां मरीजों की भीड़ दिखाई देती है। जिसमें लोगों को समस्या और परेशानी होती है। इसी को लेकर भारत सरकार का आयुष मंत्रालय हर दिन हर घर आयुर्वेद कार्यक्रम चला रहा है जिससे मरीजों को घर बैठे जांच और इलाज की सुविधा मिल सके। बुधवार को इसी के तहत आयुष मंत्रालय भारत सरकार द्वारा संचालित कार्यक्रम के अंतर्गत जन संदेश जन भागीदारी जन आंदोलन के माध्यम से कोईलहा स्थित चंद्रशेखर सिंह आयुर्वेद संस्थान ने पुरामुफ्ती उर्फ बिहका में एक निशुल्क चिकित्सा शिविर का आयोजन कर संस्थान के योग्य चिकित्सकों की टीम ने शिविर में आए मरीजों की जांच करते हुए उन्हे इन बीमारियों से बचने के तरीके और उचित परामर्श देते हुए दवाओं का निशुल्क वितरण किया । मरीजों की जांच कर रही चिकित्सक की टीम के सदस्य डाण टी एस शुक्ला ने बताया की शिविर में कुल 173 मरीजों की जांच कर उन्हे दवाओं का वितरण किया गया ।

शिविर में मौजूद चिक्ति्सक व मरीज

विवाहिता को दी जान से मारने की धमकी

कौशांबी। पिपरी कोतवाली के बलहेपुर गांव की बबली यादव पत्नी सूरज यादव का पड़ोसी पट्टीदार दीपक से विवाद चल रहा है। जमीन कब्जे का विरोध करने पर आरोपित भाई के साथ मिल विवाहिता से भिड़ गया। तीखी झड़प के बाद आरोपितों ने विवाहिता को जान से मारने की धमकी दी। पीड़िता थाने ने पहुंचकर मामले की नामजद शिकायत पुलिस से किया। पुलिस ने आरोपित दीपक व संदीप के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर मामले की छानबीन शुरू कर दी है।

कांग्रेसियों ने किसानों की समस्याओं को लेकर किया प्रदर्शन, दिया ज्ञापन

प्रतापगढ़। पार्टी नेतृत्व के निर्देश पर कांग्रेस के जिलाध्यक्ष डॉ.लालजी त्रिपाठी के नेतृत्व में पार्टी कार्यालय पर किसानों की समस्याओं को लेकर गुरुवार को कांग्रेसियों ने धरना प्रदर्शन किया। जिलाधिकारी ने कांग्रेसियों के धरना स्थल पर अतिरिक्त एसडीएम अवनीश त्रिपाठी को भेजा। जहां कांग्रेस जनों ने प्रदेश सरकार के खिलाफ नारेबाजी करते हुए महामहिम राज्यपाल को सम्बोधित ज्ञापन एसडीएम को सौंपा। उसके बाद पार्टी कार्यालय इन्दिरा भवन पर कांग्रेस जनों ने बैठक आयोजित की। बैठक की अध्यक्षता जिलाध्यक्ष डॉ.लालजी त्रिपाठी एवं संचालन कांग्रेस सेवादल के जिलाध्यक्ष महेन्द्र शुक्ला ने किया। जिलाध्यक्ष डॉ.लाल जी त्रिपाठी ने कहा कि प्रतापगढ़ में किसानों को समितियों से डी.ए.पी खाद्य उपलब्ध नहीं हो रहा है। किसानों को खाद मिलने की आशा में सुबह से ही समितियों के बाहर लाइन में खड़ा रहना पड़ रहा है। समितियों पर खाद न मिलने से उन्हें खाली हाथ लौटना पड़ रहा है। किसानों की समस्या जटिल है। यूथ कांग्रेस के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष डॉ.नीरज त्रिपाठी ने कहा कि खाद की काला बाजारी हो रही है। इसके पूर्व भी प्रतापगढ़ में करोड़ों रुपए की खाद्य की काला बाजारी पकड़ी जा चुकी है। किसानों को डी ए पी खाद नहीं मिल रहा है जिससे किसान बहुत परेशान है स कांग्रेस सेवादल के जिला अध्यक्ष महेंद्र शुक्ला ने कहा कि प्रदेश सरकार की इस उदासीनता के चलते इस समस्या को महामहिम राज्यपाल के संज्ञान में लाया जा रहा है। अगर समय रहते प्रदेश सरकार ने खाद्य उर्वरक डीएपी उपलब्ध न करायी तो किसानों की आर्थिक कठिनाइयां और बढ़ जाएंगी। सरकार की उदासीनता के चलते कांग्रेस किसानों के साथ सड़क पर उतरकर आंदोलन करने को बाध्य होगी जिसकी सारी जिम्मेदारी जिला प्रशासन की होगी। इस दौरान कोषाध्यक्ष वेदान्त तिवारी, जिला कांग्रेस कमेटी के महासचिव आशुतोष तिवारी, चन्द्रनाथ शुक्ला, फतेह बहादुर सिंह, पी सी सी सदस्य सुनीता पटेल, पूर्व प्रत्याशी कुंडा योगेश यादव, नगर प्रभारी मो. इश्तियाक, कांग्रेस सेवादल के उपाध्यक्ष राम रतन तिवारी, राम धन यादव, मोनू मिश्रा, देवमणि पाण्डेय, अजीत सिंह, दिलशाद, श्याम शंकर तिवारी, प्रमोद मिश्रा, मनीष सिंह सहित अनेक कांग्रेस जन मौजूद रहे।

किसानों की समस्याओं को लेकर प्रदर्शन करते कांग्रेसी

संक्षेप

पंचायत के दौरान अधेड़ पर हमला

पट्टी। पंचायत के दौरान अधेड़ को एक युवक ने मारपीट कर गंभीर रूप से घायल कर दिया। घायल ने आरोपी के विरुद्ध तहरीर देकर कार्रवाई की मांग की है। आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र के डाही गांव निवासी सियाराम पुत्र रतीपाल ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसके आने जाने वाले रास्ते पर चैकी बनाकर पड़ोसी ने अतिक्रमण कर लिया है। जिसको लेकर बुधवार की शाम पंचायत चल रही थी। पंचायत के दौरान आरोपी के घर जौनपुर जनपद से आकर एक हफ्ते से रुके एक युवक ने हमला बोल दिया और उन्हें बुरी तरह से मारा पीटा। जिससे उनके आगे के 2 दांत भी टूट गए। पीड़ित ने मामले की शिकायत आसपुर देवसरा थाने पर करते हुए कार्रवाई की मांग की। आसपुर देवसरा थाने पर सुनवाई ना होने से पीड़ित ने गुरुवार को पुलिस क्षेत्राधिकारी पट्टी को लिखित प्रार्थना पत्र देकर कार्रवाई की मांग की है। पुलिस क्षेत्राधिकारी ने आसपुर देवसरा पुलिस को मामले की जांच कर उचित कार्रवाई करने का निर्देश दिया है।

मेडिकल कालेज के आरोपी डाक्टर को क्लीन चिट

क्लीन चिट

जेआर की पिटाई में उकसाने का लगा था आरोप

मेडिकल कालेज की दो सदस्यीय टीम कर रही थी घटना की जांच

प्रतापगढ़। मेडिकल कालेज परिसर में जूनियर डाक्टर अंकित श्रीवास्तव की पिटाई के मामले में उकसाने के आरोप में फंसे कालेज के डाक्टर राहुल सैनी को घटना की जांच कर रही टीम ने क्लीन चिट दे दी है। टीम ने रिपोर्ट में लिखा है कि घटना के समय राहुल मौके वारदात पर नहीं थे। प्रिंसिपल ने जांच रिपोर्ट एसपी को भेज दी है।

बता दें कि डाक्टर अंकित श्रीवास्तव ने कोतवाली में अपने साथ हुई मारपीट की घटना की एफआईआर लिखवाई है। जिसमें उन्होंने वार्ड ब्वाय शिवदीप उर्फ गोरे शर्मा पर डंडे से पीटने और दस हजार रूपए की रंगदारी मांगने और डाक्टर राहुल सैनी पर मारने के लिए उकसाने का आरोप लगाया है। दोनों की खिलाफ एफआईआर दर्ज कर पुलिस गिरफ्तारी में लगी थी। इसी बीच पता चला कि राहुल सैनी को इस केस में फर्जी फंसाया गया है। मामले की जांच के लिए प्रिंसिपल डॉ आर्य देशदीपक ने दो सदस्यीय जांच टीम गठित कर दी थी। पता चला है कि टीम ने जांच पूरी कर ली है। उसने अपनी रिपोर्ट प्रिंसिपल को सौंप दी है। इस बारे में प्रिंसिपल का कहना है कि घटना की जांच कर रही टीम ने रिपोर्ट भेजी है। जिसमें उसने आरोपी डाक्टर राहुल सैनी को क्लीन चिट दी है। राहुल घटना के समय वहां नहीं थे। उन्होंने बताया कि पढ़ाई कर रहे मेडिकल के छात्रों ने भी राहुल की मौजूदगी को इंकार किया है। रिपोर्ट पुलिस अधीक्षक को भेज दी गई है।

सड़क पर बह रहा रेलवे क्वार्टर का पानी, टंकी रहती है खाली

परेशानी

पानी के साथ साथ बिजली की भी बर्बादी

महीने पहले टूटी पानी की पाइप को नहीं ठीक रहे जिम्मेदार

प्रतापगढ़। टंकी का पानी रेलवे क्वार्टरों में जाना चाहिए। जिसका इस्तेमाल रेल कर्मी और उनके परिवार कर सके। वह सड़क और नाली में बहकर बर्बाद हो रहा है। इससे पानी के साथ बिजली की बर्बादी तो हो ही रही है। पानी न मिलने से कर्मचारी अलग से परेशान हो रहा है।

मामला मॉलगोदाम चैराहे का है। पम्प नंबर दस के पास बनी पानी की टंकी से न्यू रेलवे कालोनी और प्लेटफार्म पर आपूर्ति होती है। पिछले महीने भर से टंकी में पानी ले जाने वाली पाइप सड़क के किनारे टूट गई थी। जिस कारण मोटर चलने पर सारा पानी सड़क पर भर जाता है। जिससे लोगों को आने जाने में काफी दिक्कत आ रही। नाली में भी बहकर बर्बाद हो रहा है। जिससे बिजली की भी बबार्दी हो रही हैं। मोटर बराबर चलती है। लेकिन पानी टंकी में न जाकर बीच में ही बहकर बर्बाद हो रहा है। इस बारे में आईओडब्लू से बात करने का प्रयास किया गया।

सड़क पर भरा गंदा पानी

विवाहिता लापता पति ने दर्ज करवाई गुमशुदगी

पट्टी। दो दिन पूर्व विवाहिता घर से लापता हो गई है। पति ने हर संभावित स्थान पर उसकी खोज की लेकिल उसका कहीं पता नहीं चला। पति ने थाने पर गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कराई है।

पट्टी कोतवाली क्षेत्र के मरियम पुर गांव निवासी राकेश कुमार गौड़ ने पुलिस को प्रार्थना पत्र देकर आरोप लगाया है कि उसकी शादी 5 वर्ष पूर्व काजल पुत्री राजकुमार गौड़ निवासी ग्राम उमरपुर जिला सुल्तानपुर के साथ हुई थी। दो दिन पूर्व विवाहिता अपनी 2 वर्षीय मासूम बेटी को घर पर छोड़ कर कहीं गायब हो गई है। पति ने हर संभावित स्थान पर खोज की परंतु जब उसका कहीं पता नहीं चला तो गुरुवार को पट्टी थाने में गुमशुदगी की तहरीर दी। पुलिस ने मामले में गुमशुदगी की रिपोर्ट दर्ज कर अग्रिम कार्रवाई शुरू कर दी है।

कबड्डी में आईटीआई, वालीबॉल में रानीगंज का चैंपियनशिप पर कब्जा

खेल प्रतियोगिता

पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के पर स्पोर्ट्स स्टेडियम आयोजित हुई खेल प्रतियोगिता

पूर्व अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी अनवर खान, अंडर सेक्रेट्री गृह मंत्रालय अशोक पाल ने प्रतियोगिता का किया शुभारंभ

प्रतापगढ़। पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्म शताब्दी वर्ष के अवसर पर स्पोर्ट्स स्टेडियम में आयोजित कबड्डी प्रतियोगिता के फाइनल मुकाबले में आईटीआई की टीम ने आइंस्टीन पब्लिक स्कूल को 20-10 के अंतर से परास्त किया। वहीं वालीबॉल में रानीगंज की टीम ने स्टेडियम की टीम को 2-0 के अंतर से शिकस्त दी।

खिलाड़ियों से परिचय प्राप्त कर पूर्व अंतरराष्ट्रीय हॉकी खिलाड़ी अनवर खान, अंडर सेक्रेट्री गृह मंत्रालय अशोक पाल ने प्रतियोगिता का शुभारंभ किया। लालजी त्रिपाठी, लालमणि सिंह, कर्मराज सिंह मंजीत, आरपी सिंह, खुर्शीद अली निर्णायक, आंचल सिंह, ऋषिराज, आदेश शुक्ल ने स्कोरिंग किया। कुल 16 टीमें शामिल हुई। भाजयुमो जिलाध्यक्ष अंशुमान सिंह, भाजपा नेता राघवेंद्र शुक्ल ने खिलाड़ियों को पुरस्कृत किया। वालीबॉल के पूर्व राष्ट्रीय खिलाड़ी विनोद को सम्मानित किया गया।क्रीड़ाधिकारी पूनम लता राज ने आगन्तुकों का स्वागत करते हुए सभी के प्रति आभार व्यक्त किया। संचालन पूर्व रणजी खिलाड़ी आदित्य शुक्ल ने किया। अभिज्ञान मालवीय, जय बहादुर सिंह, अलाउद्दीन गुड्डु, अभिज्ञान अजय सिंह, राजेन्द्र यादव, रवींद्र सिंह आदि उपस्थित रहे।

पुरस्कृत विजेता टीम के खिलाड़ी

संक्षेप

बरदहा में कंबल वितरण समारोह का किया गया आयोजन

रानीगंज। श्रीराम जानकी मंदिर बरदहा में कंबल व साड़ी वितरण समारोह का आयोजन किया गया। जिसमें हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी हजारों की संख्या में लोगो को साड़ी व कंबल वितरित किया गया। रानीगंज तहसील के बरहदा गांव में आयोजित कार्यक्रम में बतौर मुख्य अतिथि भाजपा के काशी क्षेत्र के अध्यक्ष महेशचंद्र श्रीवास्त शामिल हुए। इस दौरान सांसद संगमलाल गुप्ता, भाजपा जिलाध्यक्ष हरिओम मिश्र आदि भाजपा नेताओं ने कार्यक्रम में शिरकत करते हुए जनता जनार्दन का आशीर्वाद प्राप्त किया। भाजपा नेता व समाजसेवी पंकज मिश्रा द्वारा पिछले कई वर्षों से गरीब व असहाय लोगों को कंबल वितरण किया जा रहा है। इसी क्रम में गुरूवार को भी लगभग पांच हजार से अधिक लोगों को कंबल व साड़ी का वितरण किया गया। समाजसेवी पंकज मिश्रा ने सभी आगंतुकों व मौजूद स्थानीय लोगों का आभार व्यक्त किया।

विविध कार्यक्रमों में आज शामिल होंगे प्रमोद तिवारी

लालगंज। कांग्रेस के राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी आज शुक्रवार को रामपुर खास विधानसभा क्षेत्र के एक दिवसीय दौरे पर आयेंगे। वह पूर्वान्ह ग्यारह बजे राजापुर तथा सवा बारह बजे बाबा घुइसरनाथ धाम में विविध कार्यक्रमों मे शामिल होंगे। राज्यसभा सदस्य प्रमोद तिवारी दिन में डेढ़ बजे पूरे बुद्धीधर बाबागंज स्थित बीडी दुबे इण्टर कालेज में आयोजित संस्थापक दिवस समारोह में बतौर मुख्यअतिथि शामिल होंगे। इसके बाद वह सायं बेला में लालगंज में भी विविध स्थानों पर लोगों से मुलाकात करेंगे। उक्त जानकारी मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल ने दी है।

तीन के खिलाफ मारपीट व धमकी का केस

लालगंज। कोतवाली पुलिस ने तीन आरोपियो के खिलाफ मारपीट तथा गालीगलौज व धमकी का केस दर्ज किया है। लालगंज के बीजूमऊ निवासी सुनील सरोज पुत्र नंदलाल ने दी गई तहरीर मे कहा है कि राजापुर रानीगंज कैथौला के बंटी पुत्र छेदीलाल सरोज, श्रीरामपुर के बुद्धराम सरोज के पुत्र जयेन्द्र सरोज तथा इसी गांव के जगदीश के पुत्र पंकज सरोज एकराय होकर बीस नवंबर को रात दस बजे उसे लाठी डंडे से मारपीट कर चुटहिल कर दिया। शोर मचाने पर आरोपियो ने गाली देते हुए जानलेवा धमकी दी। तहरीर के आधार पर पुलिस ने बुधवार की रात सुनील समेत तीन के खिलाफ केस दर्ज किया है।

अलग-अलग लूट की घटनाओं में पॉच गिरफ्तार

प्रतापगढ़। लूट की घटनाओं को अंजाम देने वाले आसपुर देवसरा थाना क्षेत्र से पॉच लुटेरों को पुलिस ने गुरूवार को गिरफ्तार किया है। जिसमें दिनेश कुमार यादव पुत्र राजेन्द्र यादव निवासी हर्रही थाना पट्टी, शैलेन्द्र यादव पुत्र राम चन्द्र, सिरताज पुत्र अली, अच्छेलाल वर्मा पुत्र राम किशोर सभी निवासी लवेदा थाना पट्टी व अजीत पटेल निवासी भुसंडी नरायणपुर थाना कंधई सामिल हैं। सरगना दिनेश यादव ने पुलिस को बताया कि एक सप्ताह पूर्व दियांवा प्राथमिक विद्यालय के पास हम लोगों ने एक समूह के एजेंट से लूट की थी इत्यादि।

घर में घुसकर चोरों ने लाखों के जेवर व नकदी चुराए

प्रतापगढ़। चोरों ने धावा बोलकर घर से लाखों के जेवर और नकदी पर हाथ साफ कर दिया। सूचना पर पहुंची पुलिस जांच करने में जुट गई। रानीगंज थाना क्षेत्र के रघवापुर निवासी सुरेश चंद्र पांडेय बुधवार की रात घर के बरामदे में सोए थे। घर के अन्य सदस्य लखनऊ में शादी समारोह में चले गए थे। आधी रात के बाद छत के रास्ते घर में दाखिल हुए चोरों ने भीतर से मुख्य द्वार में कुंडी लगाकर अंदर के कमरों का ताला तोड़कर वहां रखे बक्शे, आलमारी और कई अटैची खंगाल ली। तकरीबन एक लाख से ज्यादा के जेवर और सात हजार रुपये नकदी पर हाथ साफ कर दिया। सुबह मुख्य द्वार न खुलने पर छत के रास्ते अंदर आंगन में आने के बाद बिखरा सामान और टूटे हुए ताले देखकर पैरों तले जमीन खिसक गई। पीड़ित ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस जांच कर रही है।

पुरुषों को नसबंदी के प्रति किया जा रहा जागरूक

प्रतापगढ़। पुरुष नसबंदी पखवाड़ा की सफलता के लिए स्वास्थ्य विभाग ने तैयारियां कर ली है। नसबंदी के प्रति जागरूकता के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में सारथी वाहन को प्रचार प्रसार के लिए लगाया गया है। गुरुवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र कुण्डा के अधीक्षक द्वारा फीता काटकर प्रचार वाहन को क्षेत्र में रवाना किया गया। पुरुष नसबंदी को लेकर ग्रामीण क्षेत्रों में असमंजस और शर्म का विषय आज भी बना हुआ है। विभाग का प्रयास है कि पुरुष स्वयं नसबंदी के लिए आगे आएं। हालांकि प्रदेश सरकारों ने इस के लिए माहौल बनाने में कोई कोशिश नही छोड़ी। लेकिन अभी भी पुरुष नसबंदी का आंकड़ा उम्मीद से बहुत कम रहा है। नसबंदी को लेकर स्वास्थ्य विभाग अब सीधे प्रचार वाहनों और ऑडियो के जरिए पुरुषों में नसबंदी के प्रति जागरूकता फैलाने की जमीनी कोशिश करता नजर आ रहा है। स्वास्थ्य विभाग का प्रचार वाहन सारथी के माध्यम से ऑडियो सुनाकर पुरुषों में नसबंदी के लिए माहौल बना रहा है। इस मौके पर बीसीपीएम आशीष दुबे, बीपीएम रमेश यादव, डॉक्टर ए. के. गुप्ता और अधीक्षक डॉ. राजीव त्रिपाठी आदि मौजूद रहे।

सत्य के मुख पे कालिख मली जाएगी, दम्भ में ही मनुजता छली जाएगी...

कवि सम्मेलन

उमापुर में अखिल भारतीय कवि सम्मेलन में साहित्यकारों ने सामाजिक विसंगतियों पर किया प्रहार

लालगंज। उमापुर स्थित माँ काली धाम पर बुधवार की रात अखिल भारतीय कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ अतिथियों के द्वारा मां सरस्वती के चित्र पर माल्यार्पण तथा परवाना प्रतापगढ़ी की वाणी वंदना से हुआ। कवि सम्मेलन की अध्यक्षता प्रख्यात गजलकार राजमूर्ति सिंह सौरभ तथा संचालन गीतकार सुनील प्रभाकर ने किया। युवा गीतकार सत्येंद्र सिंह सौम्य का बेटियों को समर्पित गीत-गर्भ में मत मारो बेटी को है पुकार मन की, बेटी तो तुलसी होती है अपने आँगन की को लोगों ने खूब दाद दिया। कवयित्री अर्चना सिंह पढ़ा- राष्ट्रहित के लिए सर्जना के लिए, प्राणियों में नई चेतना के लिए भी सराही गयी। डा. रामसमुझ अकेला की जटायु पर केंद्रित रचना भी पसन्द आयी। संयोजक कवि डा. अनुज नागेन्द्र ने अपनी अवधी रचनाओं से भारी समर्थन जुटाते हुए पढ़ा- जियरा साँसत मा परा अहइ, निकुरा से उप्पर पानी बा। घर-घर के इहइ कहानी बा। अवधी के वरिष्ठ कवि निर्झर प्रतापगढ़ी की हास्य कविताओं पर श्रोताओं ने जमकर ठहाके लगाये। उन्होंने सुनाया- तोहरे डर से काँपै गाँव, गली, नाका, जय गुंडा काका। वरिष्ठ कवि आचार्य अनीस देहाती ने पढ़ा-हरै बाँव मा बीति जिंदगी थामत फटही मोट- केहका देई वोट भैकरा, केहका देई वोट पर भी तालियां बजी। संचालन कर रहे सुनील प्रभाकर ने तो अपनी गजलों और गीतों से मंच को ऊँचाई दी। उन्होंने पढ़ा- दर्द की बस्ती में डेरा है क्या किया जाये। हरेक सिम्त लुटेरा है क्या किया जाए। अध्यक्षता कर रहे राजमूर्ति सिंह सौरभ ने अपने दोहों और मुक्तकों से सामाजिक विसंगतियों पर करारा प्रहार किया- सत्य के मुख पे कालिख मली जाएगी, दम्भ में ही मनुजता छली जाएगी। कवियों को समाजसेवी ओम प्रकाश तिवारी झुन्ना, मिथलेश गुप्ता ने अंगवस्त्रम से सम्मानित किया। नगर पंचायत के चैयरमैन प्रतिनिधि संतोष द्विवेदी ने सभी कवियों को मानपत्र सौंपा। कार्यक्रम में सांसद प्रमोद तिवारी के मीडिया प्रभारी ज्ञानप्रकाश शुक्ल, अधिवक्ता संघ के अध्यक्ष अनिल त्रिपाठी महेश, प्रमोद मिश्र, डा. बच्चाबाबू वर्मा, बृजेश द्विवेदी, रामनाथ उमरवैश्य, पवन वैश्य, विजय अनभिज्ञ, सुधीर मिश्र, अतुल पाण्डेय, नोबुल तिवारी, भागवत कथा व्यास पं. शिवम तिवारी आदि रहे।

कवि सम्मेलन में काव्य पाठ करते साहित्यकार

निर्मल मन से प्रभु की आराधना ही भक्ति की सच्ची साधना : आचार्य योगेश

कलश यात्रा

बरीबोझ में भागवत कथा ज्ञानयज्ञ के शुभारंभ पर निकली भव्य कलश यात्रा

लालगंज। क्षेत्र के बरीबोझ गांव में गुरूवार को श्रीमद्भागवत कथा ज्ञानयज्ञ को लेकर कलश यात्रा में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं की भीड़ जुटी दिखी। कथाव्यास व्याकरणाचार्य योगेश के वैदिक मंत्रोच्चारण के मध्य कलश यात्रा कथा स्थल से गाजे-बाजे के साथ सई नदी तट पर स्थित बसंती माता के मंदिर से शिव मंदिर पहुंची। सिर पर कलश धारण किये श्रद्धालु महिलाएं हरे राधे हरे कृष्ण संकीर्तन के साथ शिव मंदिर से कथास्थल वापस पहुंची। पहले दिन कथा का श्रद्धालुओं को मर्म समझाते हुए कथाव्यास करपात्री धाम प्रतापगढ़ के आचार्य योगेश जी महराज ने कहा कि भक्ति की साधना निर्मलता मे ही प्रभु के सानिध्य को प्रदान किया करती है। उन्होंने कहा कि श्रद्धा का पुष्प तभी महकता है जब भगवान के प्रति साधना का संकल्प भी निश्छल हुआ करता है। कथाव्यास योगेश जी ने कहा कि योग लीलेश्वर भगवान श्रीकृष्ण ने मानव जीवन को सदैव सुचिता तथा धर्म के सानिध्य में कर्म की तपस्या का प्रतिफल निहित किया है। कथा में कुलगुरू आचार्य चक्रधर जी महराज का भी श्रद्धालुओं ने तिलकाभिषेक किया। कथा के संयोजक पं. जगत पाल तिवारी व शिवकली तिवारी ने परम्परागत व्यास पीठ का पूजन किया। सह संयोजक समाजसेवी पप्पू तिवारी ने कथाव्यास योगेश जी तथा कुलगुरू चक्रधर जी को अंगवस्त्रम प्रदान कर सम्मानित किया। अधिवक्ता दीपेन्द्र तिवारी ने सम्मान कार्यक्रम का संचालन किया। इस मौके पर रामचंद्र तिवारी, अरविंद चैबे, रमेश चैबे, विजय पाल वर्मा, जगत वर्मा, डा. गंगाधर मिश्र, सुमित त्रिपाठी, अशोक तिवारी, रमेशचंद्र पाण्डेय, आरती तिवारी, नीलम तिवारी, मीना, रेनू, ऋचा, दिनेश ओझा, शिवकरन चतुर्वेदी, जयवीर सिंह, केशवदत्त पाण्डेय, डा. दयाशंकर मिश्र, मनीष दुबे, राजू सिंह, अजीत जायसवाल, रोहित पाण्डेय, देवीदीन विश्वकर्मा आदि रहे।

बरीबोझ गांव में निकली कलश यात्रा में शामिल श्रद्धालु

दुष्कर्मियों को तीस हजार का अर्थदण्ड व बीस वर्ष की सजा

सजा

अर्थदंड की राशि पीड़िता को उसके चिकित्सा एवं मानसिक आघात की पूर्ति एवं पुनर्वास हेतु प्रदान की जाएगी

प्रतापगढ़। अपर सत्र न्यायाधीश विशेष न्यायाधीश पाक्सो अधिनियम पंकज कुमार श्रीवास्तव ने अपहरण व सामूहिक दुष्कर्म के आरोप में दोषी पाते हुए अब्दुल्ला, तनसीर, सुतगण जुम्मन व साजिद निवासी रामपुर वैशपुर थाना मांधाता को 20 वर्ष के कारावास व तीस हजार रूपया अर्थदंड से दंडित किया। अर्थदंड की राशि पीड़िता को उसके चिकित्सा एवं मानसिक आघात की पूर्ति एवं पुनर्वास हेतु प्रदान की जाएगी। वादी मुकदमा ने 28 सितंबर 2014 को थाना मांधाता में प्रार्थना पत्र दिया कि 27 सितंबर 2014 को शाम सात बजे उसकी लड़की जो शौच के लिए घर से बाहर गई थी, वहां से साजिद अली, अब्दुल्ला, तस्वीर, जुम्मन बहला-फुसला कर भगा ले गए। पीड़िता जब बरामद हुई तो उसने बताया कि उसके साथ प्रधान खलील अहमद, तनसीर, अब्दुल्ला व साजिद ने जबरदस्ती बलात्कार किया है। अभियोजन ने पांच सक्षियों को परिचित कराया। पीड़िता ने बताया कि वह अपने घर से थोड़ी दूर शौच कर रही थी, उसी समय खलील प्रधान, साजिद, अब्दुल्ला, तनसीर मेरे मुंह में कपड़ा ठूंस कर उठा लें गये। चिल्लाने पर कट्टा से मारने की धमकी दी और कहा कि अब्दुल्ला से शादी कर लो नहीं तो जान से मार दूंगा। इन चारों ने मेरे साथ जबरन बलात्कार किया और सुबह मांधाता थाने के सामने लाकर छोड़ दिया। राज्य की ओर से पैरवी विशेष लोक अभियोजक देवेंद्र त्रिपाठी ने की।

जनसंपादकीय

लैंगिक पहचान की चुनौती और समानता के सवाल

इस साल हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं। देखते-देखते हमने अनेक क्षेत्रों में मीलों लंबा सफर तय कर लिया है, कई महत्त्वपूर्ण पड़ाव पार किए हैं, लेकिन हमारी आधी आबादी का सफर अब भी अधूरा है। जीवन के कई क्षेत्रों में महिलाएं अभी भी पुरुषों से काफी पीछे हैं या यूं कहें उनकी तादाद जनसंख्या के अनुपात में बेहद कम है। महिलाओं के पिछड़ने के पीछे कोई शारीरिक कारण जिम्मेदार नहीं, बल्कि भारतीय समाज के अंदर तक पैठी वह पितृसत्तात्मक सोच है, जो महिलाओं को पुरुषों से कमतर समझती है। महज लिंग के आधार पर उनके साथ भेदभाव करती है। उसे आबादी के अनुपात में किसी भी क्षेत्र में जरूरी मौके.नहीं देती। देश में महिलाओं के साथ हर क्षेत्र में भेदभाव होता है। काम, जरूरी सेवाएं, आर्थिक मौके, कानूनी सुरक्षा, राजनीतिक नेतृत्व, शारीरिक सुरक्षा, स्वायत्तता यानी जीवन का कोई सा भी ऐसा क्षेत्र नहीं जहां उनसे समानता का बर्ताव किया जाता हो। सामाजिक और सांस्कृतिक धरातल पर देखें, तो कई स्तरों पर हमारे देश में महिलाओं की स्थिति बेहद खराब है। एक छोटी सी मिसाल, कानून के क्षेत्र की। हाल ही में देश के प्रधान न्यायाधीश जस्टिस चंद्रचूड़ ने एक मीडिया संस्थान के कार्यक्रम में खुद्र यह बात स्वीकारी, आज के समय में भी पूरे भारत में कानून के पेशे की संरचना सामंती, पितृसत्तात्मक और महिलाओं को जगह नहीं देने वाली बनी हुई है। उन्होंने इसी वक्तव्य में इन हालात को सुधारने के लिए अपनी ओर से एक तजवीज सुझाते हुए कहा, इसलिए, जब हम न्यायपालिका में महिलाओं को अधिक संख्या में शामिल करने की बात करते हैं, तो हमारे लिए समान रूप से यह जरूरी है कि अब महिलाओं के लिए जगह बनाकर भविष्य की राह तैयार की जाए। जाहिर है कि इसी तरह के नीतिगत कदमों से महिलाओं के रोजगार की स्थिति में सुधार आएगा।

बीसवीं सदी के आखिरी दशक में जब देश में उदारीकरण, निजीकरण और वैश्वीकरण जैसी आर्थिक नीतियां अमल में आईं, तो एक बारगी यह लगा कि अब महिलाओं की स्थिति सुधरेगी। उनको भी पुरुषों की तरह हर क्षेत्र में समानता का अवसर मिलेगा। श्रम का फेमिनाइजेशन होगा। लेकिन यह भ्रम बहुत जल्द ही टूट गया। सच बात तो यह है कि भूमंडलीकरण के दौर के बाद, हमारे यहां महिलाओं की स्थिति और भी ज्यादा बिगड़ी है। उदारीकरण का पिछले तीन दशकों का तजुर्बा हमें यह बतलाता है कि समाज में स्त्री-पुरुष के बीच असमानता बढ़ी है। देश के अंदर तमाम क्षेत्रों में विकास की प्रक्रिया के दौरान महिलाओं के हिस्से में असमानता ही आई है। आंकड़े खुद गवाही देते हैं कि उदारीकरण के दौर में लाखां महिलाओं के हाथ से उनका काम-रोजगार छिना है। एनएसएसओ के आंकड़ों के मुताबिक राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली के अंदर महिलाओं की रोजगार में हिस्सेदारी महज 9.4 फीसदी है। जाहिर है कि देश के बाकी हिस्सों में महिलाओं की रोजगार में हिस्सेदारी क्या होगी ? खुद ही अंदाजा लगाया जा सकता है।

एक मह×वपूर्ण बात और, जिन क्षेत्रों में महिलाएं कार्यरत हैं, वहां भी महिलाओं के लिए कार्य दशाएं उपयुक्त नहीं हैं। उन्हें वहां जरा सा भी सुरक्षित माहौल नहीं मिलता। उन्हें सरकार और समाज सुरक्षित माहौल मुहैया कराए, इसके उलट उन पर यह इल्जाम लगाया जाता है कि महिलाएं घर से बाहर काम नहीं करना चाहतीं। उनके संस्कार उन्हें घर के बाहर काम करने से रोकते हैं। जाहिर है कि इस बात में जरा सी भी सच्चाई नहीं। महिलाएं खुद्र चाहती हैं कि जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़कर अपनी हिस्सेदारी को बढ़ाएं। अपने परिवार के लिए आर्थिक स्तर पर भी कुछ योगदान कर पाएं। वे भी हर क्षेत्र में नई-नई उड़ाने भरें। पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चलें। लेकिन परिवार और समाज में उनके साथ शुरू से ही भेदभाव किया जाता है। जबकि चाहे कोई सा भी क्षेत्र हो, महिलाओं ने अपने आप को उसमें अच्छी तरह से साबित किया है। और तो और महिलाएं अब सेना के कॉम्बेट अभियान में भी हिस्सा ले रही हैं।

महिलाएं घर के बाहर काम करना चाहती हैं, लेकिन कार्यस्थल पर उनके लिए जो सुरक्षित माहौल होना चाहिए, वह उन्हें नहीं मिलता। कार्यस्थल पर आते-जाते और कार्यस्थल में उन्हें काफी कुछ झेलना पड़ता है। उनके साथ मानसिक और शारीरिक यानी सब तरह की हिंसा की जाती है। देश में हर साल महिला हिंसा के हजारों मामले दर्ज.होते हैं, जिसकी वजह से उनके मन में हमेशा एक असुरक्षा का भाव रहता है। यौन उत्पीड़न की शिकार महिलाएं अक्सर डिप्रेशन और सदमे की शिकार हो जाती हैं। इसका बुरा असर उनके करियर और उनकी तरक्क़ी पर पड़ता है। ऐसे भी कई मामले सामने आए हैं कि उन महिलाओं को नौकरियों से हाथ धोना पड़ा, जिन्होंने यौन उत्पीड़न के खिलाफ अपनी आवाज उठाई। श्रमबल में महिलाओं की भागीदारी वैसे ही लगातार कम होती जा रही है। ऐसे में सरकार और तमाम निजी संस्थानों की जिम्मेदारी बनती है कि वो कामकाज के माहौल को लैंगिक संवेदनशील और महिलाओं के लायक बनाएं। जिसमें वे सम्मान के साथ काम कर सकें।

कहने को महिलाएं हमारे देश के मानव संसाधन का पचास फीसदी हिस्सा है। लेकिन इस बड़ी आबादी का आज भी सही तरह से इस्तेमाल नहीं हो पा रहा है। बराबरी का संवैधानिक अधिकार होने के बावजूद, उन्हें कई क्षेत्रों में अभी भी समान अवसर नहीं दिए जाते। यदि उन्हें हर जगह समान हिस्सेदारी मिलती, तो आज देश के विकास की तस्वीर ही कुछ और होती। कभी शिक्षा तो, कभी सामाजिक रूढ़िवादिता, तो फिर कभी राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव में महिलाओं को उनके वाजिब हक से वंचित किया जाता रहा है। जिसका दुष्परिणाम पूरे समाज और देश को भुगतना पड़ रहा है। विकसित देशों की अर्थव्यवस्था का यदि बारीकी से अध्ययन करें, तो वहां हम यह पाएंगे कि उन देशों में महिलाओं की हर क्षेत्र में ज्यादा से ज्यादा भागीदारी है। यही वजह है कि यह देश इतना ज्यादा विकास कर पा रहे हैं। वहीं हमारे देश में स्त्री-पुरुष समानता की दिशा में अभी भी सही तरह से काम नहीं हो पाया है। स्त्री-पुरुष समानता स्थापित करने के लिए सरकार ने सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजनैतिक स्तर पर कई नीतियां और योजनाएं तो बनाईं, लेकिन इन दोनां के बीच भेद इतना अधिक है कि उसे मिटने में अभी और भी समय लगेगा।

समाज में चाहे कोई सा भी क्षेत्र हो, महिलाओं के प्रति अनेक विषमताएं मौजूद हैं। विषमताएं कम होने की बजाय दिन पर दिन बढ़ती जा रही हैं। यह विषमताएं तभी कम होंगी, जब महिलाएं खुद सत्ता में होंगी। क्योंकि राजनीति ही एक ऐसा क्षेत्र हैं, जिसमें हिस्सा लेकर महिलाओं की स्थिति में सुधार हो सकता है, लेकिन इस क्षेत्र में ही हमारे यहां महिलाओं की स्थिति सबसे ज्यादा खराब है। देश में अब तक हुए सतरह आम चुनावों के आंकड़े बतलाते हैं कि संसद में महिला सांसदों की संख्या दहाई की दहलीज से कभी आगे नहीं बढ़ पाई है। संसद में उनकी नुमाइंदगी ज्यादा से ज्यादा ग्यारह फीसद तक रही है। साठ करोड़ से अधिक की महिला आबादी वाले देश में, जहां 38 करोड़ से ज्यादा महिला मतदाता हैं, वहां संसद में उनका यह प्रतिनिधित्व सचमुच निराशाजनक है। जबकि राजनीति ही एक ऐसा जरिया है, जिसका समाज के हर क्षेत्र पर असर पड़ता है। कानून बनाने से लेकर देश के लिए नई नीतियां भी संसद से तय होती हैं। संसद और विधानसभाओं में महिलाओं को 33 फीसद आरक्षण मिले, इसके लिए देश की महिलाएं लंबे समय से संघर्ष क? रही हैं। जैसे-तैसे महिला आरक्षण विधेयक तैयार हुआ, तो पिछले छब्बीस सालों से यह संसद में अटका हुआ है। संसद में महिलाओं की भागीदारी बढ़ेगी, तो न सिर्फ.हमारे समाज में महिलाओं की स्थिति सुधरेगी, बल्कि पूरे समाज और देश की स्थिति और भी ज्यादा बेहतर होगी। राजनीति में महिलाओं की भागीदारी से ही देश में स्त्री-पुरुष के बीच असमानता में कमी आएगी और लैंगिक समानता का स्तर सुधरेगा।

एक अहम बात और, महिलाओं की समस्याओं के प्रति हम सभी और अधिक संवेदनशील हों। समाज में लैंगिक संवेदनशीलता बढ़े। क्योंकि लैंगिक संवेदनशीलता बढ़ेगी, तभी जीवन के हर क्षेत्र में लैंगिक असमानता रुकेगी। महिलाओं के साथ लिंग के आधार पर कहीं भेदभाव और उनका उत्पीड़न नहीं होगा। उनके साथ समानता का वर्ताब होगा। समानता की बुनियाद पर ही एक खुशहाल समाज और मजबूत राष्ट्र खड़ा होता है। देश की आधी आबादी को उनके अधिकारों से वंचित कर, हम कैसे तरक्क़ी करेंगे ? महिलाओं की भागीदारी के बिना जो विकास होगा, क्या वह सम्पूर्ण विकास होगा ? आंकड़े गवाही देते हैं कि जिस देश में महिलाओं को सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक और राजनीतिक बराबरी मिली, उस देश ने सफलता के नए शिखर छुए। वह देश, विकसित देशों की फेहरिस्त में शामिल हुआ। उसे विकसित देश का दर्जा मिला। यह सब हकीकत जानकर भी यदि हम अपनी आधी आबादी की समस्याओं से मुंह चुराएंगे और उन्हें अपने साथ नहीं लेंगे, तो देश में कैसे विकास होगा ? महिलाओं के सशक्तिकरण में ही भारतीय समाज और देश की सफलता का राज छिपा हुआ है।

जाहिद खान

महल कॉलोनी, शिवपुरी म.प्र, मोबाइल : 94254 89944

(वरिष्ठ आलोचक मैनेजर पांडेय केवल आलोचक ही नहीं अपने समय और समाज के एक विशिष्ट चिंतक भी रहे हैं। रविभूषण जी ने विभिन्न संदर्भों में श्री पांडेय द्वारा की गयी टिप्पणियों, कोट्स को संकलित करके प्रस्तुत करने की कोशिश की है। इन टुकड़ों से पांडेय जी के चिंतन की एक झलक हासिल की जा सकती है)

मैनेजर पाण्डेय के कुछ प्रासंगिक विचार

विचार

रविभूषण

हम जिस समय और संसार में जी रहे हैं या कि मर रहे हैं, वह पूंजीवाद की विजय का, विश्वव्यापी विजय का समय है। यही नहीं, यह उस विजय के उन्माद से उपजे शोर का भी समय है। आजकल विश्व के पैमाने पर पूंजीवाद का वर्चस्व कायम है, उस वर्चस्व के साथ यह शोषण, दमन, लूट और इन सबसे जुड़े झूठ का समय है।

एक तरह से यह व्यापक सामाजिक चिन्ता विहीन समय है। सामाजिक संवेदनशीलता- विहीन समय है। जीवन दो तरह से जिया जाता है। एक तो सफलता के लिए, दूसरा है सार्थकता के लिए। इनमें बुनियादी फर्क है। सफलता हमेशा व्यक्तिगत होती है, सार्थकता हमेशा सामाजिक होती है. आज का युवा वर्ग सफल जीवन की कोशिश करता है, सार्थक जीवन की नहीं।

***

आजादी के बाद जो सत्ता हस्तान्तरित हुई, उसमें शासन-तन्त्र और उसके विभिन्न अंग पूर्ववत बने रहे। दमनकारी कानून भी मौजूद थे और राजसत्ता का उद्देश्य भी वही था, जो अंग्रेजी राज का था अर्थात? आम जनता का शोषण और दमन ही स्वतन्त्र भारत की राजसत्ता का लक्ष्य तब भी था और आज भी है... इसलिए अगर स्वतन्त्र भारत की राजसत्ता हर प्रकार के वंचितों के प्रति हिंसक है, तो इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। यह अकारण नहीं है कि आज की भारतीय राजसत्ता दुनिया की सबसे बड़ी हिंसक राजसत्ता (अमेरिका) से मित्रता के लिए बेचैन है।

***

भारत में संसदीय लोकतन्त्र है, जो राजनीतिक दलों पर आधारित है, भारत के अधिकांश राजनीतिक दलों के गठन, ढाँचे, चरित्र और व्यवहार पर ध्यान दीजिए तो मालूम होगा कि उनमें कहीं लोकतंत्र नहीं है। जिस राजनीतिक दल में आन्तरिक लोकतन्त्र न होगा, वह देश और समाज में लोकतन्त्र का पोषक कैसे होगा... यहाँ के अधिकांश राजनीतिक दल विचारधारा के आधार पर न संगठित होते हैं, न चुनाव लड़ते हैं और न चुनाव में जीत कर सरकार बनाने के बाद काम करते हैं। वे लोकतन्त्र के बदले दलतन्त्र की स्थापना करते हैं। वादाखिलाफी भारतीय राजनीतिक दलों की जानी-पहचानी विशेषता है.

भारत में आज जो लोकतन्त्र है, वह पूंजीवादी लोकतन्त्र है, बल्कि पूंजीवाद के भूमण्डलीकरण के दौर का नव उदारवादी लोकतन्त्र है, जो उदारवादी लोकतन्त्र के सारे इरादों, वादों और लक्ष्यों को भूल कर केवल पूंजीवाद के हर तरह के विस्तार के लिए कटिबद्ध है... आज भारत के पूंजीवादी लोकतन्त्र की सत्ता जिनको विकास का दुश्मन मानती है, उनके साथ वैसा ही व्यवहार करती है, जैसा स्तालिन के सोवियत संघ मे राजसत्ता जनता के दुश्मनों के साथ करती थी।

भारत का वर्तमान लोकतन्त्र सामाजिक न्याय, नैतिक उत्थान और मानवीय यातना की कोई चिन्ता नहीं करता। आज के भारतीय लोकतन्त्र में केवल पूंजीवाद के प्रसार की चिन्ता है, समाज में लोकतन्त्र के विकास की, जनता के स्वतन्त्र रूप से जीने, सोचने और कुछ कहने के अधिकारों की नहीं... भारतीय लोकतन्त्र संविधान पर आधारित है, लेकिन जो सरकारें संविधान की शपथ लेकर बनती और काम करती हैं, वे उस संविधान की परवाह नहीं करती.... यहाँ कुछ लोगों के लिए जो लोकतन्त्र है, वही दूसरों लिए दमनकारी सत्ता है।

पूंजीवादी लोकतन्त्र में समानता वास्तविकता के रूप में ही नहीं, भाव और विचार के रूप में भी न होती है और न हो सकती है.. पूंजीवादी लोकतन्त्र में झूठ और लूट की स्वतंत्रता होती है, और लुटेरों के बीच भाईचारा भी होता है, लेकिन बहुसंख्यक जनता के लिए समानता के अभाव में न सच्ची स्वतन्त्रता होती है, न समाज में कहीं भाईचारा होता है।

आजकल भारतीय लोकतन्त्र की आर्थिक राजनीतिक और सामाजिक नीतियों का निर्माण तथा निर्धारण केन्द्र की सरकार और बड़े पूंजीपतियों के बीच सहयोग, सहमति और सन्तुलन के आधार पर होता है... सरकार के लिए देश के विकास का अर्थ है पूंजी, पूंजीवाद और पूंजीपतियों का विकास और उस विकास में बाधक किसानों, मजदूरों और आदिवासियों का दमन।

***

भारत में अब दो भारत है। एक मुट्ठी भर अमीरों, पूंजीपतियों और उनके सेवकों का भारत, जो शहर में रहता है तो दूसरी ओर बहुसंख्यक गरीबों, किसानों, मजदूरों, दलितों और आदिवासियों का भारत, जो गाँवों में रहता है। पहला भारत 10 प्रतिशत लोगों का है और दूसरा 90 प्रतिशत जनता का। पहले भारत में भूमण्डलीकरण, पूंजीवाद और उपभोक्तावाद की धूम मची है तो दूसरे भारत में गरीबी, बीमारी, कुपोषण, असमानता, शोषण और दमन का राज है। पहला भारत उत्तर - आधुनिक हो रहा है और दूसरा भारत सामन्ती तथा पूंजीवादी गठजोड़ का शिकार। ***

भारत एक अराजक स्थिति के बदले दमनकारी स्थिति की ओर बढ़ता दिखाई दे रहा है। पूंजीवाद का संकट, जितना गहरा होगा। पूरी दुनिया और इस देश में भी पूंजीवाद के विरुद्ध विद्रोह तेज होगा और पूंजीवाद की रक्षा के लिए दमन की प्रवृत्ति का उतना ही विस्तार होगा।

इस समय देश में दो प्रमुख राजनीतिक दल हैं - एक है कांग्रेस, दूसरी भाजपा। बाकी विभिन्न क्षेत्रों में प्रभावशाली अनेक दल हैं। भाजपा और कांग्रेस में बुनियादी फर्क बहुत कम है। दोनों की आर्थिक नीतियाँ एक जैसी हैं और उस अर्थनीति से निकली राजनीति भी समान ही है। इसलिए भविष्य में अगर इन्हीं का शासन रहा तो देश की आम जनता का कोई भविष्य नहीं होगा। अगर इस देश के वामपन्थी दलों में सच्ची एकता कायम हो और उन्हें सत्ता में आने का मौका मिले तो आम जनता का भविष्य बेहतर हो सकता है।

हमारे देश में जो स्वराज्य है, वह अंबानियों, टाटाओं, और सलीमों के लिए हैं, न कि आदिवासियों, किसानों और मजदूरों के लिए। पूंजीपतियों के स्वराज्य के कई मिथक हैं। एक मिथक यह है कि सेंसेक्स कितना ऊपर चढ़ा है, दूसरा मिथक यह है कि देश में कितने करोड़पति हुए हैं, तीसरा यह कि देश के राष्ट्रीय विकास की दर कितनी बढ़ी है और चौथा मिथक यह है कि विश्व में हम कहाँ हैं.. गाँधी के स्वराज्य के आधार थे सत्य और अहिंसा। आज के विकास के आधार है झूठ और हिंसा।

***

आज भी भारतीय समाज में जातिवाद की जकड़न बनी हुई है। हिन्दी क्षेत्र में इसका जोर और आतंक सबसे अधिक है। सामूहिक रूप से हरिजनों की हत्या करने और उन्हें जिन्दा जलाने की सबसे अधिक घटनाएँ आज भी हिन्दी क्षेत्र में ही हो रही है। ऐसी स्थिति में जातिवाद के विरुद्ध जन-आन्दोलन और वैचारिक संघर्ष की जरूरत आज भी बनी हुई है। जाति प्रथा मूलतः अधिनायकवादी और दमनकारी प्रवृत्तियों से जुड़ी हुई है। इस देश में लोकतन्त्र की रक्षा और विकास के लिए जातिवाद का विरोध आवश्यक है। आजकल जातिवाद जितना समाज में है, उससे अधिक लोगों के मन में है।

***

भारतीय समाज में स्त्री की गुलामी के बंधनों को कठोर और अकाट्य बनाने में बहुत बड़ी भूमिका धर्म और उसके शास्त्रों की है। उनमें स्त्री की दासता को बढ़ाने वाले केवल आदेश और उपदेश ही नहीं है, बल्कि उसको मिथक बनाने की एक पूरी प्रक्रिया है, जिसमे एक ओर उसे सहज अपावन और अवगुणों की खान कहा गया है तो दूसरी ओर पवित्रता, सहनशीलता, त्याग, बलिदान आदि की मूर्ति बना कर उसकी गुलामी को गौरवान्वित करने की कोशिश की गयी है।

भारतीय समाज में स्त्री की पराधीनता केवल लिंग भेद तक सीमित नहीं है; उसका संबंध वर्गगत और वर्णगत विषमता से भी है। भारतीय स्त्री की मुक्ति पुरुष बनने की कोशिश से संभव नहीं है, उसके लिए वर्गगत और वर्णगत विषमता का अंत जरूरी है।

***

आज के भारतीय समाज में प्रभुत्वशाली मुख्य धारा के बरक्स अधीन जन समूह निम्नलिखित हैं - 1. आदिवासी, 2. किसान, 3. मजदूर 4. दलित, 5. मुसलमान 6. ईसाई, 7. स्त्रियाँ, 8. बच्चे और 9. जम्मू कश्मीर तथा पूर्वोत्तर भारत की आम जनता। ***

दिल्ली देश की राजधानी है... दिल्ली में आदिम बर्बरता और इक्कीसवी सदी के दरवाजे पर दस्तक देती आधुनिकता अगल-बगल खड़ी है। दहेज के लिए सबसे अधिक स्त्रियाँ दिल्ली में ही जलायी जाती हैं और कंप्यूटर की शिक्षा देने वाली संस्थाएं सबसे अधिक दिल्ली में ही हैं। यहाँ पुराने से नये की अद्भुत साँठ-गाँठ है। यहाँ धर्म और विज्ञान साथ-साथ चलते हैं। भौतिकता की गोद में आध्यात्मिकता पलती है।

***

भारत में एक ओर आर्थिक विकास की धूम मची है, जिसे कभी 'चमकता भारत' कहा जाता है, तो कभी 'अतुल्य भारत'। दूसरी ओर भुखमरी के शिकार लोगों की संख्या बढ़ी है। पाँच वर्ष से कम आयु के 47 प्रतिशत बच्चे कुपोषण की गिरफ्त में हैं। देश के एक प्रतिशत पूंजीपतियों की आय में अपार वृद्धि हुई है तो 60 से 70 प्रतिशत लोगों की आय बहुत कम है.. गरीबों के आय में जो नाम मात्र की वृद्धि हुई है, उसे महंगाई खा गई है। देश के उत्पादन के दर में वृद्धि तो हुई है, लेकिन मजदूरों को मजदूरी जहाँ की तहाँ है। असंगठित मजदूरों की दशा संगठित मजदूरों से भी खराब है। पिछले एक दशक से भारतीय अर्थव्यवस्था को भूमंडलीकरण, उदारीकरण और बाजारीकरण के साँचों में ढालने की जोर-शोर से कोशिश हो रही है। कुछ लोग इस अभियान को भारत के आर्थिक विकास का राम बाण कह रहे हैं, तो कुछ दूसरे इसी प्रक्रिया से भारत में राम-राज्य लाने की घोषणाएं कर रहे हैं... व्यापक जन-समुदाय इन नारों से भ्रमित जरूर हुआ है। ऐसी स्थिति में इन मोहक नारों की कलई खोलना और उनमें लिखे खतरों से समाज को सावधान करना सच्चे बुद्धिजीवी का पहला कर्तव्य है।

***

भारतीय समाज को समझने के लिए वर्ण और वर्ग को साथ-साथ ध्यान में रखना जरूरी है.. जो लोग केवल वर्ग की धारणा के आधार पर भारतीय समाज की संरचना को समझने की कोशिश करते हैं, वे वर्ण और जाति की वास्तविकता को उपेक्षा करते हैं.. वर्ण के आधार पर भरतिए समाज की संरचना की व्याख्या.. में भी भरतिए समाज की अनेक जातिलताएं छूट जाती हैं।

बिहार में नक्सलवादी आन्दोलन से प्रभावित जो जन-आन्दोलन है, वे एक स्तर पर जाति व्यवस्था को तोड़ने का काम कर रहे हैं.. तमाम दूसरी वामपंथी पार्टियाँ चुनावी राजनीति को जाति व्यवस्था के ढांचे में डाल कर चलती हैं। इसलिए चुनाव की राजनीति करने वाली वामपंथी पार्टियाँ जाति-व्यवस्था को तोड़ने में समर्थ नहीं हुई हैं.. वे जाति-व्यवस्था को तोड़ने में सहायक भी नहीं हुई हैं... यह जो चुनाव-प्रक्रिया है, वह न सिर्फ बिहार, बल्कि पूरे देश में जाति-व्यवस्था को क्रमशः मजबूत कर रही है।

***

भारतीय वामपंथ की कमजोरी यह रही कि उसने कार्ल मार्क्स के सोच-विचार व लेखन पर ध्यान देने के बदले उसकी सोवियत व्याख्याओं पर ज्यादा भरोसा किया.. वे व्याख्याएँ बहुत दुर्व्याख्याएँ थीं। भारत में इतनी तरह के वामपंथी है, जितनी जातियाँ भारत में होंगी और हर तरह के वामपंथी खुद को सही और दूसरे प्रकार के वामपंथियों को गलत समझते हैं। इसलिए एकता की कोई संभावना दिखाई नही देती।

अमेरिका ने साम्यवाद के प्रसार को रोकने के लिए, अनेक देशों के वामपंथी नेताओं, कार्यकताओं और बुद्धिजीवियों की हत्या करवाने में हर तरह की मदद की है... एक ऐसा देश जिसकी सरकारें दूसरे देशों पर आक्रमण करती हैं, खूँखार तानाशाहों का समर्थन करती हैं और विरोधी विचार वालों की हत्या का षड्यन्त्र करती हैं, वहाँ के शासक जब स्वतन्त्रता, लोकतन्त्र और मानवाधिकारों की रक्षा की बात करते हैं, तब वह सब झूठ और पाखण्ड के विराट प्रदर्शन के अलावा और क्या है।

***

साम्राज्यवाद एक समग्र प्रक्रिया है। इसका मूल आधार आर्थिक होता है। उसके सहायक के रूप में राजनीति होती है। राजनीति के सहायक के रूप में सैन्य शक्ति होती है और इन सब चीजो की सहायक होती है, टेक्नोलॉजी, जो मोटे तौर पर संस्कृति का ही एक पक्ष है... वर्तमान दौर में अमरीकी नेतृत्व में जो भूमंडलीय हो रहा है, उसमें भी आर्थिक, राजनीतिक और सैनिक प्रयासों के साथ-साथ सम्मोहन और चित्त-विजय का अभियान चल रहा है।

***

दुनिया आज इतिहास के कुछ सबसे गंभीर संकटों से जूझ रही है। ये आर्थिक और राजनीतिक संकट हैं। इस भूमण्डल को एक उपनिवेश मे बदल देने की कोशिशें जारी हैं, लेकिन आर्थिक राजनीतिक संकटों से जुड़े हुए कुछ सामाजिक और मानवीय संकट भी हैं, जिनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती।

***

भारतीय संस्कृति में पाखण्ड का एक रूप यह है कि ईश्वर चाहे तो सोलह हजार से प्रेम करें, लेकिन मनुष्य के लिए वह वर्जित विषय बना रहे.. भारतीय जीवन की एक विडम्बना यह है कि हम जिनकी पूजा करते हैं, उनके ही आचरण से मीलों लम्बी दूरी बनाये रखते हैं। हम राधा को जपते हैं, लेकिन राधा की तरह आचरण करने वाली स्त्रियों का जीना मुश्किल कर देते हैं।

(संकलनकर्ता वरिष्ठ आलोचक एवं सामाजिक राजनीतिक चिंतक हैं, संपर्क 94311 03960)

महिला सशक्तीकरण राष्ट्र के विकास के लिए अनिवार्य

प्रसंगवश

प्रभात किशोर

भारतीय संस्कृति और सभ्यता में महिलाओं को सर्वोच्च सम्मान प्राप्त है। कल-कल बहती नदियां मानव व समस्त जीव-जन्तुओं की जीवन रेखा हैं, जिस कारण उसे माता की संज्ञा दी गयी है । इसी प्रकार हम अपने देश को भी माता के समान पूजनीय मानते हुए ह्यह्यभारत माताह्यह्य कहते हैं । हमारे अधिकांश पर्व-त्योहार विभिन्न रूपों में देवियों की आराधना पर आधारित हैं। एक धर्मशास्त्र से के अनुसार, ह्ययत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता, यत्रस्तु न पूज्यन्ते, सर्वस्तात्र फल क्रिया अर्थात जहां नारी का सम्मान होता है, वहां देवता निवास करते है एवं सम्मान में वृद्धि होती है तथा जहां कहीं भी नारी का अपमान होता है, वहां सभी कार्य चाहे वह कितने भी परोपकारी क्यों न हों, निष्फल रहते हैं।

दुर्भाग्य से, समय के साथ, पूरे विश्व में महिलाओं की स्थिति धीरे-धीरे बिगड़ती गई और समाज में सती प्रथा, शिशुहत्या, बाल विवाह, दहेज, महिला पुनर्विवाह पर वर्जना, तीन तलाक, निकाह हलाला और कई अन्य भेदभाव वाली प्रथाओं का प्रचलन बढ़ा। देश के साथ-साथ विदेशों में भी कई समाज सुधारकों ने इन अमानवीय रूढ़ियों की समाप्ति हेतु संघर्ष किया है और कुछ हद तक समाज में बदलाव परिलक्षित हुए हैं। भारतीय नारीवाद की जननी और भारत की पहली महिला शिक्षिका सावित्री बाई फुले ने समाज-निर्मित भेदभावपूर्ण प्रथाओं की बेड़ियों से मुक्ति हेतु महिलाओं के साथ-साथ गर्भवती एवं बलात्कार पीड़ितों के लिए देखभाल केंद्र एवं अनेक विद्यालय प्रारम्भ किए।

हमारा संविधान महिलाओं को समानता, गरिमा और भेदभाव से मुक्त समान अधिकार प्रदान करता है। अनेक कानून एवं नीतियां, विशेषकर बाल विवाह निषेध अधिनियम 2006, घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण अधिनियम 2005, मुस्लिम महिला (विवाह अधिकार संरक्षण) अधिनियम 2019, राष्ट्रीय महिला सशक्तिकरण की नीति 2001, एकीकृत बाल संरक्षण योजना 2009, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 आदि सामाजिक कुरीतियों की विकट स्थिति से निपटने के लिए लागू किये गये हैं। पहले सिर्फ अच्छे वर और अच्छे घर के साथ लड़कियों के सपनों का सामना उनके घरों की चार दीवारों के भीतर सीमित जीवन से होता था। वैश्वीकरण और शिक्षा के प्रसार के उपरान्त, उन्होंने चहारदीवारी की बाधाओं और सीमाओं को तोड़ने, अपने सपनों और वास्तविकता के बीच की खाई को पाटने का संकल्प लिया और महसूस किया कि बाहरी दुनिया बहुत आकर्षक है और उन्हें आगे बढ़ने की अपनी आकांक्षा को पूरा करना चाहिए।

एक समय महिलाओं को केवल बाल देखभाल और घरेलू कार्यों के लिए उपयुक्त माना जाता था। साथ हीं उनके घरेलू कार्यों को हमेशा कम आंका गया है । अब समय बदल गया है और उन्हें मुख्यधारा के कार्यबल का अहम हिस्सा माना जा रहा है। वे हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं, चाहे वह व्यवसाय हो, राजनीति हो, सामाजिक कार्य हो, पत्रकारिता हो या फिर सरकारी नौकरी हो । उनका योगदान लैंगिक समानता का प्रतिबिंब है। संयुक्त राष्ट्र के सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के लक्ष्य -5 को विशेष रूप से वर्ष 2030 तक सभी महिलाओं और बालिकाओं के लिंग समानता और सशक्तिकरण के लिए डिजाइन किया गया है। महिला सशक्तिकरण का अर्थ है सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक रूप से राजनीतिक और मनोवैज्ञानिक रूप से महिला को सशक्त बनाना । महिला सशक्तिकरण हेतु अंग्रेजी में 3 एल क्रमशः लर्निंग, लेबर एवं लीडरशिप आवश्यक हैं। सीखने से महिला को असीम ज्ञान प्राप्त करने में मदद मिलती है जिससे उनके विचारों को व्यापक बनाया जा सकता है और नकारात्मक सोंच को दूर किया जा सकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करके और प्रासंगिक अवसर प्रदान करके महिलाओं को सशक्त बनाने से उनका समग्र विकास एवं उन्नति होगी तथा लैंगिक पूर्वाग्रह को दूर करने में सहायता मिलेगी।

एक कहावत है, संस्कृताः स्त्री पराशक्तिः अर्थात एक प्रबुद्ध महिला अनंत शक्ति का स्रोत है। शिक्षा के क्षेत्र में, विभिन्न केंद्रीय और राज्य शैक्षिक योजनाओं जैसे बिहार शिक्षा परियोजना, लोक जुम्बिश, एपीपीईपी, डीपीईपी, एसएसए, आरएमएसए, एसएस, एनपीईजीईएल, केजीबीवी, बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ आदि के माध्यम से लड़कियों की शिक्षा पर विशेष जोर दिया गया है। महात्मा गांधी के अनुसार, यदि आप एक पुरुष को शिक्षित करते हैं तो आप एक व्यक्ति को शिक्षित करते हैं, लेकिन यदि आप एक महिला को शिक्षित करते हैं तो आप एक पूरे परिवार को शिक्षित करते हैं। एक प्रसिद्ध अफ्रीकी कहावत है, यदि आप एक लड़के को शिक्षित करते हैं, तो आप एक आदमी को प्रशिक्षित करते हैं। अगर आप एक लड़की को शिक्षित करते हैं, तो आप एक गांव को प्रशिक्षित करते हैं। सामाजिक क्षेत्र में, पंचायत और स्थानीय निकाय चुनावों में 50 प्रतिशत आरक्षण, शिक्षकों की भर्ती में 50 प्रतिशत आरक्षण और बिहार में महिलाओं को सरकारी नौकरियों में 35 प्रतिशत आरक्षण से राज्य में राजनीतिक और सामाजिक क्रांति का सूत्रपात हुआ है। वर्तमान में, भारत के अधिकांश राज्यों ने पंचायती राज संस्थानों में महिलाओं को जमीनी स्तर पर निर्णय निमार्ताओं के रूप में सचेत रूप से सशक्त बनाने के लिए आरक्षण प्रदान किया है। इन पहलों ने सामाजिक परिवर्तन के लिए उत्प्रेरक का काम किया है।

सरकार ने महिलाओं के शोषण-मुक्ति तथा उन्हें आत्मनिर्भर बनाने के उददेश्य से कई योजनाएं प्ररम्भ की हैं। वोकल फॉर लोकल अभियान तभी संभव होगा जब महिलाएं इसमे दिल से भाग लेंगी। इसी तरह, आत्मानिर्भर भारत के लिए महिलाओं को व्यवस्थित कौशल प्रशिक्षण, अवसर और सहायता उपलब्ध करनी होगी। आए दिन सामूहिक बलात्कार, यौन शोषण, तेजाबी हमले और घरेलू हिंसा जैसे जघन्य अपराध हमारे समाज पर कलंक हैं। अथक प्रयासों के बावजूद इस तरह की अमानवीय घटनाएं बार-बार हो रही हैं, जिससे निबटने हेतु दोषियों को फास्ट कोर्ट के माध्यम से कड़ी सजा देने की आवश्यकता है।

निस्संदेह, एक माँ, बहन और पत्नी के रूप में महिलाओं ने हमारी सफलता के लिए बहुत त्याग किया है। लेकिन दुर्भाग्य से कुछ महिलाएं ऐसी भी हैं जो अपने परिवार की महिला सदस्यों के दमन और भेदभाव में लिप्त हैं। महिला दिवस उन सभी मुद्दों पर विश्व स्तर पर सोचने, विश्लेषण करने और कार्य करने के लिए उपयुक्त दिवस है, जो राजनीतिक, सामाजिक, प्रशासनिक और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से महिलाओं को एक सक्षम मानव पूंजी में रूपातंरित करने के लिए जिम्मेदार हैं।

(लेखक अभियंता और शिक्षाविद हैं।)

व्यंग्य

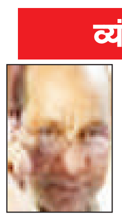

पांडुलिपि का पुनर्पाठ

बुलाकी शर्मा

भूमिका लिखने के लिए प्रशंसात्मक बिंदु पकड़ने की गरज से गजल संग्रह की पांडुलिपि को चौथी बार पढ़ रहा हूं । पांडुलिपि भी किसी ऐरे - गैरे लेखक की नहीं, मेरे हलके के थानेदार जी के समधि जी की है ।

राजकीय सेवा से निवृत्त होने के पश्चात थानेदार जी की बेटी के श्वसुर जी साहित्य प्रसार में इतनी द्रुत गति से प्रवृत्त हुए कि नौ नहीं मात्र सात माह में ही दो गजल संग्रह के जन्मदाता बन गए । उनमें से एक की भूमिका लिखने का सौभाग्य मुझे उपलब्ध कराया गया है । साहित्य वगैरह से थानेदार जी का रत्ती भर का रिश्ता नहीं है । उनके समधि जी ने ही भूमिका लेखक के रूप में मेरा चयन किया है। दुष्यंत कुमार, नीरज, गुलजार, बशीर बद्र, निदा फाजिली जैसे शायरों से तुलना करते हुए उनके समकक्ष बिठाते हुए भूमिका लिखने का मुझे निर्देश मिला है ।

थानेदार जी के निदेशों की पालना में आलोचकीय दृष्टि का चश्मा किनारे रख, सकारात्मक और प्रशंसात्मक दृष्टि का चश्मा आंखों पर चढ़ाकर गजल संग्रह का चौथी बार अध्ययन किया किन्तु एक भी ऐसी मुक्कमल गजल नहीं खोज पाया जो मीटर पर खरी हो । यह पांडुलिपि पढ़ते हुए मुझे प्राचीन भाषविज्ञ मम्मट का स्मरण हो आया । वे काव्य शास्त्र के विवेचन कार्य में संलग्न थे, तब का वाकया बताया जाता है । उनका शोध कार्य अंतिम चरण में था तब एक कवि महाशय उनके पास अपनी कविता की पांडुलिपि लेकर आए और उस पर कुछ लिखने का निवेदन किया । मम्मट ने उसे पढ़कर उनकी ओर असीम पीड़ा से देखा और बोले - इतने विलम्ब से क्यों आए आप ? पहले आ जाते तो मेरा शोध कार्य बहुत आसान हो जाता । मुझे अपने शोध प्रबंध में काव्य सिद्धांत प्रतिपादन में इतना श्रम नहीं करना पड़ता ।

कवि महाशय मुग्ध । बोले - सच में मेरी कविताएं इतनी महत्त्वपूर्ण लगी आपको ?

मम्मट ने खुलासा किया - सच में बहुत महत्त्वपूर्ण है भाई । मैंने काव्य - असंगतियों पर शोध कार्य किया है । असंगतियां ढूंढ़ने के लिए मुझे अनेक ग्रंथों की खाक छाननी पड़ी । यदि आप पहले मिल जाते तो मुझे इतनी माथा पच्ची नहीं करनी पड़ती क्योंकि आपके यहाँ वे सभी असंगतियां विद्यमान हैं ।

थानेदार जी के समधि मुझे मम्मट के पास पहुंचे कवि महाशय भी बड़े कवि लगे । गजल में शब्दों का न सही तौल - वजन और न ही बहर का ध्यान । ऊपर से निर्देश ये हैं कि नामचीन शायरों के जोड़ में बिठाना है । पुस्तक की कमियों की अनदेखी कर झूठी प्रशंसा करते हुए भूमिका लिखने के लिए मेरा स्वाभिमानी और दम्भी लेखक - मन तैयार नहीं हो रहा था लेकिन मन की बात थानेदार जी से सीधे कहने का साहस भी नहीं था ।

मध्यमार्गी बनते हुए उनके समधि जी को फोन लगाया । उन्हें नमस्कार कर शहद से भी मीठे स्वर में कहा - भूमिका लेखन के मामले में मैं फिसड्डी हूँ । आपकी गजलों के साथ न्याय नहीं कर पाऊंगा । किसी और से भूमिका लिखवाएंगे तो वह बेहतर लिखेगा ।

उधर से जवाब मिला - आपको अकादमी वगैरह का पुरस्कार मिल रखा है इसलिए आपसे भूमिका लिखवाने की सोची । यह डिसिजन मेरा है । आप मशविरा न दें प्लीज । आपको ही लिखनी हैं, ठीक है न । और उन्होंने फोन काट दिया ।

पांच मिनट भी न हुए होंगे कि मोबाइल की रिंगटोन बजी । स्क्रीन पर थानेदार जी का नाम चमक रहा था । मेरी घबराहट बढ़ गई । धड़कते दिल से कॉल रिसीव की । सख्त स्वर कानों में पड़ा - समधि जी को नाराज करने की हिम्मत कैसे हुई आपकी कविराज ? वे मेरे बेटे के नहीं, बेटी के श्वसुर हैं, बताया था न आपको । उन्हें नाराज करने हिम्मत मैं नहीं कर सकता फिर आपने ऐसी गलती कैसे कर दी, बताओ ?

मैंने हिम्मत करके अटकते - अटकते कहा - वे दुष्यंत, नीरज आदि को आधार बनाते हुए लिखने का कह रहे हैं किंतु ऐसी भूमिका लिखना मेरे वश में नहीं है थानेदार साब ।

उनका आदेशात्मक स्वर गूंजा - अरे यार, क्या फजूल बात करते हो ? दुष्यंत, नीरज जो भी हो, आधार बनाओ न । वे मना कर रहे हैं क्या ? उनका पता - ठिकाना बताओ मुझे । उन्हें ऐसी डोज देता हूँ कि वे लिखना भूल जाएंगे । किसी को अरेस्ट करने लिए हम धाराओं को आधार बनाते सोचते ही नहीं और तुम हो कि भाव खा रहे हो । कान खोल कर सुन लो । समधि जी जैसा चाहते हैं, वैसा लिखा मुझे कल तक मिल जाना चाहिए । समझ गए न ।

पुलिस व्यवस्था की विसंगतियों पर व्यंग्य लिखने वाला मेरा दम्भी - स्वाभिमानी लेखक भीतर तक हिल गया । मैंने नई दृष्टि से पांडुलिपि का पुनर्पाठ किया । आश्चर्य कि वह मुझे गजल के इतिहास में नई दिशा देने वाली लगने लगी और मैं उसकी भूमिका लिखने लगा ।

(लेखक व्यंग्यकार हैं, संपर्क 9413839900)

रचनाएं हमें ई-मेल से भी भेज सकते हैं- <raisubhash953@gmail.com>

संदिग्ध परिस्थितियों में किसान की मौत

हत्या का आरोप

सड़क किनारे मिला अधेड़ किसान का शव, परिजनों ने किया प्रदर्शन

जनसंदेश न्यूज

कछवां। स्थानीय थाना क्षेत्र में किसान की बुधवार की देर रात संदिग्ध हालत में मौत हो गई। हत्या की आशंका व्यक्त करते हुए मृतक के भाई ने गुरुवार को ग्रामीणों समेत थाने में धरना दिया। मामले में पुलिस ने चार आरोपितों के खिलाफ मुकदमा दर्ज करते हुए किए जांच शुरू कर दी है।

तहरीर में आरोप लगाया कि बरैनी गांव निवासी विष्णु पुत्र मुक्ति सिंह के खेत को अधिया पर लेकर उसका भाई माने बिंद (50) खेती करता था। धान पहुँचाने के लिए दबाव बनाने पर बुधवार की रात ट्रैक्टर से वह धान पहुंचाने विष्णु के घर गया था।

देर रात तक वह घर वापस नहीं लौटे तो उनकी खोजबीन के लिए परिजन निकले। इस बीच गांव में शोरगुल हो रहा था। जाकर देखा तो उसके भाई का शव पड़ा था। मौके से विष्णु समेत चार लोग उन्हें देखते ही फरार हो गए।

इस मामले में आरोपित विष्णु सिंह के परिजन का कहना था कि वह उनका धान पहुँचाने आया था। साथ ही वह अपना भी धान लेकर आया था। इसे बेचकर जो रुपया मिले उसे उसने देने की बात कही और चला गया।

ट्रैक्टर पर बैठकर वापस घर जाते समय जानकारी मिली की उसकी ट्रैक्टर से गिरकर मौत हो गई। क्षेत्राधिकारी सदर शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने घटनास्थल का मुआयना करने के बाद आरोपित चार लोगों पर नामजद तहरीर के आधार पर मुकदमा दर्ज करने का निर्देश थाना प्रभारी कछवां रामस्वरूप वर्मा को दिए। सीओ सदर ने कहा कि सीसीटीवी फुटेज खंगालते हुए मामले की जांच की जा रही है।

वहीं सीओ सदर शैलेन्द्र त्रिपाठी ने गुरुवार को घटनास्थल का मुआयना किया। पुलिस द्वारा शव का पंचायतनामा भरकर पोस्टमार्टम हेतु भेज दिया गया। वहीं ट्रैक्टर चालक सट्टर मौके से ही फरार है। जिसका पुलिस द्वारा खोजबीन किया जा रहा है।

मौत के बाद धरना देते परिजन।

केबी कॉलेज से निकाली गई यातायात जागरूकता रैली

रैली को एसपी ने किया रवाना

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। केबीपीजी कालेज में पुलिस अधीक्षक द्वारा यातायात जागरूकता अभियान कार्यक्रम में कालेज के अध्यापकों, छात्र/छात्राओं व एनसीसी के कैडेट्स को जागरूक किया गया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम प्रधानाचार्य केबी कालेज द्वारा पुलिस अधीक्षक को पुष्प गुच्छ व अंगवस्त्र प्रदान कर स्वागत किया गया। तत्पश्चात पुलिस अधीक्षक द्वारा दीप प्रज्ज्वलित कर कार्यक्रम का शुभारंभ किया गया।

यातायात जागरूकता सम्बन्ध में स्कूली छात्र/छात्राओं व एनसीसी कैडेट को यातायात नियमों की जानकारी देते हुए जागरूक किया गया। प्रोजेक्टर के माध्यम से यातायात सम्बन्धी नियमों से अवगत कराते हुए पालन करने के लिये जागरूक कर नियमों को पालन करने हेतु सभी को निर्देशित किया गया, वाहन चलाते समय हेलमेट पहनने व सीट बेल्ट लगाने की हिदायत भी दी गयी, यह भी बताया गया की यातायात नियमों का पालन करके ही वाहन दुर्घटनाओ को रोका जा सकता है तथा उसमें कमी लायी जा सकती है। ई-चलान ऐप, मैप माई-इंडिया ऐप सहित पुलिस के विभिन्न हेल्पलाइन नम्बरों के बारें में जागरुक करते हुए पुलिस कार्य प्रणाली के बारें में जानकारी दी गयी। कार्यक्रम में कालेज के छात्र/छात्राओं व एनसीसी कैडेट्स द्वारा पूछे गए प्रश्नों का पुलिस अधीक्षक द्वारा समुचित प्रत्युत्तर देते हुए उत्साहवर्धन भी किया गया।

जागरूकता अभियान को प्रभावी बनाये जाने हेतु स्कूली छात्र/छात्राओं एवं एनसीसी कैडेट द्वारा यातायात जागरूकता रैली को पुलिस अधीक्षक द्वारा प्रधानाचार्य केबी कालेज के साथ हरी झण्डी दिखा कर रवाना किया गया। इस कार्यक्रम के अवसर पर अपर पुलिस अधीक्षक नगर श्रीकांत, अन्य अधिकारी, कर्मचारीगण मौजूद रहे।

वन विभाग की जमीन पर अवैध कब्जा अधिकारी नहीं ले रहे संज्ञान

जनसंदेश न्यूज

राजगढ़। सुकृत वन रेंज में तैनात वन विभाग के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के काले कारनामे का चिट्ठा खुलकर सामने आ रहा है,जहां वृक्षारोपण के नाम पर लाखों रुपए हजम कर लिया गया और लक्ष्य के सापेक्ष महज खानापूर्ति कर इति श्री कर लिया गया। वहीं शासन को फर्जी रिपोर्ट भेजकर अब तक गुमराह किया जा रहा है। जबकि सुकृत वन रेंज के खोराडीह कंपार्टमेंट संख्या 5 व 8 महादेवडीह मे सैकड़ों एकड़ भूमि पर खेती हो रही है जहां पेड़ों के नामोनिशान तक नहीं हैं।

वहीं वन कर्मियों की मीलीभगत से लोगों ने वन भूमि पर अवैध ढंग से कब्जा कर खेती करना शुरू कर दिया है, क्षेत्र के इस महत्वपूर्ण एवं संवेदनशील मुद्दे पर स्थानीय क्षेत्र के भीटी गांव निवासी शशिकर पुत्र दीपनारायण ने वन विभाग के आलाधिकारियों का ध्यान आकृष्ट कराया है। सुकृत वन रेंज में व्याप्त भ्रष्टाचार एवं अधिकारियों के कूटरचना की शिकायत मुख्य वन संरक्षक, से किया है जिसमें आरोप लगाया गया है कि सुकृत वन रेंज में शासनादेश के विपरीत ओवरलैपिंग का कार्य कराया गया है तथा लगभग 80 हेक्टेयर भूमि पर रोपावनी दशार्या गया है जिसमें 24000 ट्रेंच व 16000 गड्ढे होना चाहिए बावजूद इसके लगभग 30% ही कार्य कराए गए और 88000 पौधों की जगह लगभग 20000 पौधे ही लगाकर इति श्री कर लिया गया। जबकि एक हेक्टेयर भूमि पर 1100 पौधे लगाए जाते हैं। वन विभाग के अधिकारी शासन की नीतियों के विपरीत वृक्षारोपण कार्य में भी घोर अनियमितता कर रहे है। जीपीएस पालीगान में भी शासन को गुमराह किया जा रहा है तथा एक ही जगह पर बार बार गड्ढों की खुदाई एवं वृक्षारोपण कार्य दिखाकर पैसा निकालने का गंभीर मामला शिकायत पत्र में दशार्या है। शशिकर ने मुख्य वन संरक्षक, के माध्यम से सुकृत वन रेंज में व्याप्त भ्रष्टाचार का पदार्फाश करने एवं संबंधित वन कर्मियों पर कार्रवाई करने की मांग किया है।

खाद उपलब्ध ना होने पर बिफरे कांग्रेसी, किया प्रदर्शन

आक्रोश

धान की खरीदारी व महंगाई के विरोध में निकाली भड़ास

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के आह्वान पर जिला कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष शिव कुमार पटेल के नेतृत्व में मिशन कंपाउड कार्यालय से जुलूस निकाल कर जिलाधिकारी कार्यालय पहुंच कर धरना प्रदर्शन किया। जिलाध्यक्ष ने कहा कि बीजेपी की केंद्र एवं उत्तर प्रदेश की सरकार हर मोर्चे पर विफल है न तो किसानों को खाद उपलब्ध करा पा रही है न तो नौजवानों को नौकरियां दे पा रही है न तो मजदूरों को काम दे पा रही है।

महंगाई से प्रदेश की जनता त्रस्त है। शहर कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष राजन पाठक ने कहा कि बीजेपी की सरकार जनता को गुमराह करके सत्ता पर काबिज हुई है। केंद्र व प्रदेश की बीजेपी सरकार किसान विरोधी सरकार है। किसान कांग्रेस के जिला अध्यक्ष संजय दुबे ने कहा कि क्रय केंद्रों न खाद मिल रही है और न ही धान की खरीदारी हो रही है। जिससे किसानों में मायूसी छायी है। किसान बीजेपी सरकार से त्रस्त हो चुका है। मीडिया प्रभारी छोटे खान ने कहा कि जब से बीजेपी की सरकार आई है महंगाई चरम पर है।

इस दौरान शिव शंकर चौबे, वरिष्ठ अधिवक्ता राम सिंह, सुधाकर, गुलाब पांडेय, जनार्दन पाठक मिश्रा ज्योति, रमेश प्रजापति, पप्पू, मोनू पटेल, शिव शंकर पांडेय, अमर दुबे, आयुषी शुक्ला, विधि सिंह, कुंज बिहारी उपाध्याय, राम पूजन सिंह, अंकुर श्रीवास्तव, श्यामधर उपाध्याय, विजय दुबे, मनीष सिंह, अनुज मिश्रा आदि लोग मौजूद रहे।

पैदल मार्च करते कांग्रेसी।

खाद के लिए प्रदर्शन करते कांग्रेसी।

खाद के अभाव में बर्बाद हो रही है किसानों की खेती

चील्ह। विकास खंड कोन के मुजेहरा गाँव स्थित साधन सहकारी समिति पर कोन मंडल के कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने डीएपी खाद की अनुपलब्धता को लेकर के गुरुवार को साधन सहकारी समिति के सामने धरना प्रदर्शन किया। प्रदर्शन के दौरान कांग्रेस कार्यकर्ता सरकार विरोधी नारा लगा रहे थे और डीएपी खाद बीज तत्काल उपलब्ध कराने की मांग किया। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता राजधर दुबे ने कहा सरकार शास्त्री सेतु के जर्जर होने पर बड़े वाहनों के लिए बंद का हवाला देकर के कोन ब्लॉक के किसानों का शोषण कर रही है। उन्हें बीज खाद उपलब्ध नहीं हो पा रहा है इसलिए उनकी खेती समय से न होने के कारण बर्बाद हो रही है। प्रदर्शन के दौरान अशोक कुमार गुप्ता, मुकेश सिंह, हरि शंकर दुबे, सरजू, लालमणि सिंह, हरिशंकर यादव, रामाश्रय सहित भारी संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं व किसान उपस्थित रहे।

निरीक्षण में गायब मिले केन्द्र प्रभारी स्पष्टीकरण का निर्देश

नाराजगी

एडीएम वि0/रा0 ने धान क्रय केन्द्रों का किया निरीक्षण

जनसंदेश न्यूज

मीरजापुर। जिलाधिकारी दिव्या मित्तल के निर्देश के क्रम में अपर जिलाधिकारी वि0/रा0 शिव प्रताप शुक्ला ने तहसील चुनार क्षेत्रान्तर्गत धान क्रय केन्द्रों का निरीक्षण किया गया। अपर जिलाधिकारी ने मण्डी समिति क्रय केन्द्र अहरौरा निरीक्षण के समय केन्द्र प्रभारी सुधाकर सिंह उपस्थित रहें। यहाँ पर 242 किसानों द्वारा सम्पर्क किया गया है, जिसमें से 08 कृषकों से 380.80 कु० धान की खरीद की गयी है, किन्तु अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है, जिसके लिए केन्द्र प्रभारी को कड़े निर्देश दिए जाते है कि शुक्रवार तक सभी कृषकों के खरीद का भुगतान करके आख्या उपलब्ध करायें। पी०सी०एफ० क्रय केन्द्र मण्डी समिति अहरौरा निरीक्षण के समय केन्द्र प्रभारी दिनेश सिंह अनुपस्थित पाये गये। केन्द्र पर उपस्थित उनके सहयोगी द्वारा बताया गया कि अभी तक 183 किसानों द्वारा सम्पर्क किया गया है, जिसमें 02 किसानों से 153.60 कु० खरीद की गयी है। सहायक आयुक्त एवं सहायक निबन्धक, सहकारिता, को निर्देशित किया गया कि केन्द्र प्रभारी का स्पष्टीकरण प्राप्त कर शुक्रवार को सायं तक उपलब्ध करायें। विपणन शाखा क्रय केन्द्र द्वितीय व चतुर्थ अहरौरा निरीक्षण के समय केन्द्र प्रभारी श्वेता पाण्डेय उपस्थित रहीं। यहाँ पर अभी तक 564 किसानों द्वारा सम्पर्क किया गया है, जिसमें केन्द्र द्वितीय पर 10 किसानों द्वारा 568 कु0 व चतुर्थ केन्द्र पर 01 किसान से 74 कु0 की खरीद की गयी है। द्वितीय केन्द्र पर 10 किसानों में से 09 किसानों का भुगतान किया जा चुका है। अन्य आवश्यक व्यवस्थाएं समुचित पाई गई। एफ0सी0आई0 क्रय केन्द्र मण्डी समिति अहरौरा निरीक्षण के समय केन्द्र प्रभारी आलोक राज शर्मा उपस्थित रहे। यहाँ पर अभी तक 285 किसानों द्वारा सम्पर्क किया गया है, जिसमें से 03 किसानों से 152 कु० धान की खरीद की गयी है, किन्तु अभी तक भुगतान नहीं किया जा सका है, जिसके लिए केन्द्र प्रभारी को कड़े निर्देश दिए जाते हैं कि कल तक भुगतान करना सुनिश्चित करेंगे। मण्डी समिति परिसर में काफी गंदगी पाई गई। सचिव, कृषि उत्पादन मण्डी समिति, अहरौरा को निर्देशित किया जाता है कि साफ-सफाई तत्काल कराना सुनिश्चित करें। भविष्य में निरीक्षण के समय गंदगी पाये जाने पर आपका उत्तरदायित्व निर्धारित किया जायेगा।

क्रय केद्र का निरीक्षण करते एडीएम वित्त।

एनजीटी की टीम ने दूसरे दिन भी की खनन पट्टा स्थलों की जांच

खान अधिकारी भी नहीं बता पाये स्वामी व निर्धारित क्षेत्र का नाम

अहरौरा। लखनऊ से आई एनजीटी की टीम ने दूसरे दिन भी भगौती देई, सोनपुर, बियाहुर एवं लालपुर के खनन पट्टा स्थलों पर जाकर खनन एवं पर्यावरण प्रदूषण सहित अवैध खनन को देखा। खनन पट्टा स्थलों पर पहुंचे अधिकारियों की टीम ने खनन स्थलों एवं पर्यावरण प्रदूषण की जांच को कलम वद्ध किया। गुरुवार को राष्ट्रीय हरित अधिकरण की टीम लगभग 12 बजे भगौती देई पहुंच गई। भगौती देई गांव के दक्षिण तरफ स्थित पहाड़ों पर दिए गए खनन पट्टा स्थलों को देखा और पाया कि पहाड़ों में काफी गहरे - गहरे तालाब जैसे गड्ढे हो गए हैं। देखने से लग रहा है कि मानकों को दरकिनार कर खनन किए गए हैं। वहीं खनन किसने कराया है किसका खनन पट्टा है। इसका नाम एवं बोर्ड मौके पर नहीं मिला। मौके पर मौजूद खान अधिकारी भी खनन पट्टा स्थल के विषय में टीम को जानकारी नहीं दे पाए। शिकायतकर्ता बार-बार इस बात पर जोर देता रहा कि यह खनन पट्टा स्थान किसका है। इसको सार्वजनिक रूप से बताया जाए तो खान अधिकारी नहीं बता पाए। भगौतीदेई से टीम निकल कर बियाहुर गांव से होकर लालपुर क्षेत्र एवं सोनपुर के उत्तर प्रदेश तरफ स्थित कई खनन पट्टा स्थलों पर गई वहां भी पहाड़ों में बड़े-बड़े तालाब की तरह एवं कुआं नुमा गड्ढे देखें। इसके साथ ही शिकायतकर्ता ने ग्रामीण क्षेत्रों में पेड़ों व फसलों पर जमी धूल को भी दिखाया और मांग किया कि पर्यावरण प्रदूषण की जांच करने के लिए प्लांटों को चालू करा कर एवं ब्लास्टिंग करा कर देखा जाए। तब ही प्रदूषण की स्थिति का पता चल पाएगा। शिकायतकर्ता ने टीम को बताया कि एनजीटी की टीम आने की सूचना पर एक दिन पूर्व से ही सारे खनन कार्य ब्लास्टिंग एवं क्रेशर प्लांट बंद कर दिए गए हैं। इसके साथ ही पहाड़ों में पहाड़ी रास्तों पर क्रेशर प्लांटों सहित अहरौरा जमुई मार्ग पर रोशनहर से लेकर भगौतीदेई तक जहां काफी धूल उड़ता है। वहां पानी का लगातार छिड़काव किया जा रहा है। जिससे धूल की स्थिति काफी कम हुई है।

खनन क्षेत्र की जांच करते एनजीटी के अधिकारी

28 नवंबर से होगा पंद्रह दिवसीय गड़बड़ा मेले का शुभारंभ

सुरक्षा के लिये मांगी गयी फोर्स

हलिया। स्थानीय विकास खंड के गड़बड़ा शीतला धाम में 15 दिवसीय मेले की तैयारी में प्रशासनिक अमला जुट गया है दश दिन पूर्व ज्वाइंट मजिस्ट्रेट, एसडीएम लालगंज नवनीत सेहरा द्वारा क्षतिग्रस्त पुल की रिपोर्ट के बाद कार्यदाई संस्था द्वारा मरम्मत का कार्य शुरू करा दिया गया है। एडीओ पंचायत रूपेश श्रीवास्तव ने बताया कि अभियान के तहत 25 सफाई कर्मियों को 2 दिन से साफ सफाई के लिए मेला परिसर में लगा दिया गया है तथा स्थानीय दुकानदारों से कूड़ा दान रखने के लिए कहा गया है।

ग्राम पंचायत में नियुक्त सचिव कौशल गिरी को सेवटी नदी में स्नान करने के बाद महिलाओं को पर्दा बदलने के लिये अस्थाई व्यवस्था करने के लिए कहा गया है। एडीओ पंचायत ने बताया कि 27 नवंबर से 12 दिसंबर तक 63 सफाई कर्मियों को तीन शिफ्ट में प्रतिदिन मेले के दिन ड्यूटी करने के लिए लगा दिया गया है। प्रभारी निरीक्षक संजीव कुमार ने बताया कि सुरक्षा के मद्देनजर जिले से दो एसो, तीस महिला कांस्टेबल, बारह उपनिरीक्षक, पच्चीस मुख्य आरक्षी, साठ आरक्षी, बारह यातायात आरक्षी, दो प्लाटून पीएसी, एक कंट्रोल रूम टीम के अलावा फायर ब्रिगेड की ड्यूटी शनिवार से ही जिले से मांग की गयी है। सेवटी नदी का किनारे शीतला माता के महात्म व प्रसिद्ध की चर्चा दूर दराज मध्य प्रदेश, सोनभद्र, प्रयागराज, वाराणसी, बिहार, झारखंड के साथ मुंबई आदि प्रांतों से इस मेले में लाखों की तादात में भक्तों का आगमन होता है। जिसमें अगहन माष के पहले सोमवार 28 नवंबर को गवईं, 5 दिसंबर को शहरहवा मेला व 12 दिसंबर को गवयी मेला सुनिश्चित है। परन्तु अभी तक रात्रि निवास के लिये व अलाव जलाने तथा लाइट की ब्यवस्था नदारत है। शौचालय व स्नान करने वाली सेवटी नदी की टूटी सीढी से भक्तो को स्नान करना होगा। ऐसे में लोगों को रात्रि निवास में परेशानी होगी। आधी अधूरी व्यवस्था के साथ ही मेले का शुभारंभ होना दिख रहा है। स्थानीय लोगों ने समय से पूर्व अलाव जलाने तथा यात्री सेट की व्यवस्था कराए जाने की जिलाधिकारी से मांग की है।

साढ़े तीन करोड़ रुपयों से बदलेगी नगर की तस्वीर

बोले मनोज जायसवाल

नगर के विकास को लेकर छब्बीस कार्यों का नपाध्यक्ष ने किया शिलान्यास

जनसंदेश टाइम्स

मीरजापुर। नपाध्यक्ष मनोज जायसवाल ने गुरुवार की सुबह नगर के सिटी क्लब स्थित प्रेक्षा गृह पहुँचे। जहां नपाध्यक्ष ने नगर के विकास के लिये 15वे वित्त योजनान्तर्गत छ्ब्बीस कार्यो का फीता काटकर शिलान्यास किया। बतादें तमामं भाजपा कार्यकर्ताओं,सभासदों एवं अधिकारियों की मौजूदगी में नगर के विभिन्न वार्डो में विकास कार्यो को अमलीजामा पहनाने के लिये शिलान्यास किया।

नगर के कई वार्डो में क्षतिग्रस्त गलियों, सड़कों और नालियों के मरम्मत को लेकर वार्ड की जनता ने सभासदों के माध्यम से नपाध्यक्ष से अपील की थी। नगर के इन वार्डो में सीसी सड़क निर्माण, इंटरलॉकिंग, नाली के ढ़क्कन, रिटेनिंगवाल, नाली मरम्मत जैसे कार्यों को कराया जायेगा। शिलान्यास के बाद पांच से छः दिनों के भीतर इन जगहों पर कार्य प्रारंभ करा दिया जायेगा। जिसे लगभग दो महीनों के भीतर पूरा भी कर लिया जायेगा। इस मौके पर नपाध्यक्ष ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के नेतृत्व में सूबे के सभी शहरों में विकास को गति मिली है। सड़कों का जाल बिछाया जा रहा है। इसके साथ नये पुल-पुलिया सहित कई विकास कार्यों को बड़ी तेजी से कराया जा रहा है। उन्ही के मार्गदर्शन में नगर के विकास को गति देने के लिये आज छब्बीस कार्यों का शिलान्यास किया गया है। 15वें वित्त से नगर के विभिन्न वार्डों में सीसी रोड, नाली एवं इंटरलॉकिंग सहित अन्य का निर्माण कार्य कराया जायेगा। अधिकारियों को दो महीनों के भीतर कार्य पूरा करवाने के निर्देश दिये गये है। इन कार्यों के होने से वार्ड के लोगों को हो रही असुविधा से मुक्ति मिलेगी। इस मौके पर पूर्व जिला अध्यक्ष उत्तर कुमार मौर्य, दिनेश तिवारी, मनीष गुप्ता, उमेश गुप्ता, आशुकान्त चुनाहे, महेश वर्मा, बाबू राम गुप्ता, प्रीतम केशरवानी, विनय सिंह, सभासद राजेश सोनकर, शिव कुमार पटेल, रत्नेश श्रीवास्तव, सूर्यनारायण मौर्या, सुरेश मौर्या, जाहिद अख्तर, नरेश जायसवाल, गुंजा गुप्ता, सुमन बिन्द, सुमन यादव, राजेन्द्र प्रजापति, सौरभ मोदनवाल, शिवम अग्रहरी आदि लोग उपस्थित रहे।

छब्बीस कार्यों का शिलान्यास करते नपाध्यक्ष।

संक्षेप

पत्र विक्रेताओं ने किया प्रदर्शन

प्रदर्शन करते वेंडर।

मीरजापुर। नेशनल हॉकर फेडरेशन, विंध्य हॉकर यूनियन मिजार्पुर के द्वारा गुरुवार को उजारीकरण कारवाई विरोधी दिवस पर विशाल धरना प्रदर्शन नगर पालिका में किया गया और तथा तमाम पथ विक्रेताओं, घरेलू कामगार, निर्माण श्रमिक, बीड़ी मजदूर, एवम अन्य असंगठित क्षेत्र के मजदूर की समस्या एवम मुकेरी बाजार मार्केट की उजाड़ी करण के विरोध में तमाम मार्केट के पथ विक्रेता को लेकर टाउन वेंडिग कमेटी के अध्यक्ष को ज्ञापन दिया गया। कार्यक्रम में मुख्य रूप मनीष सिंह एड, स्मृति गुप्ता एड, धीरज पांडेय, रीता सिंह, मयंक पांडेय, अजीत शुक्ला, फिरोज भाई, गुड्डू, कन्हैया सोनकर आदि तमाम पथ विक्रेता एवम असंगठित क्षेत्र के मजदूर उपस्थिति रहे।

सीडीओ के निर्देश के बाद भी नहीं खुला शौचालय का ताला

लालगंज। स्थानीय तहसील परिसर में विधायक निधि से बना सुलभ शौचालय बनकर तो तैयार हो गया है किंतु संचालित नहीं हो पा रहा है। जिससे लोगों को मजबूर होकर शौच के लिए बाहर जाना पड़ रहा है। पूर्व तहसील दिवस में पहुंची मुख्य विकास अधिकारी श्री लक्ष्मी बीएस निरीक्षण के दौरान शौचालय को चालू कराने का कार्यदायी संस्था को निर्देश देने के बावजूद आज तक शौचालय संचालित नहीं कराया गया। तहसील दिवस में पहुंची मुख्य विकास अधिकारी श्री लक्ष्मी बीएस तहसील दिवस के बाद तहसील परिसर का निरीक्षण करते हुए शौचालय का भी निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने कार्यदाई संस्था को शौचालय चालू कराने का सख्त निर्देश दिया गया किंतु आज तक शौचालय संचालित नहीं कराया गया जिससे परेशानी बनी हुई है। संचालित ना होने से जहां एक तरफ अधिवक्ताओं एवं बादकारियो को परेशानी बनी हुई है। वहीं सरकार की स्वच्छता अभियान के तहत छवि धूमिल हो रही है। अधिवक्ताओं ने मांग की है कि तहसील परिसर में स्थित शौचालय चालू कराया जाए।

शनिवार को घोषित किया गया विशेष अभियान दिवस

मीरजापुर। उप जिला निर्वाचन अधिकारी शिव प्रताप शुक्ल ने एक विज्ञप्ति के माध्यम से सर्वसाधारण को जानकारी देते हुए बताया है कि भारत निर्वाचन आयोग के दिशा निर्देश के क्रम में निर्वाचक नामावलियों का विशेष संक्षिप्त पुनरीक्षण अर्हता तिथि 01.01.2023 के आधार पर निर्वाचक नामावलियों में अपना नाम दर्ज कराने, मृतक, शिफ्टेड मतदाताओं का नाम मतदाता सूची से हटाये जाने एवं किसी भी प्रकार की प्रविष्टि में संशोधन हेतु फार्म-6, 7, 8 सम्मिलित किये जाने हेतु 26 नवम्बर, 2022 दिन शनिवार को विशेष अभियान दिवस घोषित किया गया है। उक्त दिवस पर समस्त बूथ लेविल अधिकारी समुचित फार्मों के साथ अपने-अपने बूथों पर उपस्थित रहेंगे। सभी अर्ह नागरिकों से अपील की जाती है कि वे कृपया उपरोक्त दिवस पर अपने बूथ पर जाकर मतदाता सूची का निरीक्षण कर लें, यदि किसी अर्ह मतदाता जो 01 जनवरी, 2023 को 18 वर्ष की आयु पूरी कर रहा हो अथवा उससे अधिक आयु का हो परन्तु उसका नाम मतदाता सूची में शामिल न हो तो वह उपरोक्त दिवस पर अपने से सम्बन्धित मतदेय स्थल पर उपस्थित होकर प्रारूप-6 में आवेदन कर के अपना नाम दर्ज करवा सकता है।

फोटो बाइक का, चालान कट गया स्कूटी का

मीरजापुर। अपने कारनामों से मशहूर यातायात पुलिस का एक नया कारनामा सामने आया है, जहां पर यातायात पुलिस ने फोटो बाइक का खींचा, लेकिन चालान स्कूटी का कर दिया। मामला जब संज्ञान में आया तो अब इसको लेकर जांच की बात कही जा रही है। जनपद के लालडिग्गी निवासी रीगन जायसवाल ने बताया कि उनकी बहन के नाम से एक स्कूटी खरीदी गई है, जो कि खराब है और घर में पड़ी हुई है। ऐसे में उनके फोन नंबर पर यातायात नियमों का उल्लंघन करने पर एक हजार रुपये का जुमार्ना लगाने का मैसेज आया। मैसेज आने के बाद जब उसे खोल कर देखा गया तो उसमें बाइक की फोटो लगी हुई थी, जहां चालान स्कूटी का किया गया था। इस मामले में जब यातायात प्रभारी से बात किया गया तो यातायात प्रभारी का कहना था कि कभी-कभी नंबर प्लेट गलत होने की वजह से ऐसा हो जाता है या फिर मैनुअली टाइपिंग मिस्टेक में ऐसी चालान कट जाते हैं। ऐसे में अगर किसी का ऐसा चालान करता है तो वह इसको लेकर एक प्रार्थना पत्र यातायात कार्यालय में दे सकता है, जहां जांच के बाद चालान को कैंसिल भी किया जाता है।

दुष्कर्म करने वाला आरोपी गिरफ्तार

मीरजापुर। थाना को0देहात, मीरजापुर पर 26 जुलाई 2022 को थाना को0देहात क्षेत्रांतर्गत निवासी एक व्यक्ति द्वारा नामजद अभियुक्त के विरूद्ध अपनी नाबालिग पुत्री को बहला फुसलाकर भगाने के सम्बन्ध में लिखित तहरीर दी गई। जिसके आधार पर थाना को0 देहात पर धारा 363,504,506 भादवि पंजीकृत कर विवेचना प्रारम्भ की गई। पुलिस अधीक्षक द्वारा नाबालिग के साथ हुई उक्त घटना को गंभीरता पूर्वक लेते हुए अभियुक्त की यथाशीघ्र गिरफ्तारी करने हेतु प्रभारी निरीक्षक को0देहात को निर्देश दिए गए। उक्त निर्देश के अनुक्रम में गुरूवार को उ0नि0 काशी सिंह मय पुलिस बल द्वारा थाना को0देहात पर पंजीकृत मुकदमा उपरोक्त से सम्बन्धित अभियुक्त सूर्या लुल्ली उर्फ छबीराम पुत्र रमेश हरिजन निवासी तेलठी थाना चील्ह मीरजापुर गिरफ्तार किया गया। पॉक्सो एक्ट में नियमानुसार अग्रिम विधिक कार्यवाही करते हुए जेल भेजा गया।

ड्रमंडगंज घाटी में पलटा सीमेंट लदा बल्कर ट्रक, चालक घायल

हलिया। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के मीरजापुर रीवा राष्ट्रीय राजमार्ग स्थित ड्रमंडगंज घाटी के लहुरियादह गांव में बुधवार की देर रात पीछे ओवर टेक कर रहे ट्रक और बोलेरो को बचाने के चक्कर सीमेंट लादकर रीवा से वाराणसी जा रहा बल्कर ट्रक अनियंत्रित होकर पचास फीट नीचे खाई में पलट गया जिसमें सवार चालक सोने लाल यादव पुत्र राम रूद्र यादव 23 वर्ष निवासी कुसुमहट थाना ताला जिला सतना मध्यप्रदेश घायल हो गया। राहगीरों की सूचना पर पहुंचे एसआई कमलेश यादव ने पुलिस कर्मियों की मदद से घायल चालक को खाई से बाहर निकलवाया संयोग ठीक था कि हादसे में चालक के बांए आंख के नीचे और पैर में मामूली चोटें आई। एस आई कमलेश यादव ने बताया कि हादसे में घायल चालक का प्राथमिक उपचार करवाया गया है। घटना की सूचना वाहन मालिक को दे दी गई है।

विक्षिप्त युवक का मिला शव, ग्रामीणों में सनसनी

हलिया। थाना क्षेत्र के दुर्जनीपुर गांव के ओवरब्रिज के पास गुरुवार को संदिग्ध परिस्थितियों में विक्षिप्त अज्ञात व्यक्ति का शव मिलने से हड़कंप मच गया। घटना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस शव को कब्जे में लेकर अग्रिम कार्रवाई में जुटी हुई है। ड्रमंडगंज थाना क्षेत्र के दुर्जनीपुर गांव में ओवरब्रिज के पास एक विक्षिप्त व्यक्ति जोकि कई दिनों से घूम रहा था, जहां गंभीर बीमारी से ग्रसित था। ऐसे में अज्ञात व्यक्ति का शव गुरुवार को दुर्जनीपुर ओवर ब्रिज के पास मिला। घटना की जानकारी आस-पास के लोगों ने ग्राम प्रधान को दिया। मौके पर पहुंचे ग्राम प्रधान ने इसकी जानकारी पुलिस को दी। सूचना के बाद मौके पर पहुंचे उपनिरीक्षक कमलेश सिंह यादव ने शव को कब्जे में लेकर शिनाख्त कराने की कार्रवाई में जुट गए। लेकिन काफी मशक्कत के बाद भी विक्षिप्त युवक का शिनाख्त नहीं हो पाया था।

पखवाड़े के अंदर प्रेमी के साथ फरार हुई विवाहिता

हलिया। लालगंज थाना क्षेत्र के अतरैला राजा गांव निवासी राम उजागिर ने गुरूवार को हलिया थाने में पत्नी के भागने के आरोप में एक व्यक्ति के विरुद्ध नाम जद तहरीर दी है। दी गयी तहरीर में आरोप लगाया है कि देवरी मनिगढ़ा निवासी अदालत की पुत्री सीमा के साथ हिंदू रीति रिवाज से 4 नवंबर को विंध्याचल माता के दरबार में दोनों पक्षों के बीच में शादी संपन्न हुई। इसके बाद 17 नवंबर को हलिया थाना क्षेत्र के अहुँगी कला गांव निवासी एक व्यक्ति घर पर जा गया और भोर में मेरी पत्नी को भगा ले गया साथ में जेवरात भी ले कर चली गई है। जिसकी तहरीर हलिया थाने में देकर कार्रवाई की मांग की है।

सीडीओ ने किया आकस्मिक निरीक्षण

जिगना। विकास खंड छानबे में मुख्य विकास अधिकारी श्री लक्ष्मी बीएस ने ग्रामसभा बजटा में आकस्मिक निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पंचायत भवन, अमृत सरोवर के तहत तालाब, आदि का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान पंचायत भवन में टूटे हुए टाइल्स को देखा वही पंचायत भवन के पीछे मानक के अनुरूप सोख्ता गड्ढा नहीं बनाए जाने पर ग्राम प्रधान को मानक के अनुरूप बनाने के निर्देश दिए। एक तालाब में बगैर पट्टे के मछली पालन हो रहा है। ग्राम सभा बजटा के मजरे में एक स्ट्रीट लाइट खराब होने पर नाराजगी व्यक्त की। तत्काल सभी स्ट्रीट लाइट सही कराने के निर्देश दिए। निरीक्षण के दौरान खंड विकास अधिकारी हरिओम गुप्ता, ग्राम विकास अधिकारी उत्तम यादव ग्राम प्रधान प्रतिनिधि अनिल कुमार बिंद आदि लोग मौजूद रहे।

स्पोर्ट्स

फीफा वर्ल्ड कप में बेल्जियम और कनाडा के बीच देर रात मैच खेला गया। इस मैच में बेल्जियम को 1-0 के अंतर से हरा दिया। ग्रुप स्टेज में यह दोनों टीमों का पहला मैच था। वर्ल्ड कप में 36 सालों के बाद वापसी कर रहे कनाडा के सपनों पर बेल्जियम ने पानी फेर दिया। इस जीत के बाद बेल्जियम की टीम पॉइंट्स टेबल पर पहले स्थान पर चली गई है।

वनडे वर्ल्ड कप की तैयारी शुरू करेगी टीम इंडिया, कीवी टीम के खिलाफ धवन होंगे कप्तान

भारतीय क्रिकेट टीम न्यूजीलैंड के विरुद्ध आज से शुरू होने वाली तीन वनडे मैचों की सीरीज से अगले साल होने वाले 50 ओवरों के विश्व कप की तैयारियों की भी शुरूआत करेगी

आकलैंड। टी-20 प्रारूप में पुराना रवैया अपनाने के कारण आलोचना झेल रही भारतीय क्रिकेट टीम न्यूजीलैंड के विरुद्ध शुक्रवार से शुरू होने वाली तीन वनडे मैचों की सीरीज से अगले साल होने वाले 50 ओवरों के विश्व कप की तैयारियों की भी शुरूआत करेगी। भारत में होने वाले वनडे विश्व कप के शुरू होने में अब केवल 11 महीने का समय बचा है तथा शुक्रवार से शुरू होने वाली सीरीज से भारत के मध्यक्रम और गेंदबाजी आक्रमण को लेकर हर किसी को शुरूआती आइडिया मिल जाएगा।

कई सीनियर खिलाड़ी टीम में शामिल नहीं : न्यूजीलैंड के विरुद्ध इस सीरीज के लिए भारत के पांच सीनियर खिलाड़ी कप्तान रोहित शर्मा, करिश्माई बल्लेबाज विराट कोहली, टीम प्रबंधन के प्रिय केएल राहुल, तेज गेंदबाजी के अगुआ जसप्रीत बुमराह और वनडे में नंबर एक आलराउंडर रवींद्र जडेजा शामिल नहीं है। ऐसे में कुछ हद तक यह पता चल जाएगा टीम किस दिशा में आगे बढ़ रही है। हालांकि टीम में उनकी वापसी के बाद टीम संयोजन में काफी बदलाव देखने को मिलेगा।

भारत के पास कई विकल्प : शुभमन गिल ने वनडे में सलामी बल्लेबाज के रूप में खुद को साबित किया। उन्होंने अभी तक जितने भी वनडे मैच खेले हैं उनमें उनका औसत 57 रन प्रति पारी से अधिक और स्ट्राइक रेट 100 से अधिक है। मध्यक्रम में भारत के पास श्रेयस अय्यर भी हैं जिन्होंने शार्ट पिच गेंदों को खेलने में परेशानी होने के बावजूद लगातार अच्छा प्रदर्शन किया है। सूर्यकुमार यादव इस समय बेहतरीन फार्म में चल रहे हैं और यदि वह फिट रहते हैं तो फिर उन्हें बाहर नहीं किया जा सकता है। संजू सैमसन को भी लंबे समय तक नजरअंदाज नहीं किया जा सकता है जबकि अपने आलराउंड खेल के कारण दीपक हुड्डा को भी बाहर करना सही नहीं होगा।

चाहर-शार्दुल को मिल सकता है जिम्मा : दीपक चाहर और शार्दुल ठाकुर को नई गेंद का जिम्मा सौंपा जा सकता है। यह दोनों निचले क्रम में बल्लेबाजी का विकल्प भी मुहैया कराएंगे। अर्शदीप सिंह तीसरे विकल्प हो सकते हैं लेकिन वह लगातार खेल रहे हैं और ऐसे में कुलदीप सेन या उमरान मलिक को मौका मिल सकता है। स्पिनरों में वाशिंगटन सुंदर को अंतिम एकादश में जगह मिलने की संभावना है। ईडन पार्क का मैदान छोटा है और ऐसे में धवन को इस पर विचार करना होगा कि वह अतिरिक्त तेज गेंदबाज के साथ खेलें या कुलदीप यादव के रूप में अतिरिक्त स्पिनर रखें।

न्यूजीलैंड में बदलाव की संभावना कम : न्यूजीलैंड की टीम लगभग वही रहने वाली है जिसने टी-20 सीरीज में हिस्सा लिया था। उसका गेंदबाजी आक्रमण काफी मजबूत है जिसमें स्विंग कराने में माहिर टिम साउथी, एडम मिल्ने, लाकी फर्ग्यूसन, मैट हेनरी और स्पिनर मिशेल सेंटनर शामिल हैं।

टीमें : भारत: शिखर धवन (कप्तान), शुभमन गिल, सूर्यकुमार यादव, श्रेयस अय्यर, रिषभ पंत (विकेटकीपर), संजू सैमसन (विकेटकीपर), दीपक हुड्डा, शाहबाज अहमद, वाशिंगटन सुंदर, कुलदीप यादव, युजवेंद्रा च्सह चहल, दीपक चाहर, अर्शदीप सिंह, शार्दुल ठाकुर, कुलदीप सेन, उमरान मलिक। ***न्यूजीलैंड:*** केन विलियमसन (कप्तान), फिन एलेन, डेविन कान्वे, टाम लैथम, डेरिल मिशेल, ग्लेन फिलिप्स, माइकल ब्रेसवेल, टिम साउथी, मैट हेनरी, एडम मिल्ने, जिमी नीशम, मिशेल सेंटनर, लाकी फर्ग्यूसन।

खाली हाथ आया था खाली हाथ जाना है, कप्तानी छीनने पर बोले शिखर धवन

भारत शुक्रवार को न्यूजीलैंड के खिलाफ तीन मैच की वनडे सीरीज का पहला मैच मैच खेलेगा। इस सीरीज के लिए भारतीय टीम की कप्तानी शिखर धवन करेंगे। वहीं, आइपीएल 2023 में शिखर पंजाब किंग्स के लिए कप्तानी करते हुए दिखाई देंगे। आइपीएल में 2014 में शिखर धवन को सनराइजर्स हैदराबाद ने कप्तान बनाया था, लेकिन आधे मैच के बाद ही उनसे कप्तानी छीन ली गई थी। पंजाब ने मयंक अग्रवाल को कप्तानी से हटाकर शिखर को कप्तान बनाया है। इएसपीएनक्रिक इन्फो ने एक कार्यक्रम में शिखर से कप्तानी को लेकर बातचीत की। मयंक अग्रवाल को पंजाब के कप्तान पद से हटाए जाने और उनको कप्तान बनाए जाने के सवाल पर शिखर ने मजेदार जवाब दिया। शिखर ने कहा, काम आते हैं और चले जाते हैं, कोई चिंता नहीं। हमने खाली हाथ आना है, खाली हाथ ही जाना है। ये सब तो यहीं रह जाना है। शिखर ने आगे कहा, ठीक है, मुझे इसे इस तरह या उस तरह से करना है, यह कहते हुए मैं खुद पर वह भार नहीं डालना चाहता।

कैमरुन-स्विटजरलैंड के बीच हुआ बराबरी का मुकाबला, सिर्फ एक गलती से हारी अफ्रीकी टीम

स्विटजरलैंड प्वाइंट्स टेबल में 3 अंकों के साल ग्रुप टॉपर बन गया

केमरन। फीफा वर्ल्ड कप 2022 का प्वाइंट्स टेबल देखिए। टूनार्मेंट के पांचवें दिन के पहले मैच के बाद ग्रुप जी का टेबल जो दिखाता है असलियत उससे अलग है। गुरुवार को पहला मैच स्विटजरलैंड और कैमरुन के बीच खेला गया। इस मैच के बाद स्विटजरलैंड प्वाइंट्स टेबल में 3 अंकों के साल ग्रुप टॉपर बन गया जबकि कैमरून की टीम बॉटम पर चौथे स्थान पर आ गई। यह सब सिर्फ एक गलती की वजह से हुआ।

कैमरुन ने स्विटजरलैंड के खिलाफ मुकाबले में सिर्फ एक गलती की। यह गलती सेकेंड हाफ में 48वें मिनट में हुई, अफ्रीकी टीम अपने गोल पोस्ट की रक्षा नहीं कर सके। स्विटजरलैंड के ब्रील एंबोलो ने मैच हुआ एकमात्र गोल करने में सफलता हासिल की। इस गोल ने हर तरह से बराबरी के साथ खेल रही कैमरुन की टीम को हरा दिया।

स्विटजरलैंड ने फीफा वर्ल्ड कप में ग्रुप जी के पहले मैच में कैमरुन को 1-0 से हराया। इस गोल के अलावा इस मैच में किसी भी पल ऐसा कुछ भी नहीं हुआ जो अफ्रीकी टीम को कमतर बता सके। कैमरुन ने इस मैच में खेल के हर डिपार्टमेंट में स्विटजरलैंड का बराबरी से मुकाबला किया। चाहे बॉल पजेशन हो या पास की सटीकता, कैमरुन ने हर तरह से यूरोपीय टीम के साथ बराबरी पर डील किया। स्विटजरलैंड का बॉल पजेशन 51 फीसदी रहा तो कैमरुन का 49 फीसदी। स्विटजरलैंड की पास एक्यूरेसी 84 मौके पर रही तो कैमरुन की 85 मौके पर। स्विटजरलैंड ने 3 शॉट टारगेट पर मारे तो कैमरुन ने 5 शॉट। अगर फाउल्स की बात करें तो इसमें भी दोनों टीमें बराबरी पर रही। दोनों टीमों के एक एक प्लेयर को येलो कार्ड दिखाया गया और दोनों ने एक एक मौके पर ऑफसाइड किया। स्विटजरलैंड ने 12 फाउल किए तो कैमरुन ने 10 फाउल। यानी खेल हर तरह से बराबरी का रहा। लेकिन नतीजा इसकी गवाही नहीं देता। बेहतरीन प्रदर्शन करके भी कैमरुन हार गया, जिससे वर्ल्ड कप में उसकी आगे की राह मुश्किल हो गई।

बांग्लादेश दौरे से पहले जिम में जमकर पसीना बहाते नजर आए विराट

नई दिल्ली। पत्नी अनुष्का शर्मा के साथ छुट्टियां मनाने के बाद विराट कोहली एक बार फिर जिम में पसीना बहा रहे हैं। बांग्लादेश दौरे से पहले अपने को फीट रखने के लिए विराट कोहली जिम में ट्रेनिंग कर रहें हैं। हाल ही भारत के पूर्व कप्तान विराट कोहली 20 दिनों के लिए परिवार के साथ उत्तराखंड की यात्रा पर गए हुए थे। स्टार भारतीय बल्लेबाज विराट कोहली को बांग्लादेश के खिलाफ भारत टीम में चुना गया है। कोहली बांग्लादेश में खेले जाने वाली वनडे और टेस्ट सीरीज के लिए भारतीय टीम का हिस्सा हैं। टीम के घोषणा होने के बाद भारत के पूर्व कप्तान पड़ोसी देश के दौरे पर जाने से पहले जिम में खूब पसीना बहा रहे हैं। बता दें कि विराट कोहली ने टी20आई विश्वकप में शानदार प्रदर्शन किया था। वह पूरे टूनार्मेंट में सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे थे। कोहली ने पाकिस्तान के खिलाफ टी20 विश्वकप में भारत को जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई थी। विराट के अलावा सूर्यकुमार ने भी शानदार पारियां खेली थीं।

लखनऊ सुपर जायंट्स से रिलीज होने के बाद मनीष पांडे ने बयां किया दर्द, पैसे बचाने के लिए किया बाहर

नई दिल्ली। कोच्चि में 23 दिसंबर को आईपीएल 2023 का मिनी ऑक्शन होगा। 15 नवंबर को ही सभी फ्रेंचाइजियों ने अपनी रिटेन और रिलीज लिस्ट बीसीसीआई को सौंप दी है। लखनऊ सुपर जायंट्स ने जेसन होल्डर और एविन लुईस और मनीष पांडे को रिलीज कर दिया। टीम से रिलीज किए जाने के बाद मनीष पांडे पहली बार अपना दर्द बयां किया है।

आइपीएल 2022 में लखनऊ सुपर जायंट्स के लिए ओपनिंग करने वाले मनीष पांडे ने स्पोर्ट्सकीडा से बात की। स्पोर्ट्सकीडा को दिए इंटरव्यू में पांडे ने कहा कि उनके और फ्रेंचाइजी के बीच इस बारे में कोई बातचीत नहीं हुई थी। वह फ्रेंचाइजी के फैसले से हैरान नहीं हैं। मनीष पांडे ने आगे कहा, मुझे कभी फोन नहीं आया। मुझे इसके बारे में उसी दिन पता चला जिस दिन रिलीज किए गए खिलाड़ियों की सूची जारी हुई, टीम और मेरे बीच कोई बातचीत नहीं हुई। खिलाड़ी के तौर पर आपको तैयार रहना होगा, क्योंकि आप ज्यादा गेम नहीं खेल रहे हैं। मैं एलएसजी के दृष्टिकोण से समझता हूं कि वे मुझे रिलीज करना चाहते थे और कुछ अन्य खिलाड़ियों के लिए पैसा बचाना चाहते थे।

पांडे ने फ्रेंचाइजी के लिए छह मैच खेले, जिसमें वह 110 की स्ट्राइक-रेट से केवल 88 रन ही बना सके। हालांकि टी ने 14 मैच में 9 जीत हासिल करते हुए प्ले-ऑफ तक पहुंची थी। वहां रायल चैलेंजर बैंगलोर से हार गई थी। हालांकि, लखनऊ ने चार विदेशी खिलाड़ियों को भी रिलीज किया है। इसमें विकेटकीपर-बल्लेबाज क्विंटन डी कॉक, स्टार ऑलराउंडर मार्कस स्टोइनिस, काइल मेयर्स और इंग्लैंड के तेज गेंदबाज मार्क वुड शामिल हैं।

भारत के लिए बोझ बने रिषभ पंत को टीम से बाहर कर इस खिलाड़ी को देना चाहिए मौका, पूर्व भारतीय क्रिकेटर की मांग

नई दिल्ली। रिषभ पंत को हाल के दिनों में जितने भी मैचों में खेलने का मौका मिला है ज्यादातर समय वो अच्छा प्रदर्शन कर पाने में असफल रहे हैं। पंत के खराब प्रदर्शन की वजह से ही उन्हें टी20 वर्ल्ड कप 2022 के शुरूआती मैचों में प्लेइंग इलेवन से बाहर रखा गया था। हालांकि आखिरी के दो मैच में उन्हें मौका जरूर दिया गया था, लेकिन उन्होंने वहां पर भी निराश ही किया था। टी20 वर्ल्ड कप के खत्म होने के बाद न्यूजीलैंड दौरे पर भी उन्हें टी20 सीरीज में आजमाया गया और ओपनिंग करने का मौका दिया गया, लेकिन दोनों ही मैचों में उन्होंने खराब प्रदर्शन करते हुए 6 रन और 11 रन की पारी खेली थी। रिषभ पंत के इस तरह के खराब प्रदर्शन के बाद उनकी आलोचना लगातार की जा रही है और इस बीच टीम इंडिया के पूर्व आलराउंडर रतिंदर सिंह सोढ़ी ने बताया कि वो भारतीय क्रिकेट टीम के लिए बड़ा बोझ बनते जा रहे हैं और उन्हें टीम से बाहर का रास्ता दिखा देना चाहिए। रतिंदर के मुताबिक भारतीय टीम मैनेजमेंट ने पंत को काफी सारे मौके दिए, लेकिन वो डिलीवर करने में फेल रहे और अब समय आ चुका है जब संजू सैमसन जैसे खिलाड़ी को आजमाया जाए। रतिंदर सिंह सोढ़ी ने कहा कि रिषभ पंत अब भारतीय टीम के लिए बोझ बनते जा रहे हैं और अब उनकी जगह संजू सैमसन जैसे खिलाड़ियों के आजमाना चाहिए। आपको चांस लेना ही पड़ेगा क्योंकि आप आइसीसी टूनार्मेंट या फिर वर्ल्ड कप से बाहर होना अफोर्ड नहीं कर सकते। अगर आप उन्हें और ज्यादा मौके देंगे तो परेशानी सामने आएगी और अब वक्त आ गया है।

40 मैच, 45 का औसत और 180 का स्ट्राइक रेट, सचमुच सूर्यकुमार यादव जैसा कोई नहीं- दिनेश कार्तिक

नई दिल्ली। दिनेश कार्तिक कितने जुझारू क्रिकेटर हैं वो किसी से छुपा नहीं है और उम्र के उस पड़ाव पर जहां क्रिकेटर अपने क्रिकेट करियर को विराम देने के बारे में सोचने लगते हैं तब उन्होंने भारतीय टी20 प्रारूप में वापसी की और भारत के लिए टी20 वर्ल्ड कप 2022 में खेला भी। हां, ये भी सही है कि टी20 वर्ल्ड कप में उनका प्रदर्शन वैसा नहीं था जिस प्रदर्शन के बूते वो भारतीय टीम में वापस आए थे। खैर अब टी20 वर्ल्ड कप 2022 खत्म हो चुका है और इस बार इस टूनार्मेंट जो सबसे बड़ा नाम उभरकर सामने आया वो सूर्यकुमार यादव रहे। खुद दिनेश कार्तिक भी सूर्यकुमार यादव के मुरीद हैं और उन्होंने 360 डिग्री के नाम से मशहूर इस बल्लेबाज की जमकर तारीफ की है। सूर्यकुमार यादव कितने खतरनाक बल्लेबाज हैं ये बात साबित हो गई है और वो 2022 में सबसे ज्यादा रन इस प्रारूप में बनाने के मामले में पहले नंबर पर हैं। टी20 वर्ल्ड कप 2022 में भारत के लिए दूसरे सबसे ज्यादा रन और ओवरआल इस टूनार्मेंट में वो सबसे ज्यादा रन बनाने वाले बल्लेबाज रहे। सूर्या ने इस टूनार्मेंट में तीन अर्धशतक के साथ 6 मैचों में 239 रन बनाए थे। दिनेश कार्तिक ने क्रिकबज के साथ बात करते हुए कहा कि सूर्यकुमार यादव अभूतपूर्व खिलाड़ी हैं और सिर्फ 40 मैचों में लगभग 45 की औसत के साथ 180 की स्ट्राइक रेट के साथ रन बनाना आसान नहीं है। आपको बता दें कि 32 साल के सूर्यकुमार यादव ने अब तक अपने क्रिकेट करियर में 42 मैचों की 40 पारियों में 2 शतक और 12 अर्धशतक की मदद से 1408 रन बनाए हैं।

जोफ्रा आर्चर ने 20 महीने बाद की घातक वापसी, पहले ओवर में ही हेलमेट पर मारा खतरनाक बाउंसर

इंग्लैंड ने इसी महीने टी20 वर्ल्ड कप ट्रॉफी जीती। वह 2019 वनडे वर्ल्ड कप की भी विजेता टीम है, यानी वह मौजूदा वक्त में दोहरा विश्व विजेता है। इन सबके बीच इंग्लिश टीम से एक ऐसा चैंपियन खिलाड़ी जुड़ने की तैयारी कर रहा है, जिसकी निगाहें 2024 में भारत में होने वाले वनडे वर्ल्ड कप की ट्रॉफी पर है। इस घातक खिलाड़ी ने दावा किया है कि इंग्लैंड को भारत में वर्ल्ड चैंपियन बनाना उसका सबसे बड़ा टारगेट है। इंग्लैंड के तेज गेंदबाज जोफ्रा आर्चर लंबे वक्त के बाद इंजरी से वापसी कर खुश हैं। उन्होंने वापसी करते ही अपने इरादे भी जाहिर कर दिए हैं। आर्चर को अगले साल भारत में अपने वर्ल्ड कप खिताब को डिफेंड करने का पूरा भरोसा है। उन्होंने अगले साल होने वाले वर्ल्ड कप के लिए इंग्लैंड टीम का हिस्सा बनने की उम्मीद जताई है। आर्चर मार्च 2021 में भारत में पांच मैचों की टी20 सीरीज के बाद से इंग्लैंड के लिए नहीं खेले हैं और तब से उनकी तीन सर्जरी हो चुकी हैं। इस साल की शुरूआत में आर्चर को पीठ के निचले हिस्से में स्ट्रेस फ्रैक्चर का पता चला, जिसके बाद वह पूरे इंग्लिश सीजन से बाहर बैठने को मजबूर हुए।

डेरिल मिशेल ने टीम इंडिया को बताया न्यूजीलैंड से बेहतर

भारत और न्यूजीलैंड के बीच तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज का पहला मैच 25 अक्टूबर को खेला जाएगा। इस मैच से पहले न्यूजीलैंड के हरफनमौला खिलाड़ी डेरिल मिशेल ने टीम इंडिया को न्यूजीलैंड से बेहतर बताया है। उन्होंने आईपीएल को लेकर कहा कि इंटरनेशनल स्तर पर आईपीएल का अनुभव बहुत काम आ रहा है। न्यूजीलैंड के बल्लेबाज मिशेल ने सूर्यकुमार यादव के नाबाद 111 रनों की पारी की सराहना करते हुए कहा कि मैंने टी20 क्रिकेट में अब तक की सबसे अच्छी पारी देखी है।

डेरिल मिशेल और सूर्यकुमार यादव ने लगभग 30 की उम्र में ही इंटरनेशनल क्रिकेट में खेलने का मौका मिला। दोनों ने 2021 में ही अपना डेब्यू किया था। डेरिल मिचेल ने सूयार्कुमार यादव को लेकर कहा, वह बहुत अच्छे हैं। वह विश्व स्तरीय बल्लेबाज हैं। आईपीएल में उन्हें गेंदबाजी करने का सौभाग्य मिला।

जापान ने फीफा वर्ल्ड कप 2022 में अपने अभियान की शानदार शुरूआत करते हुए जर्मनी को 2-1 से शिकस्त दी। वहीं टीम के फैन्स ने भी अपने एक कदम से सभी का दिल जीत लिया। मैच की समाप्ति के बाद जापानी फैन्स को स्टेडियम के कचरे को सफाई करते हुए देखा गया।

जामा मस्जिद में जा सकेंगी लड़कियां, एलजी के दखल के बाद वापस लिया गया प्रतिबंध का आदेश

राष्ट्रीय महिला आयोग ने जारी किया था नोटिस, स्वाति मालीवाल ने मस्जिद प्रबंधन के इस फैसले को तालिबानी करार दिया था, उपराज्यपाल की अपील पर इमाम बुखारी ने सहमति जताई और आदेश वापस लेने का फैसला किया

नई दिल्ली। दिल्ली की जामा मस्जिद में लड़कियों के प्रवेश पर लगाया गया प्रतिबंध वापस ले लिया गया है। अब जामा मस्जिद में लड़कियां प्रवेश कर सकेंगी। मामला तूल पकड़ने के बाद दिल्ली के उपराज्यपाल विनय कुमार सक्सेना ने इस पर हस्तक्षेप किया है। जानकारी के मुताबिक, उपराज्यपाल ने जामा मस्जिद के शाही इमाम बुखारी से बात की और लड़कियों का प्रवेश प्रतिबंधित करने वाले आदेश को वापस लेने का अनुरोध किया। उपराज्यपाल की अपील पर इमाम बुखारी ने सहमति जताई और आदेश वापस लेने का फैसला किया। साथ ही मस्जिद में आने वाले लोगों से मस्जिद की पवित्रता का सम्मान करने का अनुरोध किया है।

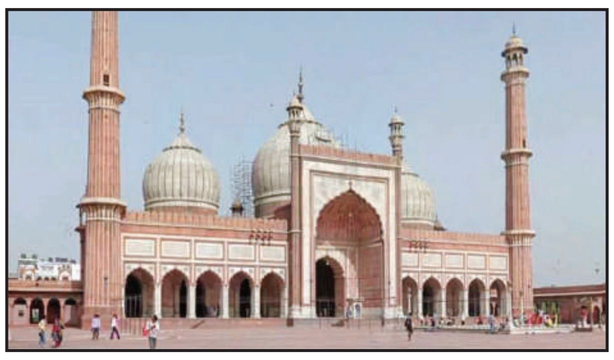

इससे पहले इस मामले को लेकर राष्ट्रीय महिला आयोग ने इस मामले को लेकर जामा मस्जिद प्रबंधन को नोटिस जारी किया था। साथ ही इस पूरे मामले पर स्पष्टीकरण मांगने के साथ उनसे महिलाओं के साथ किसी भी प्रकार का भेदभाव न करने को लेकर आग्रह किया था। आयोग की अध्यक्ष रेखा शर्मा ने कहा था कि हम इस मामले को स्वतः संज्ञान ले रहे हैं, यह गंभीर मामला है। जल्द ही इस पर आगे की कार्यवाई की जाएगी। वहीं, लड़कियों के मस्जिद में प्रवेश पर प्रतिबंध के फैसले को लेकर मस्जिद प्रबंधन की तरफ से अजीबोगरीब दलील दी गई थी। जामा मस्जिद प्रबंधन का कहना था कि महिलाओं का प्रवेश प्रतिबंधित नहीं है। केवल अकेली महिलाएं की एंट्री पर बैन है। क्योंकि इस धार्मिक स्थल पर लड़कियां अनुचित हरकतें करती हैं, वीडियो शूट करती हैं। इस सब को रोकने के लिए प्रतिबंध ने ये कदम उठाया है। मस्जिद प्रबंधन का कहना है कि परिवार या विवाहित जोड़ों पर कोई प्रतिबंध नहीं लगाया गया है। वहीं, दूसरी तरफ दिल्ली महिला आयोग ने भी जामा मस्जिद प्रबंधन के इस फैसले पर नाराजगी जाहिर की थी। डीसीडब्ल्यू चीफ स्वाति मालीवाल ने मस्जिद में लड़कियों के प्रवेश पर रोक के बाद जामा मस्जिद के इमाम को नोटिस जारी किया था। स्वाति मालीवाल ने कहा था कि जामा मस्जिद में महिलाओं की एंट्री रोकने का फैसला बिल्कुल गलत है। स्वाति मालीवाल ने मस्जिद प्रबंधन के इस फैसले को तालिबानी करार दिया था। उन्होंने कहा था कि जितना हक एक पुरुष को इबादत का है उतना ही एक महिला को भी। मैं जामा मस्जिद के इमाम को नोटिस जारी कर रही हूं। इस तरह महिलाओं की एंट्री बैन करने का अधिकार किसी को नहीं है। बताते चलें कि जामा मस्जिद के प्रवेश द्वारों से लड़कियों के प्रवेश पर प्रतिबंध के सूचना पट हटा लिए गए हैं। इमाम सैयद अहमद बुखारी ने की इसकी पुष्टि की है।

मैनपुरी लोकसभा उपचुनाव : सपा ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी को ज्ञापन सौंपकर की भाजपा की शिकायत

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव राजेंद्र चौधरी के नेतृत्व में सपा के प्रतिनिधि मंडल ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी से मिलकर ज्ञापन सौंपा। सपा प्रतिनिधिमंडल ने भाजपा सरकार पर पुलिस की ताकत का गलत इस्तेमाल का आरोप लगाया। सपा ने थानाध्यक्ष करहल, थानाध्यक्ष बरनाहल को तत्काल हटाए जाने की मांग। पार्टी ने छह पुलिस इंस्पेक्टर, 13 पुलिस सब इंस्पेक्टर और 100 से ज्यादा हेड कांस्टेबल को लेकर भी शिकायत कर हटाने की मांग की। पार्टी ने कहा कि सैकड़ों कॉन्स्टेबल भाजपा के लिए काम कर रहे हैं। पार्टी ने कहा कि पुलिस इंस्पेक्टर, सब इंस्पेक्टर और हेड कांस्टेबल सपा कार्यकर्ताओं पर दबाव बना रहे हैं। मुख्य निर्वाचन अधिकारी को ज्ञापन सौंपने के बाद समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय सचिव और मुख्य प्रवक्ता राजेंद्र चौधरी ने कहा कि पुलिस के लोग भाजपा के पक्ष में चुनाव प्रचार व मतदान का दबाव बना रहे हैं।

42 साल की श्वेता ने अपनी अदाओं से चलाई फैंस के दिलों पर छुरियां

नई दिल्ली। टीवी से लेकर भोजपुरी और बॉलीवुड फिल्मों तक का शानदार सफर तय करने वाली श्वेता तिवारी आज इंडस्ट्री का एक जाना माना नाम हैं। श्वेता ने भले ही अपने करियर की शुरुआत छोटे पर्दे से की थी, लेकिन आज उन्होंने इंडस्ट्री में अपनी खास पहचान बनाई है। श्वेता बिग बॉस के विनर की ट्रॉफी भी अपने नाम कर चुकी हैं। एक्टिंग के साथ श्वेता सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म भी खूब एक्टिव रहती हैं। वो अक्सर अपनी लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरें फैंस के साथ पोस्ट कर उन्हें सरप्राइज देती हैं। इस बीच एक्ट्रेस ने अपने हालिया फोटोशूट के जरिए फैंस को ट्रीट दिया है। श्वेता तिवारी ने हाल ही में अपना एक नया फोटोशूट कराया है। इस फोटोशूट की तस्वीरें श्वेता ने अपने इंस्टाग्राम अकाउंट पर शेयर की हैं। तस्वीरों के जरिए श्वेता अपनी सादगी से फैंस का दिल जीत रही हैं। तस्वीरों में आप देख सकते हैं कि श्वेता ने येलो कलर का लहंगा चोली पहना हुआ है। इस ड्रेस के साथ ही श्वेता ने मैचिंग ज्वैलरी भी कैरी की है। खुले बालों और लाइट मेकअप में श्वेता काफी खूबसूरत नजर आ रही हैं। फोटोशूट में श्वेता कभी दीवार के सहारे तो कभी खाली कमरे में पोज देती नजर आ रही हैं। हर तस्वीर में उनका पोज देने का अंदाज काफी कातिलाना नजर आ रहा है। *एजेंसी*

खास खबर

ओडिशा पुलिस को मिली बड़ी सफलता, मुठभेड़ में दो नक्सली ढेर

ओडिशा के बलांगीर जिले में पुलिस को नक्सलियों के खिलाफ बड़ी सफलता मिली है। यहां कांबिंग और सर्च ऑपरेशन के दौरान पुलिस की नक्सलियों से मुठभेड़ हो गई। इस मुठभेड़ में पुलिस ने दो नक्सलियों को मार गिराया। जानकारी के बाद पहुंचे बलांगीर एसपी और अन्य पुलिस अधिकारी मुठभेड़ स्थल पर मौजूद हैं। वहीं, कांबिंग और सर्च ऑपरेशन जारी है।

पत्नी को धक्का देकर बोला पति, तलाक-तलाक-तलाक, अब तू कभी नहीं आ सकेगी ससुराल

संभल। दहेज की मांग पूरी न होने पर मायके में रह रही विवाहिता को उसके पति ने ससुराल आकर तीन तलाक दे दिया। अपने मासूम बेटे के साथ पुलिस के पास पहुंची महिला ने पति समेत पांच ससुरालियों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया है। संभल कोतवाली पुलिस को दी गई तहरीर में मुहल्ला लक्ष्मण गंज निवासी बुशरा ने बताया कि दो साल पहले उसकी शादी मुरादाबाद शहर के रहने वाले सालिम पुत्र इस्लाम के साथ हुई थी। हैसियत के अनुसार शादी में सामान भी ससुराल वालों को दिया था, लेकिन वे उससे संतुष्ट नहीं थे और लगातार दहेज की मांग को लेकर उसका उत्पीड़न करने लगे।

रिचा के 'गलवान' ट्वीट की अक्षय कुमार ने की कड़ी निंदा

अक्षय कुमार ने रिचा चड्ढा के ट्वीट पर प्रतिक्रिया दी है। इसके साथ ही उन्होंने ऋचा चड्ढा के ट्वीट की कड़ी निंदा भी की है। ऋचा चड्ढा ने इसके पहले 'गलवान से हाई' लिखकर एक ट्वीट सोशल मीडिया पर किया था। इसके बाद सोशल मीडिया पर उन्हें जमकर ट्रोल किया गया। अब इस पर अक्षय कुमार ने भी प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने ऋचा चड्ढा के ट्वीट की कड़ी निंदा की है।

इस्लामिक रेजिस्टेंस काउंसिल ने ली मंगलूरू हमले की जिम्मेदारी

एडीजीपी को दी चेतावनी

नई दिल्ली। कर्नाटक के मंगलूरू में बीते शनिवार को चलते ऑटोरिक्शा में अचानक हुए विस्फोट की जिम्मेदारी आतंकी संगठन इस्लामिक रेजिस्टेंस काउंसिल (आईआरसी) ने ली है। वहीं, अतिरिक्त पुलिस महानिदेशक (कानून व्यवस्था) आलोक कुमार ने भी इसे लेकर बयान जारी किया है। उन्होंने कहा कि पुलिस आतंकी संगठन की सत्यता की पुष्टि कर रही है। बता दें कि मंगलूरू में हुए ब्लास्ट की जांच एनआईए ने अपने हाथों में ले ली है। इस मामले में आज यानी गुरुवार को इस्लामिक रेजिस्टेंस काउंसिल ने जिम्मेदारी ली है। सोशल मीडिया पर वायरल एक पोस्ट में इसका दावा किया गया है। इसमें कहा गया है कि 'हम इस्लामिक रेजिस्टेंस काउंसिल (आईआरसी) संदेश देना चाहते हैं कि हमारे एक मुजाहिद भाई मोहम्मद शरीक ने मंगलुरु में भगवा आतंकवादियों के गढ़ कादरी (दक्षिण कन्नड़ जिले में) में हिंदुत्व मंदिर पर हमला करने का प्रयास किया था।' पोस्ट में आगे लिखा गया है कि 'हालांकि यह ऑपरेशन अपने उद्देश्यों को पूरा नहीं कर पाया, फिर भी हम इसे ट्रेडक्राफ्ट और रणनीति के दृष्टिकोण से एक बड़ी सफलता मानते हैं। क्योंकि मुजाहिद भाई के वांछित होने के बाद भी और राज्य और केंद्रीय खुफिया एजेंसियां उसका पता नहीं लगा सकीं थीं।

एडीजीपी आलोक कुमार को दी गई चेतावनी

इतना ही नहीं इस पोस्ट में एडीजीपी आलोक कुमार को चेतावनी भी दी गई है। चेतावनी देते हुए इसमें कहा गया है कि 'भाई की गिरफ्तारी पर खुशी मनाने वालों आपका आनंद थोड़े समय का ही होगा। जल्दी ही आपको इसका फल मिलेगा। इसमें संगठन की ओर से यह दावा किया गया है कि 'हम केवल इसलिए प्रतिशोध ले रहे हैं क्योंकि हमारे धर्म के खिलाफ एक युद्ध घोषित किया गया है।

पत्नी के एड्स पीड़ित होने का दावा कर मांगा तलाक, अदालत ने याचिका खारिज की

मुंबई। बॉम्बे हाईकोर्ट ने पुणे के एक 44 वर्षीय व्यक्ति को तलाक देने से इनकार कर दिया है। दरअसल, व्यक्ति ने झूठा दावा किया था कि उसकी पत्नी एचआईवी पॉजिटिव है जिसके कारण उसे मानसिक पीड़ा हुई है। व्यक्ति ने पहले पुणे की एक फैमिली कोर्ट में तलाक के लिए याचिका दाखिल की थी। लेकिन कोर्ट ने उसकी याचिका को खारिज कर दिया था। इसके बाद उसने फैमिली कोर्ट के आदेश को चुनौती देते हुए हाईकोर्ट का रुख किया था। व्यक्ति ने साल 2011 में हाईकोर्ट में याचिका दाखिल की थी। हालांकि, जस्टिस नितिन जामदार और शर्मिला देशमुख की खंडपीठ ने भी 16 नवंबर के अपने आदेश में व्यक्ति की याचिका को खारिज कर दिया। हाईकोर्ट ने कहा, व्यक्ति ने इस बात का कोई सबूत पेश नहीं किया कि उसकी पत्नी का एचआईवी टेस्ट पॉजिटिव आया था, जिससे उसे मानसिक पीड़ा हुई है। इसलिए, तलाक देने की उसकी प्रार्थना को एकमुश्त खारिज किया जाता है। जोड़े ने मार्च 2003 में शादी रचाई थी। इसके बाद व्यक्ति ने दावा किया था कि उसकी पत्नी सनकी, जिद्दी और गुस्सैल स्वभाव की है और उसके व उसके परिवार के सदस्यों के साथ ठीक से व्यवहार नहीं करती है।

सहारनपुर में आयकर विभाग का पांच व्यापारियों के यहां छापा, 10 से ज्यादा गाड़ियों में एक साथ पहुंची टीम

प्रॉपर्टी डीलर मंजीत जौहर, राज लुम्बा, मेहता ब्रदर्स, नट्स भाटिया, नवीन कुमार मित्तल व भू माफिया मितिन गुप्ता के ठिकानों व घरों पर रेड जारी

सहारनपुर। आयकर विभाग की टीम ने देहरादून, ऋषिकेश, दिल्ली व सहारनपुर के प्रॉपर्टी डीलर के तीन दर्जन से अधिक ठिकानों पर छापेमारी की है। मिली जानकारी के मुताबिक देहरादून के प्रॉपर्टी डीलर मंजीत जौहर, राज लुम्बा, मेहता ब्रदर्स, नट्स भाटिया, नवीन कुमार मित्तल व भू माफिया मितिन गुप्ता के ठिकानों व घरों पर रेड जारी है। वहीं सहारनपुर में टीम ने पांच व्यापारियों के यहां छापा मारा है। 10 गाड़ियों में पहुंची आयकर विभाग की टीम अभी मौके पर ही मौजूद है।

टीम ने पांच जगहों पर मारा

आयकर विभाग गाजियाबाद की टीम ने महानगर में तीन शहद व्यापारियों और एक सराफा कारोबारी सहित पांच जगहों पर छापा मारा है। आयकर विभाग की कार्रवाई से हड़कंप मचा है। बताया जा रहा है करोड़ों रुपये के घपले का मामला है। आयकर विभाग की टीम

करीब 10 से अधिक गाड़ियां सुबह पांच बजे सहारनपुर पहुंची, जिन्होंने अलग-अलग स्थानों पर छापा मारा है। आयकर विभाग की छापे की कार्रवाई से महानगर के कारोबारियों में अफरातफरी मची है। जिन कारोबारियों के यहां छापे की कार्रवाई हो रही है, उनमें कई प्रॉपर्टी डीलर का भी काम करते हैं। बताया जा रहा है कि आयकर विभाग की टीम ने नवीन ज्वेलर्स के कोर्ट रोड स्थित प्रतिष्ठान और टेवर्स कंपाउंड स्थित आवास पर जाकर रेड की। हालांकि कोर्ट रोड स्थित दुकान बंद मिली है। नवीन मित्तल प्रॉपर्टी का भी कारोबार करते है।

इनके यहां भी छापेमारी

आयकर की टीम ने शहद कारोबारी मेहरा ब्रदर्स राजेश, मुकेश, संजय मेहता के लक्ष्मीनगर आवास पर भी छापे की कार्रवाई की। टीम ने अहमदबाग में सीए संजय धींगडा के आवास पर भी छापा मारा है। इनके अलावा टीम ने लोहे के नट बोल्ट के कारोबारी मदनलाल भाटिया के यहां भी रेड की। टीम ने उनके लोहानी सराय स्थित दुकान, मिशन कंपाउंड स्थित आवास और देहरादून रोड पर राकेश केमिकल्स के पास स्थित गोदाम पर भी छापे की कार्रवाई की है। टीम में गाजियाबाद के अलावा दिल्ली और कानपुर के अधिकारी भी शामिल है। टीम सभी से पूछताछ कर रही है। सभी स्थानों पर आयकर विभाग की कार्रवाई चल रही है। हालांकि टीम में शामिल आयकर विभाग के अधिकारी रेड के संबंध में कुछ बताते से इनकार कर रहे हैं।

पीएम मोदी ने देश की राजनीति को जातिवाद, वंशवाद और तुष्टिकरण से किया मुक्त : शाह

देश में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने के लिए प्रतिबद्ध

नई दिल्ली। केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने गुरुवार को कहा कि भाजपा सभी लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं और चर्चाओं के पूरा होने के बाद देश में समान नागरिक संहिता (यूसीसी) लागू करने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने कहा कि यह जन संघ के दिनों से ही भाजपा द्वारा देश के लोगों से किया गया वादा है। एक मीडिया हाउस के कार्यक्रम में गृह मंत्री ने कहा, 'न सिर्फ भाजपा ने, बल्कि संविधान सभा ने भी संसद और राज्यों को उचित समय आने पर यूसीसी लागू करने की सलाह दी थी क्योंकि किसी भी पंथनिरपेक्ष देश में कानून धर्म के आधार पर नहीं होने चाहिए। यदि राष्ट्र और राज्य पंथनिरपेक्ष हैं तो कानून धर्म पर आधारित कैसे हो सकते हैं? हर धर्म के व्यक्ति के लिए संसद या राज्य विधानसभाओं द्वारा पारित एक ही कानून होना चाहिए।' उन्होंने दावा किया कि समय बीतने के साथ संविधान सभा की इस प्रतिबद्धता को भुला दिया गया।

शाह ने कहा, 'भाजपा को छोड़कर कोई भी दल समान नागरिक संहिता के समर्थन में नहीं है। एक लोकतंत्र में स्वस्थ चर्चाएं जरूरी हैं। इस मुद्दे पर खुली एवं स्वस्थ बहस किए जाने की जरूरत है।' उन्होंने कहा कि भाजपा शासित तीन राज्यों- हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड और गुजरात ने शीर्ष अदालत और हाई कोर्टों के सेवानिवृत्त मुख्य न्यायाधीशों की अध्यक्षता में पैनल गठित किए गए हैं, जिनके सामने अलग-अलग धर्मों के लोग इस मुद्दे को लेकर अपनी राय जाहिर कर रहे हैं। गृह मंत्री ने कहा, 'हम इस प्रक्रिया में मिलने वाले सुझावों के आधार पर कार्रवाई करेंगे।'

एम्स साइबर अटैक: 48 हजार हमलों के बाद भी नहीं मिला फूलप्रूफ सिस्टम, नहीं संभले तो मैनुअली करना पड़ेगा काम

एम्स के ई-हॉस्पिटल सर्वर पर साइबर हमला हुआ, दो दिन बाद भी स्थिति संभल नहीं पा रही

नई दिल्ली। दिल्ली के अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स) के ई-हॉस्पिटल सर्वर पर साइबर हमला हुआ है। दो दिन बाद भी स्थिति संभल नहीं पा रही है। ये हालत तो तब हैं, जब यह हमला केवल एक ही संस्थान पर हुआ है। इस हमले के चलते, एम्स में ओपीडी और नमूना संग्रह सेवाओं के अलावा अन्य सभी सेवाएं, मसलन ऑपरेशन प्रक्रिया भी बुरी तरह प्रभावित हुई है। रेनसमवेयर साइबर अटैक के चलते संस्थान का बैकअप सिस्टम भी जवाब दे गया है। सूत्रों का कहना है कि बैकअप सिस्टम को भी निशाना बनाया गया है। शुरुआती जांच में पता चला है कि साइबर हमले में फाइलों का एक्सटेंशन ही बदल गया। 2017 में यूके के नेशनल हेल्थ सिस्टम 'एनएचएस' पर रेनसमवेयर साइबर अटैक हुआ था। करीब दो सप्ताह तक, सारा सिस्टम ठप हो गया था। मैनुअल तरीके से काम करना पड़ा। भारत में चार साल पहले तक 48 हजार से ज्यादा 'वेनाक्राई रेनसमवेयर अटैक' डिटेक्ट हुए थे। उसके बाद भी देश में साइबर अटैक से बचने का फूलप्रूफ सिस्टम तैयार नहीं हो सका है। डॉ. मुक्तेश चंद्र (आईपीएस), दिल्ली पुलिस में स्पेशल सीपी के पद से रिटायर हुए हैं। उन्होंने गोवा के डीजीपी और दिल्ली में स्पेशल सीपी 'यातायात' सहित कई अहम पदों पर कार्य किया है। डॉ. मुक्तेश ने आईआईटी दिल्ली से साइबर सिक्योरिटी विषय में पीएचडी

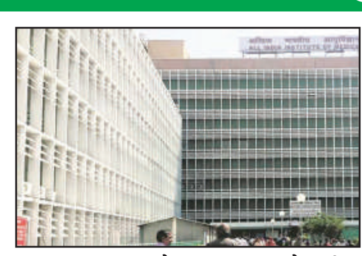

की है। उन्होंने सेवा में रहते हुए ब्रिटेन में जाकर 'चेवेनिंग साइबर सिक्योरिटी फेलोशिप' के तहत 'भारत और यूके के साइबर सुरक्षा ढांचे का तुलनात्मक अध्ययन' विषय पर रिसर्च रिपोर्ट तैयार की थी। उसके बाद डॉ. मुक्तेश के 'साइबर सिक्योरिटी' विषय पर कई लेख प्रकाशित हो चुके हैं। अपने लेख 'ए केस फॉर नेशनल साइबर सिक्योरिटी स्ट्रेटजी' में डॉ. मुक्तेश चंद्र ने लिखा है, 'क्रिटिकल इंफॉर्मेशन इंफ्रास्ट्रक्चर' पर हुआ साइबर अटैक राष्ट्रीय सुरक्षा, अर्थव्यवस्था, जन स्वास्थ्य दूसरी अहम सेवाओं को अपनी चपेट में ले लेता है। इन सेवाओं को बहुत दुर्बलता की स्थिति में ला दिया जाता है। मौजूदा समय में साइबर सिक्योरिटी, किसी देश की 'राष्ट्रीय सुरक्षा रणनीति' का अभिन्न एवं महत्वपूर्ण हिस्सा है।

प्रयागराज : राजधानी एक्सप्रेस पर अराजकतत्वों ने फेंके पत्थर

ट्रेन के एक कोच का शीशा टूटा, एक यात्री घायल

लखनऊ। नई दिल्ली से भुवनेश्वर जा रही राजधानी एक्सप्रेस पर अराजकतत्वों ने ईंट-पत्थर फेंक एक कोच का शीशा तोड़ डाला। मेजा के विसहिजन कला और लखरपुर गांव के बीच अराजकतत्वों ने बीती रात को घटना अंजाम दिया। पथराव में एक यात्री घायल हो गया। उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। सूचना पर मौके पर पहुंची रेलवे पुलिस ने मामले की जानकारी जुटाई। बुधवार रात दिल्ली से भुवनेश्वर जा रही राजधानी एक्सप्रेस (22824) जैसे ही मेजारोड रेलवे स्टेशन के आगे विसहिजन कला और लखनपुर गांव के बीच पहुंची अराजकतत्वों ने ट्रेन पर ईंट-पत्थर फेंकने शुरू कर दिए। करीब 12.35 बजे पथराव से एक कोच का शीशा टूट गया। कोच में शीशे की तरफ बैठा एक यात्री घायल हो गया। उसके सर में गंभीर चोट आई है। इस कारण करीब 15 मिनट तक ट्रेन को रोकना पड़ा। इसके बाद घायल यात्री को मिर्जापुर के एक अस्पताल में भर्ती कराया गया। सूचना पर आरपीएफ मौके पर पहुंची और जांच पड़ताल की। आरपीएफ के इंस्पेक्टर भरत भूषण तिवारी ने घटना से अनभिज्ञता जताई है। उन्होंने बताया कि गिट्टी उछल कर शीशे से टकराई थी, जिससे एक कोच का शीशा टूट गया था। दिल्ली-हावड़ा रूट पर विसहिजन खुर्द गांव के पास आए दिन ट्रेन यात्रियों के साथ मोबाइल छिनैती की घटना होती रहती है। ट्रेन में खिड़की की तरफ बैठे यात्री अगर फोन पर बात करते दिख गए तो बदमाश उन पर लाठी-डंडों से हमला बोल देते हैं।

शिवाजी महाराज से गडकरी की तुलना: उद्धव ने कोश्यारी को बताया अमेजन पार्सल, कहा- भेज दें वृद्धाश्रम

हम केंद्र से आग्रह करते हैं कि वह एक राज्यपाल के रूप में भेजे गए नमूने को वापस बुलाए

मुंबई। महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी और भाजपा नेता सुधांशु त्रिवेदी द्वारा छत्रपति शिवाजी महाराज को लेकर दिए गए विवादित बयान देने के बाद राज्य में एक बार फिर से सियासी माहौल गरमा गया है। उद्धव ठाकरे ने एक बार फिर राज्यपाल कोश्यारी को अमेजन पार्सल बताया है। साथ ही उन्होंने केंद्र से राज्यपाल कोश्यारी को वापस बुलाने की मांग की है। वहीं, दूसरी ओर शिवसेना, एनसीपी के नेताओं द्वारा राज्यपाल पर भाजपा नेता पर निशाना साधने के बाद अब भाजपा सांसद उदयनराजे भोंसले ने भी राज्यपाल और सुधांशु त्रिवेदी की आलोचना की और कार्रवाई की मांग की है।

शिवसेना नेता उद्धव ठाकरे ने राज्यपाल कोश्यारी पर कसा तंज

शिवसेना नेता उद्धव ठाकरे ने छत्रपति शिवाजी महाराज के खिलाफ राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी की विवादित टिप्पणी को लेकर एक बार फिर तंज कसा। साथ ही उन्होंने केंद्र से उन्हें वापस बुलाने की मांग भी की। शिवसेना नेता ठाकरे ने कहा कि मैं केंद्र सरकार से अनुरोध करता हूं कि वह अमेजन पार्सल वापस ले जो उन्होंने राज्यपाल के रूप में भेजा है। हम केंद्र से आग्रह करते हैं कि वह एक राज्यपाल के रूप में भेजे गए नमूने को वापस बुलाए और उसे अन्य स्थानों पर या वृद्धाश्रम भेज दें। हम सभी महाराष्ट्र प्रेमियों से उनके बयान का विरोध करने के लिए कहते हैं। उन्होंने कहा कि छत्रपति शिवाजी महाराज का अपमान किया जा रहा है और सरकार खामोश बैठी है। मुझे समझ नहीं आ रहा है कि सीएम कौन है? लेकिन जो शख्स दिल्ली के सहारे सत्ता में है, वो उनके खिलाफ क्या कहेगा।

भाजपा सांसद ने की राज्यपाल कोश्यारी और सुधांशु त्रिवेदी की आलोचना

जानकारी के मुताबिक, छत्रपति शिवाजी महाराज के वंशज और भारतीय जनता पार्टी के सांसद उदयनराजे भोसले ने गुरुवार को महाराष्ट्र के राज्यपाल भगत सिंह कोश्यारी और पार्टी सहयोगी सुधांशु त्रिवेदी की शिवाजी महराज के बारे में कथित आपत्तिजनक टिप्पणी के लिए आलोचना की। इससे पहले मंगलवार को उन्होंने महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस को पत्र लिखकर कोश्यारी और त्रिवेदी के खिलाफ कार्रवाई की मांग की थी। उन्होंने आज कहा कि 20 नवंबर को औरंगाबाद में कार्यक्रम के दौरान जब राज्यपाल कोश्यारी ने शिवाजी महाराज के बारे में बयान दिया तो केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी और राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी के प्रमुख शरद पवार मंच पर थे।

ओला ड्राइवर के साथ मारपीट, कार और मोबाइल लूट ले गए बदमाश

आगरा। आगरा के थाना अछनेरा में बदमाशों ने ओला ड्राइवर से मारपीट कर कार और मोबाइल लूट लिया। उसके हाथ-पैर बांधकर सड़क किनारे खेत में फेंका और मौके से फरार हो गए। काफी देर बाद उसने खुद को मुक्त किया और पास में ही स्थित एक मंदिर के पुजारी के पास पहुंचा। पुजारी की मदद से पीड़ित ने मामले की जानकारी पुलिस को दी। जनपद महोबा के जैतपुर तहसील कुल पहाड़ निवासी राज यादव पुत्र सुरेश यादव अपने जीजा की ओला स्विफ्ट कार पर चालक है। बुधवार शाम को नई दिल्ली के अजमेरी गेट पर तीन अज्ञात व्यक्तियों ने उसकी कार को बुक किया था। इसके बाद भरतपुर मार्ग की लोकेशन दी। राज यादव तीनों व्यक्तियों को कार से लेकर गंतव्य के लिए रवाना हो गया। यमुना एक्सप्रेसवे से होकर मथुरा होते हुए न्यू दक्षिणी बाईपास पर आकर स्विफ्ट कार अछनेरा से भरतपुर मार्ग पर आ गई।

रूस के पावर सेंटर पर मिसाइल हमलों से यूक्रेन के बड़े हिस्से में ब्लैकआउट हो गया। लोग बिना बिजली-पानी के बीच जीने के लिए अभिशप्त है। इस बीच यूक्रेन के कुछ हिस्से में बिजली को बहाल करने की कोशिश की जा रही है।

सेंसेक्स

762 अंकों की बढ़त के साथ 62,272 के स्तर पर बंद

सोना

सोना 323 रुपये की तेजी के साथ 53,039 रुपये प्रति 10 ग्राम

शेयर बाजार का नया रिकॉर्ड

सेंसेक्स ने 62,412 का ऑल टाइम हाई बनाया, निफ्टी 18,484 पर बंद

मुंबई। शेयर बाजार ने हफ्ते के चौथे कारोबारी दिन, यानी गुरुवार (24 नवंबर) को एक नया रिकॉर्ड कायम किया। सेंसेक्स ने 62,412 का ऑल टाइम हाई बनाया है। ये 762 अंकों की बढ़त के साथ 62,272 के स्तर पर बंद हुआ। यह सेंसेक्स का ऑल टाइम क्लोजिंग हाई है। सेंसेक्स के 30 में से 28 शेयरों में तेजी देखने को मिली। वहीं सिर्फ 2 शेयरों में गिरावट रही।

निफ्टी ने 52 हफ्तों का नया हाई बनाया

निफ्टी ने भी 52 हफ्तों का नया हाई और क्लोजिंग हाई बनाया है। निफ्टी 216 अंक बढ़कर 18,484 के स्तर पर बंद हुआ। कारोबार के दौरान ये 18,529.70 के स्तर पर पहुंचा। इससे पहले निफ्टी का 52-वीक हाई 18,442.15 था, जो उसने 16 नवंबर 2022 को बनाया था। इससे पहले निफ्टी का क्लोजिंग हाई 18477.05 था जो उसने 18/10/21 को बनाया था। निफ्टी ऑल टाइम हाई 18,604 है, जो उसने 19 अक्टूबर 2021 को बनाया था।

1986 में जब सेंसेक्स की शुरूआत हुई तो इसका बेस ईयर 1978-79 को रखा गया और बेस 100 पॉइंट बनाया गया। जुलाई 1990 में ये आंकड़ा 1000 पॉइंट पर पहुंच गया। 1991 के आर्थिक उदारीकरण के बाद सरकार ने एफडीआई के दरवाजे खोले और बिजनेस करने के कानून में बदलाव किया। इसने सेंसेक्स में गति बढ़ाई। आज ये 62,000 को पार कर गया है। अपोलो हॉस्पिटल, एचडीएफसी लाइफ, बीपीसीएल, इंफोसिस, टाटा कंज्यूमर, एचसीएल टेक, पावर ग्रिड, विप्रो समेत 44 शेयर्स निफ्टी के गेनर रहे। सिप्ला, कोल इंडिया, बजाज फिनसर्व और टाटा मोटर्स समेत 5 शेयर्स निफ्टी के लूजर्स रहे। वहीं एक शेयर में कोई बदलाव नहीं हुआ।

कीस्टोन रियल्टर्स ने शेयर बाजार में एक फ्लैट नोट पर शुरूआत की थी। यह बीएसई पर 3% के प्रीमियम के साथ 555 रुपए पर लिस्ट हुआ। इसका इश्यू प्राइस 541 रुपए था। हालांकि, कीस्टोन का शेयर 15.85 रुपए यानी 2.93% की तेजी के साथ 556.85 रुपए पर बंद हुआ। बीकाजी फूड में लगातार दूसरे दिन अपर सर्किट लगा। आज यह स्टॉक 10% उछाल के साथ 379.20 रुपए पर पहुंचा।

सोने में तेजी बरकरार

नई दिल्ली। विदेशी बाजारों में कीमती धातुओं में तेजी के बीच राष्ट्रीय राजधानी में गुरुवार को सोना 323 रुपये की तेजी के साथ 53,039 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। पिछले कारोबार में सोना 52,716 रुपये प्रति 10 ग्राम पर बंद हुआ था। उधर चांदी भी 639 रुपये की तेजी के साथ 62,590 रुपये प्रति किलोग्राम हो गई। उधर सोना वायदा 252 रुपये की तेजी के साथ 52,703 रुपये पर पहुंच गया। मजबूत हाजिर मांग के कारण सटोरियों ने ताजा सौदों की लिवाली की, जिससे वायदा कारोबार में गुरुवार को सोना 252 रुपये की तेजी के साथ 52,650 रुपये प्रति 10 ग्राम हो गया। मल्टी कमोडिटी एक्सचेंज में दिसंबर डिलीवरी के लिए सोने की वायदा कीमत 199 रुपये या 0.38 प्रतिशत की तेजी के साथ 52,650 रुपये प्रति 10 ग्राम पर कारोबार कर रही थी।

कच्चा तेल में गिरावट यूपी में पेट्रोल और डीजल भी सस्ता

ब्रेंट क्रूड का भाव 2.95 डॉलर गिरकर 85.41 डॉलर प्रति बैरल

नई दिल्ली। वैश्विक बाजार में कच्चे तेल की कीमत में पिछले 24 घंटे के दौरान करीब तीन डॉलर प्रति बैरल की गिरावट आई है जिसका असर गुरुवार सुबह घरेलू बाजार में पेट्रोल-डीजल की खुदरा कीमतों पर भी दिखा। सरकारी तेल कंपनियों ने गुरुवार को यूपी के कई शहरों में पेट्रोल-डीजल की कीमत में कमी कर दी है तो बिहार में इसकी कीमतों में उछाल देखा जा रहा है। गौतमबुद्ध नगर जिले (नोएडा-ग्रेटर नोएडा) में पेट्रोल 35 पैसे सस्ता होकर 96.65 रुपए लीटर और डीजल 32 पैसे की गिरावट के साथ 89.82 रुपए प्रति लीटर है। लखनऊ में पेट्रोल 13 पैसे गिरकर 96.44 रुपए लीटर और डीजल 12 पैसे गिरकर 89.64 रुपए लीटर हो गया है। दूसरी ओर बिहार की राजधानी पटना में पेट्रोल 21 पैसे मजबूत होकर 107.80 रुपए प्रति लीटर हो गया है जबकि डीजल 20 पैसे चढ़कर 94.56 रुपए लीटर हो गया है। कच्चा तेल पिछले 24 घंटे में 3 डॉलर की गिरावट आई है। ब्रेंट क्रूड का भाव 2.95 डॉलर गिरकर 85.41 डॉलर प्रति बैरल हो गया है। वहीं डब?ल?यूटीआई में भी करीब 4 डॉलर की कमजोरी दिख रही और यह 77.66 डॉलर प्रति बैरल के भाव बिक रहा है।

दिल्ली में पेट्रोल 96.65 रुपए और डीजल 89.82 रुपए प्रति लीटर मुंबई में पेट्रोल 106.31 रुपए और डीजल 94.27 रुपए प्रति लीटर चेन्नई में पेट्रोल 102.63 रुपए और डीजल 94.24 रुपए प्रति लीटर कोलकाता में पेट्रोल 106.03 रुपए और डीजल 92.76 रुपए प्रति लीटर नोएडा में पेट्रोल 96.65 रुपए और डीजल 89.82 रुपए प्रति लीटर हो गया है। लखनऊ में पेट्रोल 96.44 रुपए और डीजल 89.64 रुपए प्रति लीटर हो गया है।

साबुदाना की बिक्री मंद होने से भावों में सुस्ती का रूख

सेलम/इन्दौर। भारत सरकार की पहल पर वठड ने आगामी वर्ष 2023 को अंतर्राष्ट्रीय मिलेट वर्ष घोषित किया है। प्रधानमंत्री के आह्वान पर भारत सरकार मिलेट का उपयोग बढ़ाने के लिये सभी राज्यों में किसानों को मिलेट की खेती करने और उपभोक्ताओं को मिलेट का उपयोग कर इम्युनिटी बढ़ाने के लिये प्रोत्साहित कर रही है। विश्व में भारत मिलेट का प्रमुख उत्पादक देश है और यहाँ से सभी प्रकार के मिलेट का निर्यात तेजी से बढ़ रहा है। ये कहना है साबु ट्रेड सेलम के मैनेजिंग डायरेक्टर गोपाल साबु का जो कुकरीजॉकी ब्रांड के अंतर्गत बाजार में भगर कोदरा झंगोरा कंगनी और रागी जैसे पांच गुणकारी मिलेट्स को घर घर तक पहुंचाने का संकल्प लिए हुए हैं। साबु ने बताया कि ह्लदो दिन के अंतराल से बदल बदल कर लगातार मिलेट्स का उपयोग करने परह्व सिर्फ पन्द्रह दिन में ही उन्होंने अपने बरसों पुराने डायबिटीज में आश्चर्यजनक सुधार पाया। मिलेट्स पर गोपाल साबु और उनकी टीम ने मध्य और उत्तर भारत में मिलेट्स की जागरूकता बढाने के लिए काफी काम किया है।

केंद्र सरकार ने 'द अशोक' होटल को बेचने के लिए तय किया सांकेतिक मूल्य, 7,409 करोड़ कीमत

नई दिल्ली। सरकार ने राष्ट्रीय मौद्रीकरण कार्यक्रम के तहत दिल्ली के प्रतिष्ठित 'द अशोक' होटल का सांकेतिक मूल्य 7,409 करोड़ रुपये तय किया है। वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने 'राष्ट्रीय मुद्रीकरण पाइपलाइन योजना की शुरूआत पिछले वर्ष की थी। सूत्रों ने यह बताया। द अशोक और उसके निकट स्थित होटल सम्राट भारतीय पर्यटन विकास निगम की परिसंपत्तियां हैं जो इस योजना में सूचीबद्ध हैं। सूत्रों के मुताबिक निवेशकों से विचार-विमर्श किया जा चुका है और होटल की बिक्री के लिए मंत्रिमंडल की मंजूरी पर विचार किया जा रहा है।

25 एकड़ क्षेत्र में फैला द अशोक दिल्ली के बीचोबीच स्थित है। एक सूत्र ने समाचार एजेंसी पीटीआई को बताया, अशोक होटल का मौद्रीकरण निजी-सार्वजनिक भागीदारी के जरिए होगा। इसके लिए सांकेतिम मूल्य 7,409 करोड़ रुपये तय किया गया है। विभिन्न क्षेत्रों में अवसंरचना परिसंपत्तियों के मूल्य का लाभ उठाने के लिए सीतारमण ने अगस्त 2021 में चार साल के लिए 6 लाख करोड़ रुपये की एनएमपी की घोषणा की थी। सरकार 2022-23 में अब तक एनएमपी के तहत 33,422 करोड़ रुपये की परिसंपत्तियों का मौद्रीकरण कर चुकी है।

बता दें कि नीति आयोग ने इन्फ्रास्ट्रक्चर लाइन मंत्रालयों के परामर्श से एनएमपी पर रिपोर्ट तैयार की थी। 14 नवंबर को नीति आयोग के सीईओ परमेश्वरन अय्यर के साथ बैठक में वित्त मंत्री ने एनएमपी कार्यान्वयन की प्रगति की समीक्षा की थी। सरकार ने 2022-23 में एनएमपी के तहत अब तक 33,422 करोड़ रुपये की संपत्ति का मुद्रीकरण किया है। बता दें कि मुद्रीकरण के मामले में कोयला मंत्रालय 17,000 करोड़ रुपये जुटाकर सूची में सबसे आगे है। गौरतलब है कि 2021-22 में मोदी सरकार ने 1 लाख करोड़ रुपये के लेन-देन को पूरा करके कार्यक्रम के पहले साल के 88,000 करोड़ रुपये के लक्ष्य को पार कर लिया। सूत्रों ने कहा कि सरकार के ताजा अनुमान के मुताबिक 2022-23 में 1,62,422 करोड़ रुपये के ओवरऑल एसेट मोनिटाइजेशन के लक्ष्य को हासिल करने में 38,243 करोड़ रुपये की कमी रहने की संभावना है। उन्होंने आगे कहा, 'वर्तमान वित्त वर्ष में एनएमपी के तहत एसेट मोनिटाइजेशन से संभावित वसूली अब 1,24,179 करोड़ रुपये होने का अनुमान लगाया गया है।

कीस्टोन रियल्टर्स का शेयर पहले दिन तीन प्रतिशत चढ़ा

नई दिल्ली। कीस्टोन रियल्टर्स का शेयर गुरुवार को अपने कारोबार के पहले दिन अपने निर्गम मूल्य 541 रुपए के मुकाबले करीब तीन प्रतिशत चढ़ा। कंपनी का शेयर बीएसई पर 2.58 प्रतिशत की बढ़त के साथ 555 रुपए पर सूचीबद्ध हुआ। बाद में यह पांच प्रतिशत चढ़कर 568.25 रुपए तक पहुंच गया। एनएसई पर भी कंपनी का शेयर 555 रुपए के भाव पर सूचीबद्ध हुआ। कंपनी के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) को दो गुना अभिदान मिला था।

रुस्तमजी ब्रांड के तहत संपत्तियों की बिक्री करने वाली कंपनी कीस्टोन रियल्टर्स ने 635 करोड़ रुपए के आरंभिक सार्वजनिक निर्गम (आईपीओ) के लिए मूल्य दायरा 514-541 रुपए प्रति शेयर तय किया था। आईपीओ के तहत कंपनी ने 560 करोड़ रुपए के नए शेयर जारी किए और इसके प्रवर्तक 75 करोड़ रुपए तक की बिक्री पेशकश (ओएफएस) लाए थे।

जीएसटी मुनाफाखोरी की शिकायतों की जांच एक दिसंबर से सीसीआई करेगा

नई दिल्ली। जीएसटी मुनाफाखोरी से जुड़ी सभी शिकायतों की जांच भारतीय प्रतिस्पर्धा आयोग (सीसीआई) एक दिसंबर से करेगा। इससे पहले इस प्रकार के मामले राष्ट्रीय मुनाफाखोरी-रोधी प्राधिकरण (एनएए) निपटता था। केंद्र सरकार ने इस बाबत एक अधिसूचना जारी की है। वर्तमान में कंपनियों द्वारा जीएसटी दर में कटौती का लाभ नहीं देने संबंधी उपभोक्ताओं की शिकायतों की जांच मुनाफाखोरी-रोधी महानिदेशालय (डीजीएपी) करता है और फिर यह अपनी रिपोर्ट एनएए को देता है। जिसके बाद एनएए इन शिकायतों पर आखिरी फैसला लेता है। एनएए का कार्यकाल इस महीने समाप्त होने वाला है इसलिए इसके कामकाज को एक दिसंबर से सीसीआई संभालेगा। डीजीएपी अपनी सभी रिपोर्ट सीसीआई को देगा जो उन पर फैसला सुनाएगा। केंद्रीय अप्रत्यक्ष कर एवं सीमाशुल्क बोर्ड ने 23 नवंबर को एक अधिसूचना में यह कहा है। एनएए की स्थापना माल एवं सेवा कर (जीएसटी) कानून की धारा 171ए के तहत नवंबर 2017 में दो साल के लिए (2019 तक) की गई थी। बाद में इसका कार्यकाल नवंबर 2021 तक दो साल के लिए बढ़ाया गया। फिर जीएसटी परिषद ने पिछले वर्ष सितंबर में एनएए का कार्यकाल और एक साल के लिए बढ़ाकर 30 नवंबर 2022 कर दिया जिसके बाद इसका सारा कामकाज सीसीआई को सौंपने का निर्णय लिया। अधिकारियों ने बताया कि जीएसटी मुनाफाखोरी से संबंधित शिकायतों से निपटने के लिए सीसीआई में एक अलग खंड की स्थापना की जा सकती है।

रुपये तेजी के साथ बंद

मुंबई। अमेरिकी डॉलर के मुकाबले गुरुवार को भारतीय रुपया तेजी के साथ बंद हुआ। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले रुपया 30 पैसे की तेजी के साथ 81.63 (अस्थायी) प्रति डॉलर पर बंद हुआ। वहीं अमेरिका के कमजोर आर्थिक आंकड़े और फेडरल रिजर्व के आक्रामक रवैये में कमी के संकेत से अंतरराष्ट्रीय कारोबार में डॉलर कमजोर हुआ है। इससे अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 81.72 पर खुला। वहीं कारोबार के दौरान रुपया 81.60 के दिन के उच्चस्तर और 81.77 के निचले स्तर पर पहुंचने के बाद अंत में अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले 30 पैसे की तेजी के साथ 81.63 प्रति डॉलर पर बंद हुआ। वहीं अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में गत दिवस अमेरिकी डॉलर के मुकाबले रुपया बुधवार 26 पैसे की गिरावट के साथ ही 81.93 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। वहीं विश्व की छह प्रमुख मुद्राओं की तुलना में डॉलर की कमजोरी या मजबूती को दिखाने वाला डॉलर सूचकांक 0.19 फीसदी की गिरावट के साथ ही 105.87 रह गया।

एग्रोकेमिकल सेक्टर की कंपनी धर्मज क्रॉप गार्ड का आईपीओ 28 नवंबर को

मुंबई। भारतीय शेयर मार्केट में अगले हफ्ते निवेशकों को कमाई के कई मौके मिलने वाले हैं। अगले हफ्ते एक और कंपनी अपने इनिशियल पब्लिक ऑफरिंग यानी आईपीओ (आईपीओ) लेकर आ रही हैं। दरअसल एग्रोकेमिकल सेक्टर की कंपनी धर्मज क्रॉप गार्ड का आईपीओ खुदरा निवेशकों के लिए 28 नवंबर को खुलने वाला है। कंपनी ने बताया कि निवेशक इस आईपीओ में 30 नवंबर तक पैसे लगा सकते हैं। कंपनी ने आईपीओ के लिए 216-237 रुपये का प्राइस बैंड तय किया है। कंपनी ने बयान में कहा गया है कि आईपीओ के तहत 216 करोड़ रुपये तक के नए शेयर जारी किए जाएंगे। इसके अलावा कंपनी के मौजूदा शेयरधारक 14.83 लाख शेयरों की ऑफर फॉर सेल (ओएफएस) लाएंगे। अहमदाबाद की कंपनी को इश्यू से 251.15 करोड़ रुपये जुटने की उम्मीद है। आईपीओ से प्राप्त राशि का उपयोग गुजरात के भरूच में एक मैन्युफैक्चरिंग प्लांट वर्किंग कैपिटल की जरूरतों कर्ज भुगतान और अन्य सामान्य कंपनी कामकाज के लिए किया जाएगा। धर्मज क्रॉप गार्ड लिमिटेड की स्थापना साल 2015 में हुई। यह एक एग्रोकेमिकल कंपनी है। कंपनी बी2सी और बी2बी ग्राहकों के लिए कीटनाशकों कवकनाशकों जड़ी-बूटियों प्लांट ग्रोथ रेगुलेटर्स माइक्रो फर्टिलाइजर्स और एंटीबायोटिक दवाओं जैसे एग्रोकेमिकल फॉर्मूलेशन का निर्माण डिस्ट्रीब्यूशन और मार्केटिंग करती है। यह कंपनी प्रोडक्टिविटी और प्रॉफिट को बढ़ाने के लिए किसानों की सहायता के लिए क्रॉप प्रोटेक्शन सॉल्यूशन भी प्रदान करती है।

अंबानी नहीं, टाटा को बेच रहे हैं बिसलेरी, भावुक हुए कंपनी मालिक ने कहा- इसे मरने नहीं देना चाहता

नई दिल्ली। भारत की सबसे पॉपुलर पैकेज्ड वाटर कंपनी बिसलेरी बिकने जा रही है। 7000 करोड़ रुपए में बिसलेरी को टाटा समूह खरीदने वाली है। इस कंपनी को खरीदने की कतार में नेस्ले और रिलायंस जैसी कंपनियां भी थीं, लेकिन कंपनी के मालिक रमेश चौहान ने अपनी कंपनी टाटा के हाथों में सौंपने का फैसला किया। जिस कंपनी को साल 1969 में उन्होंने 4 लाख रुपए में खरीदा था, उसे बेचने का फैसला आसान नहीं था। इकोनॉमिक्स टाइम्स के साथ इंटरव्यू के दौरान 82 साल के रमेश चौहान भावुक हो गए। उन्होंने कहा कि जिस कंपनी को मैंने बच्चे की तरह पाला उसे मरने नहीं दे सकता।

बिसलेरी को खरीदने के लिए रिलायंस और नेस्ले जैस कंपनियां रेस में थी, लेकिन बिसलेरी ने इसे टाटा कौ सौंपने का फैसला किया। इस फैसले के पीछे की जो वजह उन्होंने बताई वो बेहद भावुक कर लेने वाली है। उन्होंने कहा कि ये फैसला उनके लिए आसान नहीं है, लेकिन उनके पास कोई उत्तराधिकारी नहीं है, जो उनकी इस कंपनी को आगे ले जा सके। उनकी बेटी जयंती इस कारोबार में खास दिलचस्पी नहीं रखती हैं। रमेश चौहान ने कहा कि वो इस कंपनी को मरने नहीं देना चाहते है, इसलिए बेचने का फैसला लेना पड़ा। बिसलेरी के हाथों अपनी कंपनी सौंपने के बारे में उन्होंने कहा कि वो टाटा को जानते हैं, उनके काम और ईमारदारी से वो परिचित हैं। उन्होंने कहा कि मुझे टाटा कल्चर और जीवन को लेकर उनके मूल्यों का सम्मान पसंद हैं। उन्हें भरोसा है कि देश की पुरानी कंपनियों में से एक टाटा उनकी इस कंपनी को संभाल कर रखेगी। 82 साल के चौहान ने कहा कि मेरी कंपनी को खरीदने के लिए कई बड़ी कंपनियां आक्रमक रूप से तैयार थी, लेकिन टाटा के भरोसे के कारण कंपनी उन्हें सौंपने का फैसला किया। उन्होंने कहा कि इस डील को लेकर पिछले दो सालों में कई बार टाटा समूह के चैयरमैन एन चंद्रशेखरन और टाटा कंज्यूमर के सीईओ सुनिल डिसूजा से मिला, जिसके बाद मुझे भरोसा हो गया कि ये लोग काफी अच्छे हैं और मेरी कंपनी का अच्छे से बल्कि मुझसे बेहतर तरीके से ख्याल रखेंगे।

टिगोर ईवी में अब ज्यादा तकनीकी और ज्यादा लक्जरी फीचर्स मिलेंगे, 315 किमी की विस्तारित एआरएआई प्रमाणित रेंज

मुंबई। न्यू फॉरएवर के सिद्धांत की तर्ज पर, भारत के प्रमुख वाहन निमार्ता, टाटा मोटर्स ने आज टिगोर ईवी सेडान को आज लॉन्च किया। टिगोर ईवी को 315 किमी तक की विस्तृत रेंज (एआरएआई प्रमाणित) और कई प्रीमियम और टेक्नोलॉजी फीचर्स के साथ पेश किया गया है। यह नए मैग्नेटिक लाल रंग विकल्प में उपलब्ध है। टिगोर ईवी में नए फीचर्स जोड़कर कार में बैठी सवारियों के लक्जरी और आराम को और बढ़ाया गया है। कार में लेदरेट से बनी सीटें, लेदर में लिपटी हुई स्टीरियरिंग व्हील, रेन सेंसिंग वाइपर्स, ऑटो हेडलैंप्स और क्रूज कंट्रोल जैसे फीचर्स शामिल हैं। इसमें कई स्मार्ट फीचर्स जैसे मल्टी मोड रीजन, कनेक्टेड कार टेक्नोलॉजी, जेड कनेक्ट, स्मार्ट वॉच कनेक्टिविटी, आईटीपीएमएस और टायर पंचर रिपेयर किट से उपभोक्ताओं को ज्यादा तकनीकी अनुभव मिलता है। इन स्मार्ट फीचर्स को इस रेंज में स्टैंडर्ड तौर पर दिया जाएगा। टाटा पैसेंजर इलेक्ट्रिक मोबिलिटी लिमिटेड और टाटा मोटर्स पैसेंजर्स व्हीकल्स लिमिटेड के प्रबंध निदेशक शैलेश चंद्रा ने कहा, ईवी इंडस्ट्री में बहुत ज्यादा विकास हो रहा है। भारतीय बाजार में इलेक्ट्रिक वाहन की लोकप्रियता बढ़ रही है। आज टाटा मोटर्स के 50 हजार इलेक्ट्रिक वाहन सड़क पर दौड़ रहे हैं। बाजार में उनकी हिस्सेदारी 89% है। टाटा मोटर्स में हम अपने व्यापक पोर्टफोलियो से उपभोक्ताओं में इलेक्ट्रिक गाड़ियों के प्रति रुझान पैदा कर रहे हैं। हाल ही में पेश टिगोर ईवी एक ऐसा प्रॉडक्ट है, जिससे ईवी मार्केट का लोकतांत्रिकरण होगा। हमें उपभोक्ताओं से जबर्दस्त रेस्पॉन्स मिला है। हमें यह घोषणा कर काफी प्रसन्नता हो रही है कि लॉन्चिंग के एक महीने के भीतर 20 हजार लोगों ने इसकी बुकिंग करा ली है। अपनी न्यू फॉरएवर फिलॉस्फी की तर्ज पर यह समय टिगोर ईवी के फीचर्स को अपडेट करने का है। भारतीय सड़कों पर किए गए 600 मिलियन किलोमीटर के सफर के बाद उपभोक्ताओं के ड्राइविंग पैटर्न की गहरी जांच-पड़ताल से हमें इस कार की बेहतर क्षमता और रेंज के बारे में पता लगाने में मदद मिली। हमें 315 किमी की विस्तारित रेंज (एआरएआई से प्रमाणित) के साथ आपके सामने नई टिगोर ईवी को पेश करते हुए बहुत खुशी हो रही है। अब यह ज्यादा तकनीकी फीचर्स से लैस, ज्यादा सुविधाजनक और ज्यादा इलेक्ट्रिकल है।

संक्षेप

दूरसंचार कंपनियों का एजीआर अप्रैल-जून में 18 प्रतिशत बढ़ा

नई दिल्ली। दूरसंचार सेवाप्रदाताओं का समायोजित सकल राजस्व (एजीआर) अप्रैल-जून 2022 में सालाना आधार पर 17.91 प्रतिशत बढ़कर 60530 करोड़ रुपए हो गया। भारतीय दूरसंचार नियामक प्राधिकरण (ट्राई) की एक रिपोर्ट में यह जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के अनुसार राजस्व में हिस्सेदारी के मामले में जियो सबसे आगे रही। अप्रैल-जून 2021 की तिमाही में दूरसंचार सेवाप्रदाताओं का एजीआर 51335 करोड़ रुपए रहा था। सरकार दूरसंचार सेवाओं प्रदाताओं से उनके समायोजित सकल राजस्व के आधार राजस्व में अपना हिस्सा हासिल करती है। अखिल भारतीय स्तर पर सेवाएं देने वाली कंपनियों में जियो का एजीआर 20.58 प्रतिशत बढ़कर 21515.88 करोड़ रुपए पर पहुंच गया। भारती एयरटेल का एजीआर सालाना आधार पर 25.15 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 17140.56 करोड़ रुपए रहा। वोडाफोन आइडिया का एजीआर 17.93 प्रतिशत बढ़कर 7356.54 करोड़ रुपए और बीएसएनएल का 2.6 प्रतिशत की वृद्धि के साथ 2177.95 करोड़ रुपए रहा। सतीश मोरे/24नवंबर

भारत की आर्थिक वृद्धि दर 2023 मे 5.9 प्रतिशत रहने का अनुमान

मुंबई। अमेरिका की ब्रोकरेज कंपनी गोल्डमैन सैक्स ने भारत की आर्थिक वृद्धि दर के 2023 में 5.9 प्रतिशत पर रहने का अनुमान लगाया है। यह पूर्व में लगाए गए 6.9 प्रतिशत की वृद्धि दर के अनुमान से एक प्रतिशत कम है। गोल्डमैन सैक्स ने यह भी कहा कि दिसंबर 2023 तक नेशनल स्टॉक एक्सचेंज का निफ्टी 20500 अंक के स्तर तक पहुंच सकता है। इससे निवेशकों को 12 प्रतिशत तक का रिटर्न मिल सकता है। ब्रोकरेज कंपनी ने हालांकि बीएसई सेंसेक्स कोई लक्ष्य नहीं दिया है। वहीं 2023 के लिए कंपनी ने भारतीय अर्थव्यवस्था के 5.9 प्रतिशत की दर से बढ़ने का अनुमान जताया है। जबकि वर्ष 2022 के लिए यह अनुमान 6.9 प्रतिशत का है। ब्रोकरेज के अनुसार आर्थिक वृद्धि दो हिस्सों में बंट सकती है। वर्ष 2023 में पहली छमाही में आर्थिक वृद्धि धीमी रह सकती है। वहीं दूसरी छमाही में निवेश बढ़ने वैश्विक बाजारों में सुधार से आर्थिक वृद्धि में फिर से तेजी आने की संभावना है। ब्रोकरेज ने कहा कि भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) दिसंबर की मौद्रिक नीति समीक्षा बैठक में रेपो दर में 0.50 अंक और फरवरी 2023 की बैठक में 0.35 प्रतिशत की वृद्धि कर सकता है। इससे अगले साल फरवरी तक रेपो दर 6.75 प्रतिशत पर पहुंच जाएगी।

वीवो ने दिल को छू लेने वाला कैंपेन 'केयर विथ जॉय' लॉन्च किया

नई दिल्ली। ग्लोबल इनोवेशन ब्रांड, वीवो ने दिल को छू लेने वाला कैंपेन 'केयर विथ जॉय' लॉन्च किया है, ताकि यह दिखाया जा सके कि किस प्रकार ब्रांड अपने ग्राहकों के चेहरों पर मुस्कान लाने के लिए हर संभव प्रयास करने के लिए प्रतिबद्ध है। कैंपेन में एक वीवो कस्टमर सर्विस एक्जीक्यूटिव को दिखाया गया है जो सभी मुश्किलों को पार करते हुए ग्राहक के फोन को रिपेयर कर सही समय पर डिलीवरी देता है और उसे यह देखकर बहुत आश्चर्य होता है कि फोन का सही समय पर ठीक होना क्यों इतना जरुरी था। केयरविथजॉय के लिए प्रतिबद्ध एक ब्रांड के रूप में, वीवो ने अपने ग्राहकों के लिए खरीदारी से लेकर विश्वसनीय आफ्टर-सेल सर्विस तक परेशानी मुक्त और बेहतर एक्सपीरियंस प्रदान करने के लिए लगातार काम किया है। वीवो के पास 650 से ज्यादा सर्विस सेंटर, ऑनलाइन सर्विस ट्रैकिंग, होम पिक-अप और ड्रॉप-ऑफ सेवाओं के साथ सर्विस के लिए कई बेहतरीन ऑफर्स भी है। कैंपेन का कॉन्सेप्ट एफसीबी इंडिया द्वारा तैयार किया गया है। वीवो इंडिया के ब्रांड स्ट्रेटेजी हेड योगेंद्र श्रीरामुला ने कहा, हम जो कुछ भी करते हैं वह हमारे ग्राहकों के लिए ही होता है। कस्टमर-सेंट्रिक ब्रांड के रूप में, हमने 650 से ज्यादा सर्विस सेंटर का एक मजबूत राष्ट्रव्यापी नेटवर्क स्थापित करने के लिए कड़ी मेहनत की है, इन्हें पूरी तरह से वीवो द्वारा मैनेज किया जाता है। हमारा नया 'केयर विथ जॉय' कैंपेन बताता है कि कैसे हम अपने ग्राहकों को केयरिंग और आश्वस्त करने वाला अनुभव प्रदान करते हैं। यह हमारे कई निर्णयों में नजर आता है, जैसे हमारे सर्विस सेंटर तक बहुत आसानी से पहुंचा जा सकता है और हम सभी स्पेयर पार्ट्स की कीमतों में पारदर्शिता रखते हैं। हमारे अधिकांश सर्विस सेंटर हफ्ते में सातों दिन खुले रहते हैं और हर बुधवार को ज्यादा देर तक रूककर काम करते हैं, ताकि सभी ग्राहकों को बिना किसी परेशानी के समय पर सेवाएं मिल पाएं। एफसीबी इंडिया के चीफ क्रिएटिव ऑफिसर सुरजो दत्त ने कहा कि प्रामाणिकता और गर्मजोशी दोनों ही भारत में वीवो कम्युनिकेशन की नींव हैं।

रुपया 26 पैसे बढ़कर 81.67 पर

मुंबई। अमेरिकी मुद्रा में ऊपरी स्तर से गिरावट के चलते रुपया गुरुवार को शुरूआती कारोबार में अमेरिकी डॉलर के मुकाबले 26 पैसे बढ़कर 81.67 पर पहुंच गया। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया डॉलर के मुकाबले 81.72 पर खुला और फिर मजबूती के साथ 81.67 के स्तर पर पहुंच गया। इस तरह स्थानीय मुद्रा ने पिछले बंद भाव के मुकाबले 26 पैसे की बढ़त दर्ज की। बुधवार को रुपया 18 पैसे की गिरावट के साथ 81.85 प्रति डॉलर पर बंद हुआ था। इस बीच छह प्रमुख मुद्राओं के मुकाबले अमेरिकी डॉलर की स्थिति को दशार्ने वाला डॉलर सूचकांक 0.41 प्रतिशत गिरकर 105.63 पर आ गया।

भारत में इनोवा हाईक्रॉस 25 को करेगी डेब्यू

नई दिल्ली। भारत में आगामी 25 नवंबर को टोयोटा इनोवा हाईक्रॉस डेब्यू करने वाली है। ऑटोमेकर की ओर से सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर पोस्ट किए गए नए टीजर वीडियो से पता चलता है कि कार अडास फीचर्स के साथ आएगी।जापानी ऑटोमेकर अपनी बहुप्रतीक्षित डेब्यू से पहले एसयूवी की तरह दिखने वाली एमपीवी के टीजर वीडियो और इमेज जारी कर रहा है। नए वीडियो बताता है कि एमपीवी में लेन-कीप असिस्ट सुविधा उपलब्ध होगी। इनोवा कई सालों से भारतीय बाजार में वाहन निमार्ता की एक पॉपुलर कार बनी हुई है और नए मॉडल के अपडेट के साथ यह एक पूरी नई कार में बदलने के लिए तैयार है। आगामी टोयोटा इनोवा हाईक्रॉस न केवल फ्रेश स्टाइल के साथ आती है जो टोयोटा फॉर्च्यूनर और जापानी कार ब्रांड के अन्य एसयूवी से काफी प्रभावित है बल्कि कार में एडवांस टेक्नोलॉजी और फीचर्स भी जोड़े गए हैं। नई टोयोटा इनोवा हाइक्रॉस की प्रमुख यूएसपी में से एक हाइब्रिड पावरट्रेन है जिसके बारे में कंपनी पहले ही बता चुकी है। ऑटोमेकर ने पहले ही नई टोयोटा इनोवा हाइक्रॉस के फ्रंट ग्रिल हेडलैंप हुड साइड प्रोफाइल और रियर के डिजाइन का खुलासा कर दिया है। एमपीवी पूरी तरह से नए चेसिस पर आधारित होगी जिससे बेहतर सवारी की गुणवत्ता बेहतर संचालन और अधिक सुरक्षा की उम्मीद है।

2022-23 में सऊदी अरब के बाद सबसे तेज वृद्धि वाली अर्थव्यवस्था के रूप में सामने आएगा भारत : ओईसीडी

लंदन। विकसित औद्योगिक देशों के संगठन (ओईसीडी) का अनुमान है कि भारत वित्त वर्ष 2022-23 में जी20 समूह में सऊदी अरब के बाद सबसे तेजी से वृद्धि करती अर्थव्यवस्था के रूप में सामने आएगा। रूस यूक्रेन लड़ाई के कारण कच्चे तेल के बाजार में आए उबाल से परेशान पूरी दुनिया इस समय मुद्रास्फीति के भारी दबाव और आर्थिक गतिविधियों में नरमी के दौर से गुजर रही है। पेरिस स्थित संगठन ओईसीडी ने अपनी रिपोर्ट में कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में मांग नरम हो रही है और केंद्रीय बैंक मौद्रिक नीतियों को सख्त करते जा रहे हैं इसके बावजूद भारत चालू वित्त वर्ष में जी20 समूह की अर्थव्यवस्थाओं में दूसरे नंबर की सबसे तीव्र वृद्धि करने वाली अर्थव्यवस्था बना रहेगा। ओईसीडी की ताजा इकोनामिक आउटलुक रिपोर्ट में कहा गया है कि वर्ष 2022-23 में भारत की आर्थिक वृद्धि दर निर्यात में और घरेलू अर्थव्यवस्था में मांग के हल्का होने के चलते घटकर 5.7 फीसदी रहेगी बावजूद इसके भारत की आर्थिक वृद्धि दर अगले वर्ष चीन और सऊदी अरब से ऊपर ही रह सकती है।

किसानों को नहीं मिल पा रही खाद, कांग्रेसियों का प्रदर्शन

नाराजगी

राज्यपाल को भेजा ज्ञापन

किसानों की समस्याओं को लेकर मुख्यालय पर प्रदर्शन करते कांग्रेसी

भदोही। जिला कांग्रेस कमेटी के उपाध्यक्ष पंडित दीनानाथ दूबे व राजेश्वर दूबे के संयुक्त नेतृत्व में कांग्रेसजनों ने राज्यपाल को संबोधित ज्ञापन अपर जिलाधिकारी को सौंपा। इस अवसर पर प्रदेश सचिव वसीम अंसारी व जिला उपाध्यक्ष राजेश्वर दूबे ने कहा कि प्रदेश में रवि की फसल की बुवाई चल रही है। रबी की फसल के लिए आवश्यक खाद, उर्वरक, डीएपी की भारी कमी से किसानों को सामना करना पड़ रहा है। सहकारी समितियों के गोदामों पर मात्र 1 बोरी खाद पाने के लिए भी किसानों की लंबी कतार लग रही है और स्थानीय स्तर पर सरकारी अधिकारीगण समस्या के शीघ्र समाधान का कोरा आश्वासन ही दे रहे हैं। कहा कि किसानों के लिए खाद्य उर्वरक डीएपी की कमी की स्थिति जानबूझकर पैदा की गई है। जिससे बिचौलियों को लाभ पहुंचे। इस अवसर पर दीनानाथ दुबे व मसूद आलम ने मांग किया कि प्रदेश के किसानों को खाद्य उर्वरक की आपूर्ति की तत्काल व्यवस्था की जाए अन्यथा कांग्रेसजन सड़कों पर बड़े आंदोलनों के लिए बाध्य होंगे। इस अवसर पर मुख्य रूप से करमचंद बिंद, जजलाल राय, जिला दुबे, अवधेश कुमार पाठक, लक्ष्मी शंकर चौबे, महेश चंद्र मिश्रा, सुरेश गौतम, हरीश चंद्र दुबे, डॉ. निजामुद्दीन, संदीप दुबे, उमेश पाल, अशोक मिश्रा, आनंद मौर्य, सुफियान अहमद, मनोज जायसवाल, सैफ अली बाबू, इबरार अली, जावेद अली, गीता देवी, आकिब अंसारी, नौशाद अली, रामलाल इत्यादि लोग उपस्थित रहे।

गैंगस्टर अभियुक्त चढ़ा पुलिस के हत्थे

ज्ञानपुर। थाना ज्ञानपुर पुलिस को सफलता मिली है। एटीएम कार्ड बदलकर धोखाधड़ी करने जैसे अभियोग पंजीकृत गैंगेस्टर अभियुक्त के विरुद्ध कार्रवाई की गयी। गैंगेस्टर अभियुक्तों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही हेतु विशेष अभियान चलाया जारहा है। कानून व्यवस्था को सुदृढ़ रखने के दृष्टिगत डॉ. अनिल कुमार पुलिस अधीक्षक भदोही के कुशल निर्देशन में अपराधियों के विरुद्ध लगातार प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। पुलिस कार्यवाही के क्रम में गैंगेस्टर वांछित पुरस्कार घोषित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के तहत थानाध्यक्ष ज्ञानपुर के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा मुखबिर की सूचना के आधार पर थाना ज्ञानपुर पर पंजीकृत मुअस.222/2022 धारा. 3(1) यूपी गैंगेस्टर एक्ट के अभियोग से सम्बंधित वांछित अभियुक्त निवासी गनेशीपुर थाना हंडिया जनपद प्रयागराज को हॉस्टल चौराहा से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के उपरांत चालान न्यायालय किया गया। गिरफ्तारशुदा अभियुक्त के विरुद्ध एटीएम कार्ड बदलकर धोखाधड़ी व गैंगेस्टर एक्ट सहित कुल 3 गंभीर अभियोग पंजीकृत हैं।

184 शिकायतों का किया गया प्रभावी निस्तारण

जनसंवाद दिवस

जनपद के सभी विभागों में आयोजित हुआ जनसंवाद दिवस

जन शिकायतों का समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण सर्वोच्च प्राथमिकता: डीएम

जनसंदेश न्यूज

जनसंवाद दिवस के अवसर पर अपने कार्यालय में सुनवाई करते बीएसए भूपेंद्र नारायण सिंह

ज्ञानपुर। जिलाधिकारी गौरांग राठी द्वारा जनशिकायतों का समयबद्ध, गुणवत्तापूर्ण निस्तारण करने की दिशा में उनके द्वारा शुरुआत किए गये प्रत्येक वृहस्पतिवार को जनसंवाद दिवस विभागवार समस्या निस्तारण हेतु विशेष दिवस के गुरुवार को सभी विभागों द्वारा आयोजन कर शिकायतों का प्रभावी निस्तारण किया गया।

संबंधित विभागीय अधिकारियों ने अपने विभाग में जनसंवाद दिवस का आयोजन कर बताया कि मुख्यमंत्री शिकायत पटल एवं अन्य पटल पर प्राप्त शिकायतों में असंतोषजनक फीडबैक शिकायतों का त्वरित व गुणवत्तापूर्ण समाधान किया गया। जिलाधिकारी द्वारा आईजीआरएस सहित सभी शिकायतों का त्वरित व गुणवत्तापूर्ण निस्तारण के निर्देश के अनुपालन में ह्यप्रत्येक वृहस्पतिवारह्णह्ण जन संवाद दिवसह्णह्ण में असंतुष्ट फीडबैक में से 308 शिकायतों का लगभग सभी कार्यालयध्यक्षों द्वारा सुनवाई किया गया। तथा मौके पर 184 शिकायतों का गुणवत्ता परक त्वरित निस्तारण किया गया। शेष असंतुष्ट शिकायतों का विभागीय गठित कमेटी द्वारा निस्तारण किए जाने के क्रम में आवश्यक कार्यवाही की गयी।

जनसंवाद दिवस विभागवार समस्या निस्तारण हेतु विशेष दिवस पर पुलिस अधीक्षक, अपर पुलिस अधीक्षक, उप पुलिस अधीक्षक कार्यालय, जिला पूर्ति अधिकारी कार्यालय, जिला कार्यक्रम अधिकारी कार्यालय, विद्युत कार्यालय भदोही, जिला बेसिक अधिकारी कार्यालय सहित समस्त थानें, तहसील, विकास खण्ड, अधिशाषी अधिकारी कार्यालय सहित सभी विभागों द्वारा असंतुष्ट शिकायतों के संतुष्टि परक निस्तारण पर बल दिया गया।

संक्षेप

अब संविदा कर्मियों का भी होगा सामूहिक बीमा

भदोही। राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत विभाग में कार्यरत मानव संपदा पोर्टल पर पंजीकृत कर्मियों को सामूहिक बीमा का लाभ दिया जाएगा। इसके लिए प्रदेश स्तर से भी मुख्य चिकित्साधिकारियों को पत्र जारी कर निर्देशित किया गया है। इस आशय की जानकारी मुख्य चिकित्साधिकारी डॉक्टर सन्तोष कुमार चक ने दी। मुख्य चिकित्साधिकारी ने बताया कि मानव संपदा पोर्टल पर पंजीकृत कर्मियों का सामूहिक बीमा करने का फैसला प्रदेश स्तर पर किया गया है। इसके तहत जिले 684 संविदा कर्मी मौजूद है। जिले में वर्तमान में 06 सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र व 16 स्वास्थ्य केंद्र पर तैनात सभी संविदा कर्मियों की जानकारी 30 नवम्बर तक पोर्टल पर पंजीकृत करनी है। इसमें सीएचओ, स्टाफ नर्स व एएनएम पद के लोग शामिल होंगे। इस बारे में जिले के सभी अपर मुख्य चिकित्साधिकारियों समेत केन्द्रों प्रभारी चिकित्साधिकारियों को निर्देशित किया गया है। अपर मुख्य चिकित्साधिकारी डॉक्टर सुरेश सिंह ने बताया कि राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन के तहत कार्य करने वाले सभी संविदा कर्मियों का मानव संपदा पोर्टल पर नाम, पदनाम, जन्मतिथि, योग्यता, योगदान तिथि, लिंग, तैनाती का विवरण, विभाग से तय मानदेय सहित तमाम बिन्दुओं का जांच करने के बाद मानव संपदा पोर्टल पर 30 नवंबर तक अपडेट करने का निर्देश दिया गया है। पंजीकृत होने के बाद ही पंजीकृत कर्मियों को सामूहिक बीमा का लाभ दिया जाएगा।

पिकअप व बाइक की भिड़ंत में चालक की मौत, दो घायल

ज्ञानपुर। कोतवाली क्षेत्र के हास्टल चौराहे पर गुरुवार की दोपहर तेज रफ्तार की पिंकअप और बाइक के बीच हुई भिड़ंत में बाइक चालक की मौत हो गई, जबकि उसमें सवार दो अन्य गंभीर रूप से घायल हो गए। पुलिस ने घायलों को जिला चिकित्सालय चेतसिंह में भर्ती कराया, जहां एक की मौत हो गई। दोनों की हालत गंभीर देख चिकित्सकों ने अन्यत्र रेफर कर दिया। घटना के सम्बन्ध में मिली जानकारी के मुताबिक हॉस्टल चौराहे पर भदोही की तरफ से आ रही पिंकअप सामने से आ रही बाइक से सीधे जा टकराई। बाइक चालक गोपीगंज थाना क्षेत्र के बिरनई, भोपतपट्टी रवि बिंद (26) पुत्र अमृतलाल समेत साथ में सवार भाई–बहन राजू 28 वर्ष और रीमा 22 वर्ष पुत्रगण हरी लाल गंभीर रूप से घायल हो गए। सभी घायलों को उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया जहां इलाज के दौरान रवि की मौत हो गई। घटना की सूचना पाकर मौके पर पहुंचे परिजनों में हाहाकार मच गया। परिजनों के विलाप पर अन्य लोगों की आंखें भी नम हो जा रही थी। दोनों घायलों को चिकित्सकों ने रेफर कर दिया है।रवि के शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।

पराली जलाने पर लगेगा जुर्माना

ज्ञानपुर। उपकृषि निदेशक ने बताया कि प्रमोशन आफ एग्रीकल्चर मैकनाईजेश फार इन सी टू मैनेजमेटं आफ कप रेज्यड्यू योजना अंतर्गत फसल अवशेष प्रबंधन हेतु जागरूकता कार्यक्रम में फसल अवशेष जलाने से होने वाले दुष्परिणामो से किसानो को अवगत कराने तथा इसके न जलाने से भूमि में होने वाले लाभो से जागरूक करने के उद्देश्य से प्रत्येक विकास खण्ड में प्रचार वाहन को जिलाधिकारी के निर्देश पर पहुच रही है। जिसमें पराली जलाने से स्वास्थ्य खराब होता है और जीवाश्म कार्बन खत्म हो जाता है। मृदा में उर्वरा शक्ति नष्ट हो जाती है। जिससे पैदावार कम होती है। पराली जलाने से पकड़े जाने पर 2500 से 150000 तक जुमार्ना लगाया जायेगा।

पुण्य स्मृति में स्कूल के बच्चों में बांटा गया नोटबुक

सुजानगंज। स्व. मुरलीधर पाठक की द्वितीय पुण्यतिथि पर उनके पुत्र प्रमोद पाठक समाजसेवी द्वारा प्राथमिक विद्यालय के छात्र–छात्राओं में नोटबुक का वितरण किया गया जिसमें क्षेत्र के लगभग 50 विद्यालयों के छात्र–छात्राएं लाभान्वित हुए। प्रमोद पाठक गुजरात में उद्योगपति हैं और सुजानगंज ग्राम सभा सोनाहिता के निवासी हैं। प्रमोद पाठक ने अभी पिछले 8 नवंबर को एक विशाल कंबल वितरण का आयोजन कर लगभग 2000 जरूरतमंद लोगों में कंबल का वितरण भी किया था। कार्यक्रम को सफल बनाने में विशेष रुप से प्रतिष्ठित डॉक्टर वारिस अली व राष्ट्रीय पीजी कॉलेज के डॉक्टर सुनील मणि त्रिपाठी, आनंद तिवारी आदि लोगों का बड़ा सहयोग रहा।

गैंगस्टर अभियुक्त चढ़ा पुलिस के हत्थे

ज्ञानपुर। थाना ज्ञानपुर पुलिस को सफलता मिली है। एटीएम कार्ड बदलकर धोखाधड़ी करने जैसे अभियोग पंजीकृत गैंगेस्टर अभियुक्त के विरुद्ध कार्रवाई की गयी। गैंगेस्टर अभियुक्तों के विरुद्ध प्रभावी कार्यवाही हेतु विशेष अभियान चलाया जारहा है। कानून व्यवस्था को सुदृढ़ रखने के दृष्टिगत डॉ. अनिल कुमार पुलिस अधीक्षक भदोही के कुशल निर्देशन में अपराधियों के विरुद्ध लगातार प्रभावी कार्यवाही की जा रही है। पुलिस कार्यवाही के क्रम में गैंगेस्टर वांछित पुरस्कार घोषित अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के तहत थानाध्यक्ष ज्ञानपुर के नेतृत्व में गठित टीम द्वारा मुखबिर की सूचना के आधार पर थाना ज्ञानपुर पर पंजीकृत मुअस.222/2022 धारा. 3(1) यूपी गैंगेस्टर एक्ट के अभियोग से सम्बंधित वांछित अभियुक्त निवासी गनेशीपुर थाना हंडिया जनपद प्रयागराज को हॉस्टल चौराहा से गिरफ्तार कर विधिक कार्यवाही के उपरांत चालान न्यायालय किया गया। गिरफ्तारशुदा अभियुक्त के विरुद्ध एटीएम कार्ड बदलकर धोखाधड़ी व गैंगेस्टर एक्ट सहित कुल 3 गंभीर अभियोग पंजीकृत हैं।

जनसंदेश टाइम्स प्रा.लि.के लिए **प्रवीण कुमार कुशवाहा,** सी 28 /121, तेलियाबाग, प्रथम तल, वाराणसी से प्रकाशित एवं मीडिया टेक्स्ट (Media Text) प्रा.लि. प्रेस, रोहनिया, वाराणसी से मुद्रित।

प्रधान सम्पादक - सुभाष राय

स्थानीय सम्पादक -प्रवीण कुमार कुशवाहा पीआरबी एक्ट के अन्तर्गत समाचारों के चयन के लिए उत्तरदायी। इस समाचार पत्र में प्रकाशित समस्त समाचारों से सम्बन्धित विवादों का न्याय क्षेत्र वाराणसी होगा।

फोन नं. 8177008889

आरएनआई नं. **UPHIN/2012/46221**

डाक पंजीयन सं.: जीपीओएलडब्ल्यू / एनपी - 78/2011-13।

सरकारी अस्पताल में स्वास्थ्यकर्मी मरीजों संग कर रहे सौतेला व्यवहार

बोले दानिश सिद्दीकी

11 बजे के बाद आने वाले मरीजो की हॉस्पिटल में नहीं होती जांच

जनसंदेश टाइम्स

भदोही। नगर के प्रमुख समाज सेवी, वरिष्ठ सभासद, व समाजवादी बाबा साहेब भीम राव अम्बेडकर वाहिनी के प्रदेश सचिव मो. दानिश सिद्दीकी ने जिलाधिकारी, व मुख्य चिकित्साधिकारी का ध्यान आकृष्ट कराते हुए नगर के सरकारी अस्पताल महाराजा बलवंत सिंह चिकित्सालय भदोही मे तैनात चिकित्सको व कर्मचारियो के कार्य प्रणाली पर प्रश्न चिन्ह लगाया है।

दानिश सिद्दीकी ने अस्पताल के कार्यो से असंतुष्ट होकर कहा कि हमारे प्रदेश की सरकार चिकित्सा

सभासद दानिश सिद्दीकी

को लेकर काफी गम्भीर है और हर सुविधा मुहैय्या करा रही है मगर हमारे कर्मी ही ठीक से काम नही कर रहे है, जो शासन की मंशा के विपरीत है। उन्होने गम्भीर आरोप लगाते हुए कहा कि अस्पताल मे लैब है जहां मरीजों का ब्लड, यूरीन, कफ आदि सभी प्रकार की जांचें होती है और वो भी बस 11 बजे तक, उसके बाद आने वाले मरीजो की जांच नही की जाती और रिपोर्ट दूसरे दिन दी जाती है जो गलत है।

उन्होंने बताया कि इसकी शिकायत मौखिक रूप से कई बार अधिकारियो से की गयी परन्तु कोई सुधार होता नही दिख रहा है। डाक्टर दस बजे आते है और दो बजे उठ जाते है। ऐसे मे किसी मरीज ने डाक्टर को बारह बजे दिखाया और डाक्टर ने जांच पर्ची लिख दिया तो ऐसी मरीजो की जांच अगले दिन 11 बजे ही होगी। और रिपोर्ट उसके अगले दिन ही मिलेगा। ऐसी स्थिति मे बेचारे मरीज प्राइवेट जांच करवाने के लिए विवश हो जाता है। सभासद ने चेताया कि यदि हॉस्पिटल प्रशासन जल्दी ही इस पर कोई उचित कदम नही उठता है तो इसकी शिकायत सूबे के मुख्यमंत्री और स्वास्थ्य मंत्री से करेगे।

शातिर चोर सतीष उमर वैश्य की जमानत याचिका खारिज

ज्ञानपुर। पुलिस अधीक्षक डॉ. अनिल कुमार द्वारा दोषियों की जमानत निरस्तीकरण हेतु चलाए जा रहे विशेष अभियान के तहत फर्जी जमानतदारों के बल पर न्यायालय को गुमराह कर जमानत प्राप्त करने वाले अपराधियों की जमानत निरस्त कराने की लगातार कार्यवाही भदोही पुलिस द्वारा की जा रही है। एसपी द्वारा चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत थाना भदोही पुलिस की प्रभावी पैरवी के फलस्वरूप न्यायालय द्वारा शातिर चोर आरोपी सतीष उमर वैश्य उर्फ पोड़ई पुत्र विजयी लाल निवासी निवासी नई बाजार थाना व जिला भदोही की जमानत याचिका खारिज किया गया है। न्यायालय में मामले की सुनवाई के दौरान पुलिस की प्रभावी पैरवी, दलीलों व केस डायरी के अवलोकन से न्यायालय द्वारा उपरोक्त की जमानत निरस्त करते हुए अभियुक्त के विरुद्ध एनबीडब्ल्यू जारी किया गया।सतीष के विरुद्ध चोरी व एनडीपीएस एक्ट के कुल पाँच अभियोग पंजीकृत हैं।

महा कुम्भ और माघ मेले की तैयारी का निरीक्षण करने निकले डीआरएम

जाना हाल

विशेष सैलून से विंडो निरीक्षण करते पहुंचे प्रयागराज

पटरी पर चल रहे कार्य के दौरान दो मिनट रुकी विशेष सैलून

गोपीगंज। आगामी माघ मेला व महाकुंभ के मद्दे नजर गुरुवार को मंडल रेल प्रबंधक रामेश्वर पांडेय विशेष सैलून से वाराणसी प्रयागराज रेल खंड का विंडो निरीक्षण किया। रेलवे ट्रैक पर चल रहे कार्य के दौरान ट्रेनो को काशन के सहारे चलाया जा रहा है इसके चलते उनकी विशेष सैलून गोपीगंज स्थित ज्ञानपुर रोड स्टेशन पर रुक गई तो अधिकारियों कर्मचारियों के हाथ पाव फूलने लगे। गुरुवार को पूर्वोत्तर रेलवे के मंडल रेल प्रबंधक रामाश्रय पांडेय बनारस स्टेशन पहुचे जहां से विशेष सैलून से प्रयागराज रामबाग स्टेशन के लिए निकले। विंडो निरीक्षण करते हुए निकले डीआरएम की विशेष ट्रेन ज्ञानपुर रोड स्टेशन पर दो मिनट के लिए रुक गई। बताया जाता है कि आगे आने वाले महा कुंम्भ और माघ मेले को लेकर डीआरएम तैयारी की समीक्षा बैठक लेने के लिए प्रयागराज जा रहे थे और वाराणसी से सीधे प्रयागराज पहुचना था। लेकिन ज्ञानपुर रोड के पश्चिमी तरफ पटरी पर कार्य होने के चलते पिछले दो दिनों से सभी ट्रेनों को काशन पर लेकर छोड़ा जा रहा है उसी क्रम में डीआरएम की विशेष सैलून भी दो मिनट रुक गयी थी। इस दौरान रेलवे कर्मचारी तब तक दौड़ते भागते नजर आए जब तक सैलून गन्तव्य की ओर नही निकल गयी।

समाजसेवी तेगा सिंह ने उद्घाटन शिलापट्ट को दिलाया उचित स्थान

ज्ञानपुर। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी पार्क का उदघाटन समारोह का शिलापट्ट लावारिस हाल में पड़ा था।गुरुवार को वरिष्ठ समाजसेवी तेगा सिंह ने शिलापट्ट को उचित स्थान पर लगवाया। शिलापट्ट को उचित स्थान दिलाने के लिए सामाजिक कार्यकर्ता तेगा सिंह संकल्प लिए थे। तेगा सिंह ने बताया कि यह शिलापट्टा सन 2002 में डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी पार्क में तात्कालिक सांसद रामरति बिन्द द्वारा डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी सभागार का निर्माण कराया गया था। समागार के निर्माण के पहले भूमि पूजन करके शिलान्यास का शिलापट्ट लगाया गया था, परन्तु समागार के निर्माण के बाद निर्माण इकाई द्वारा न तो शिलान्यास का शिलापट्ट एवं उद्धाटन का शिलापट्ट जो लगता है उसे उचित स्थान पर नही लगाया गया था। उद्धाटन का शिलापट्ट गायब है। शिलान्यास का शिलापट्ट सामुदायिक शौचालय के पास महीनो से उचित स्थान के तलाश में पड़ा था। गुरूवार को तेगा सिंह के प्रयास से शिलापट्ट को उचित स्थान पर लगाया गया।

सब्जियों के पौधों की मांग में तेजी

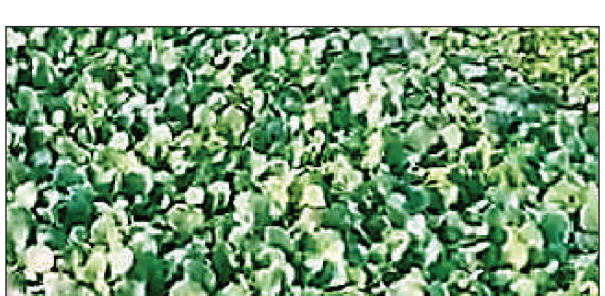

जनसंदेश न्यूज

जौनपुर। इस समय खेती में सब्जियों के पौधों जैसे गोभी टमाटर, बैंगन ब्रोकली, शिमला मिर्च आदि के पौधों का रोपण का कार्य ग्रामीण इलाकों में किसान कर रहे हैं। जिस कारण इनकी मांग बढ़ी हुई है।

यह विकास खंड मछलीशहर के करौदी गांव का मछलीशहर जंघई मार्ग पर स्थित नर्सरी का दृश्य है। जहां प्याज के पौधे की नर्सरी की तैयारी में लोग लगे हुये हैं। बागवानी के पौधों की मांग बरसात के बाद कम हो गई है लेकिन सब्जियों के पौधों की मांग बरकरार है। नर्सरी के मालिक चन्दन गुप्ता कहते हैं कि इस समय बागवानी के पौधों की तुलना में सब्जियों के पौधों की मांग ज्यादा चल रही है। उनका ध्यान इस समय प्याज की नर्सरी तैयार करने पर अधिक है जैसे- जैसे ठंड बढ़ती जायेगी वैसे- वैसे सब्जियों के पौधों की मांग घटती जायेगी। ऐसे में उनको प्याज की नर्सरी से अच्छा लाभ मिलने की उम्मीद है क्योंकि जैसे ही अगेती आलू की फसल की खुदाई की जायेगी तो खाली खेतों में किसान प्याज की रोपाई जोरों पर करेंगे।

नगरीय निकाय निर्वाचन के लिए प्रभारी अधिकारी नियुक्त

जौनपुर। जिला मजिस्ट्रेट/जिला निर्वाचन अधिकारी मनीष कुमार वर्मा द्वारा नगरी निकाय सामान्य निर्वाचन 2022 को सकुशल एवं शांतिपूर्ण ढंग से संपन्न कराए जाने हेतु प्रभारी अधिकारी/सहायक प्रभारी अधिकारी की नियुक्ति की गई है। उन्हाने पूर्व में नियुक्त सहायक प्रभारी अधिकारी कंट्रोल रूम जिला प्रोबेशन अधिकारी के स्थान पद दिव्यांग कल्याण अधिकारी को सहायक प्रभारी अधिकारी कंट्रोल रूम बनाया है। जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी को सहायक प्रभारी अधिकारी कंट्रोल रूम बनाया गया था, उनकी जगह पर अभिषेक द्विवेदी बाल विकास परियोजना अधिकारी करंजाकला को सहायक प्रभारी अधिकारी कंट्रोल रूम नियुक्त किया है। जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी को सहायक प्रभारी अधिकारी मतदान/मतगणना कार्मिक प्रशिक्षण एवं जिला विद्यालय निरीक्षक को सहायक प्रभारी अधिकारी मतदान /मतगणना कार्मिक प्रशिक्षण नियुक्त किया है।

संक्षेप

सांसद के हाथों गरीबों में वितरित किए गए कंबल

गरीबों को कम्बल वितरित करते सांसद बीपी सरोज

बरसठी। विकासखंड के चंदभानपुर गांव के प्रधान संघ के अध्यक्ष गजेंद्र दुबे की माता इंद्रावती देवी की पुण्यतिथि पर जरूरतमंदों को कंबल वितरित किए गए। गजेंद्र दुबे ने अपनी माता की पुण्यतिथि पर कार्यक्रम रखकर मछलीशहर सांसद बीपी सरोज के हाथों गरीबों को कंबल वितरित कराया और वहीं पर कंबल पाकर गरीबों को चेहरा खिल उठा कि ठंड शुरू होते ही हम लोगों को बचने के लिए कंबल मिले। कुल 200 लोगों को कंबल वितरित किए गए। कार्यक्रम में खंड विकास अधिकारी प्रवीण त्रिपाठी, थानाध्यक्ष दिनेश कुमार, भाजपा नेता नीतीश कुमार बिंद, अवधेश शुक्ला सहित तमाम लोग उपस्थित रहे।

संस्थापक की पुण्यतिथि पर प्रार्थना सभा आयोजित

शाहगंज। अब्दुल अजीज अंसारी डिग्री कालेज के संस्थापक मिर्जा अनवर वेग की पुण्यतिथि पर गुरुवार को महाविद्यालय में प्रार्थना सभा आयोजित हुई। सभा में सभी धर्मों के अनुरूप संस्थापक को प्रार्थना कर श्रद्धांजलि दी गई। प्राचार्य डा. एनपी उपाध्याय ने संस्थापक के कृतित्व व व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। कहा प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद क्षेत्र में इण्टर कालेज एवं डिग्री कालेज की स्थापना कर शिक्षा का अलख जगाया। इस दौरान प्रमुख रुप से डा. सलीम खान, डा. तसलीमा, आशीष कुमार अस्थाना, संदीप यादव, आफरीन, अनुपम आदि प्रवक्ता एवं छात्र छात्राएं मौजूद रहीं।

छूटे हुए विद्यार्थियों के लिए परीक्षा का आयोजन

भदोही। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. मुरलीधर राम ने बताया कि विश्वविद्यालय द्वारा स्नातक और स्नातकोत्तर की प्रायोगिक और मौखिक परीक्षाओं के लिए एक और मौका छात्रों को दिया जा रहा है। स्नातक द्वितीय सेमेस्टर और स्नातक द्वितीय वर्ष और तृतीय वर्ष के जिन परीक्षार्थियों की प्रायोगिक मौखिक परीक्षा छूट गई है अथवा अनुपस्थित रहे हैं। ऐसे विद्यार्थी महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ वाराणसी के शुल्क काउंटर पर 2000 फीस जमा कर रशीद प्राप्त कर काशी नरेश राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय ज्ञानपुर प्राचार्य कार्यालय से शीघ्र अति शीघ्र संपर्क कर परीक्षा की तिथि जानकर अपनी प्रायोगिक और मौखिक परीक्षा शीघ्र करा लें। अन्यथा की स्थिति में ऐसे विद्यार्थियों का परीक्षा फल घोषित नहीं हो सकेगा जिसके लिए वह स्वयं जिम्मेदार होंगे।

डिप्टी सीएमओ ने छापेमारी कर पैथोलॉजी में जड़ा ताला

खेतासराय। डिप्टी सीएमओ ने स्वास्थ्य विभाग की टीम के साथ गुरुवार को अलग पैथोलॉजी और डायग्नोस्टिक सेंटर पर छापेमारी की। मानीकला में एक पैथोलॉजी पर पर्याप्त कागजात न मिलने पर ताला जड़ दिया गया। वहीं सोंधी के एक डायग्नोस्टिक सेंटर के डाक्टर से संबधित कागजात सीएमओ आफिस दिखाने को कहा गया है। डिप्टी सीएमओ डा. संतोष कुमार जायसवाल को शिकायत मिली थी कि मानीकला में अवैध रूप से एक पैथोलॉजी सेंटर संचालित है। शिकायत की जांच करने वह दोपहर बाद वह पीएचसी सोंधी पहुंचे। एमओआईसी डा. रमेश चंद्रा को साथ लेकर पास के एक डायग्नोस्टिक सेंटर पर पहुंचे। यहां जांच करने के बाद डाक्टर को संबधित कागजात लेकर सीएमओ कार्यालय दिखाने को कहा। यहां से मानीकला स्थित साईं पैथोलॉजी सेंटर पर पहुंचे। स्वास्थ्य विभाग की टीम देख पैथोलॉजी संचालक फरार हो गया जिसमें ताला लगाने के बाद स्वास्थ्य विभाग की टीम वापस चली गई। एमओआईसी डा. रमेश चंद्रा ने बताया कि जांच रिपोर्ट सीएमओ को सौंप दी जाएगी।

खड़ी ट्रक से टकराकर बाइक सवार की मौत

बभनी। स्थानीय थाना क्षेत्र के नधिरा से बकरिहवा मार्ग पर गुरूवार की शाम को खड़ी ट्रक से टकराकर बाइक सवार 50 वर्षीय व्यक्ति की मौके पर मौत हो गयी।सुचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे मे लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया।महरिकला निवासी 50 वर्षीय रामअधिन पुत्र स्व शिवधारी गुरुवार की सांय ससुराल गांव नधिरा मे अन्त्येष्टि कार्यक्रम मे आया था।वहा से वापस घर जा रहा था कि नधिरा से बकरिहवा मार्ग के बैरागो मोड़ पर खड़ी ट्रक मे पीछे से टक्कर मार दी जिससे मौके पर राम अधीन की मौत हो गयी।मृतक अपने ससुराल गांव नधिरा मे अन्त्येष्टि कार्यक्रम मे आया था।घटना की सुचना पर प्रभारी निरीक्षक मनोज कुमार सिंह घटना स्थल पर पहुंच गये और मामले की जानकारी के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र दुद्धी भिजवा दिया।

एएसपी ने यातायात नियमों के प्रति छात्राओं को किया जागरूक

सोनभद्र। यातायात माह के क्रम में गुरुवार को सन्त किनाराम गर्ल्स पोस्ट ग्रेजुएट कालेज में यातायात जागरुकता सम्बन्धित कार्यक्रम में अपर पुलिस अधीक्षक मुख्यालय कालू सिंह द्वारा छात्राओं को यातायात के नियमों के बारे में जानकारी देकर नियमों का पालन करने हेतु प्रेरित किया गया। इस दौरान छात्राओं को बिना वैध ड्राइविंग लाइसेंस, हेलमेट, सीट बेल्ट, खतरनाक ढंग से वाहन न चलाने, वाहन चलाते समय मोबाइल का इस्तेमाल न करने, नशे की स्थिति में वाहन न चलाने, वाहनों पर स्टंट न करने हेतु प्रेरित किया गया। कार्यक्रम में पुलिसकर्मी समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

अंतरराष्ट्रीय दृष्टि बाधित क्रिकेट खिलाड़ी चंदन कुमार का हुआ सम्मान

शक्तिनगर। एनटीपीसी सिंगरौली द्वारा सीएसआर योजना के अंतर्गत अंतरराष्ट्रीय दृष्टिबाधित क्रिकेट खिलाड़ी चंदन कुमार का सम्मान किया गया। बसुराज गोस्वामी मुख्य महाप्रबंधक एवं जयिता गोस्वामी अध्यक्षा वनिता समाज द्वारा चन्दन कुमार को उपहार स्वरूप क्रिकेट किट भेंट कर उनके उज्ज्वल भविष की कामना की गई। खिलाड़ी चंदन कुमार, चिल्काडांड ग्राम निवासी हैं। वे वर्ष 2017 से लगातार राष्ट्रीय स्तर पर खेल रहे हैं। वर्ष 2018 में इंडिया एवं इंग्लैंड के क्रिकेट मैच में प्रतिभागिता कर चन्दन कुमार ने भारत को शानदार जीत दिलाई थी। चन्दन कुमार अब तक कुल 24 मैच खेल चुके हैं। बसुराज गोस्वामी ने चन्दन कुमार को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट टीम में भारत का प्रतिनिधित्व करने हेतु हार्दिक बधाई दी। चंदन ने एनटीपीसी सिंगरौली द्वारा क्रिकेट किट प्रदान करने के लिए आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम में ओम प्रकाश, वरिष्ठ प्रबंधक मानव संसाधन, चितरंजन बेहरा, सौरभ कुमार, कुमार आदर्श, हीरा लाल, वनिता समाज की वरिष्ठ सदस्याएं समेत तमाम लोग उपस्थित रहे।

अज्ञात वाहन के धक्के से बाइक सवार घायल

डाला। स्थानीय चौकी क्षेत्र के अघोर सेवा सदन पर गुरुवार की सायंकाल साढ़े छ बजे अज्ञात पिकअप की टक्कर से मोटरसाइकिल सवार एक युवक गंभीर रूप से घायल हो गया, घायल युवक को स्थानीय लोगों की मदद से चोपन सामुदायिक अस्पताल ले जाया गया।41 वर्षीय मनोज पटेल पुत्र स्व राम गोपाल निवासी नई बस्ती डाला को अज्ञात वाहन ने पीछे से टक्कर मार दी, टक्कर लगते ही बाईक सवार कुछ दूर जाकर गिर गया। दुर्घटना होते ही आसपास के लोग एकत्र हो गए और घायल मनोज को चोपन सामुदायिक अस्पताल ले जाया गया जहां चिकित्सकों ने घायल युवक की गंभीर स्थिति को देखते हुए जिला अस्पताल रेफर कर दिया।

गांव के युवक पर किशोरी के भगाने का मुकदमा दर्ज

सुरियावा। स्थानीय थाना अंतर्गत एक सत्रह वर्षीय किशोरी के पिता ने गांव के ही एक युवक के खिलाफ सुरियावा थाने में तहरीर देकर किशोरी के भगाने का मुकदमा दर्ज कराया हैं। उन्होंने बताया कि उनकी पुत्री को 22 नवम्बर की दोपहर को उक्त युवक बहला–फुसलाकर कहीं भगा ले गया है। जिसकी सूचना पर सुरियावां पुलिस द्वारा सुसंगत धाराओं में मुकदमा पंजीकृत कर अग्रिम कार्यवाही की जा रही हैं।

सत्तर साल की उम्र में भी कर रहे हैं संगीत साधना

पद्म अलंकरण सम्मान की कोई कामना नहीं

उम्र का आखिरी पड़ाव भी सुर संगीत में ही गुजरे

प्रख्यात तबला वादक पं. पूरण महराज से खास मुलाकात

'पापा चाहते थे कि हम बैरिस्टर या डॉक्टर बनें'

राधेश्याम कमल

महज 18 वर्ष की उम्र में कोलकाता की प्रसिद्ध संस्था जलसा घर में आयोजित कार्यक्रम में उस्ताद अली अकबर खां अपने सुपुत्र उस्ताद ध्यानेश खां के साथ सरोद पर थे,जबकि तबले पर तबला सम्राट पं. किशन महराज के पुत्र पूं. पूरण महराज रहे। पं. पूरण महराज को शास्त्रीय संगीत के गायन-वादन व नर्तन के कई दिग्गज कलाकारों के साथ संगत करने का मौका मिला। इनमें कई नामचीन कलाकारों में प्रख्यात गायक पद्मभूषण स्व. पं. जसराज, प्रख्यात गायिका पद्मविभूषण स्व. गिरिजा देवी, शहनाई के शांहशाह भारतरत्न उस्ताद बिस्मिल्लाह खां, पद्मभूषण पं. राजन-साजन मिश्र, स्व. पं. वीजी जोग (बेला)उस्ताद अमजद अली खां व उस्ताद आशीष खां (सरोद) उस्ताद रईस खां व उस्ताद शाहिद परवेज (सितार) पं. शिवकुमार शर्मा (संतूर), पं. हरि प्रसाद चौरसिया (बांसुरी), पं. बृजभूषण काबरा व विश्व मोहन भट्ट (मोहन वीणा), एन. राजम (वायलिन), मणिलाल नाग, तथा कथक नृत्य में पं. विजय शंकर, श्रीमती उर्मिला नागर, जयकिशन महराज, पं. राम मोहन,पं. मोहन कृष्ण, रामकृष्ण, सुश्री अन्नपूर्णा व मधु रानी मिश्रा के साथ तबले पर संगत कर चुके हैं। पद्मविभूषण तबला सम्राट पं. किशन महराज के एकमात्र पुत्र पं. पूरण महराज से उनके कबीरचौरा स्थित आवास पर लंबी बातचीत करने का मौका मिला। बातचीत के दौरान जब उनसे यह सवाल किया गया कि अगर आप तबला वादक नहीं होते तो फिर किस क्षेत्र में होते? इस पर पं. पूरण महराज ने कहा कि पापा की बहुत ही इच्छा थी कि हम बैरिस्टर या चिकित्सक बनें लेकिन हम पापा की इस इच्छा को पूरी नहीं कर सके। अगर हम तबला वादक नहीं होते तो जरुर इनमें से कुछ न कुछ बन गये होते।

जनसंदेश टाइम्स

खास मुलाकात

5 साल की उम्र में बंधवाया गंडा

स्व. पं. किशन महराज के सुपुत्र 70 वर्षीय पं. पूरण महराज बताते हैं कि संगीत उन्हें विरासत में मिला है। महज पांच साल की उम्र में उन्होंने दादा पं. कंठे महराज से गंडा बंधवाया। 69 में दादा कंठे महराज के निधन के बाद पिता पं. किशन महराज के निर्देशन में रियाज करता रहा। वे याद करके बताते हैं कि पापा ने यह शर्त लगा दी कि जेब खर्च तभी देंगे जब 7-8 घंटे रियाज करोगे। इस पर हम रोज 7-8 घंटे तक रियाज करते थे। उनके कमरे की दीवारों पर बनारस बाज तबले के महागुरु स्व. पं. कंठे महराज, भैरव सहाय, पं. किशन महराज के तैल चित्र टंगे हुए हैं। यह वही कमरा है जहां पर पं. पूरण महराज अपने दादा स्व. कंठे महराज के साथ घंटों रियाज किया करते थे। तबले की शुरूआत कैसे हुई? पं. पूरण महराज ने बताया कि युवा होने पर उनके पिता काफी व्यस्त होते गये। उनको अक्सर बाहर जाना पड़ता था।दादाजी स्व. पं. हरि महराज थे। उनके बड़े भाई स्व. कंठे महराज जो मेरे पिता के गुरू थे। वही पाल पोस कर मेरे पिता स्व. किशन महराज को बढ़ा किया था। पापा ने मुझे उनके शिष्यत्व में डाल दिया। पापा चूंकिबहुत व्यस्त रहते थे इसलिए हम अपने दादा (कंठे महराज) के पास रह कर ही सब कुछ सीखे। हालांकि दादा के साथ रहते हुए भी बहुत कुछ पापा से सीखा।लेकिन पापा व दादा के सीखाने में बहुत अंतर था। पापा बहुत सख्ती से सीखाते थे और गलती होने पर पिटाई करते थे। दादा जी हमको छोटा बोल, बड़ा बोल व काफी बड़ा बोल सीखा कर लिखवा देते थे। हमें याद कर उन्हें सुनाना पड़ता था।

तबला व पुरस्कारों से भरा पड़ा है कमरा

तबला वादक पं. पूरण महराज कमरे में तबले पर रियाज करते हुए मिले। पूरा कमरा शील्ड व जगह- जगह मिले पुरस्कारों से भरा पड़ा है। सम्मान इतना कि कमरे में शील्ड रखने की भी जगह नहीं बची थी। कमरे में दो दर्जन से अधिक तबला भी पड़ा है। इनमें इनके पिता स्व. पं. किशन महराज का भी तबला है। जिस पर पं. पूरण महराज अपने शिष्यों के साथ दो घंटे तक रियाज करते हैं। वे बताते हैं कि पहले वह सात से आठ घंटे तक तबले पर रियाज किया करते थे लेकिन अब यह रियाज सिर्फ दो घंटे का ही रह गया है।

इनाम में मिलती थी अठन्नी

उस समय पैसों की बहुत कीमत थी। छोटे बोल पर जैसे कोई चलन या कोई खास बाट या रेला आदि का इनाम आठ आना मिलता था। उससे बड़े ।बेल जैसे टुकड़े-मुखड़े -गत-फर्द याद करने पर एक रूपया मिलता था। सस्ती के जमाने में मेरी यही कमाई थी। वे बताते हैं कि गुरु बड़े भाग्य से पैसा मिलता है। मैंने उनसे बनारस घराने की समृद्धपरम्परा की कई चीजें पायी। दादा कंठे महराज रोजाना 24 घंटे में से 14- 15 घंटे तबले पर रियाज करते थे। पहले यह कमरा मिट्टी का था। जब वह रियाज करते थे तो उनके पसीने से कमरा भींग जाता था। दादा की मुझ पर इतनी कृपा थी कि मेरे बीमार पड़ जाने पर वह भी अन्न त्याग देते थे। एक बार जब मुझे टायफाइड हुआ तो दादा मेरे साथ हमेशा रहते थे ।दादा का एक अगस्त 1969 को निधन हो गया। वे बताते है ंकि मेरा पहला कार्यक्रम 1972 में कोलकाता में उस्ताद अली अकबर खं व उनके सुपुत्र उस्ताद ध्यानेश खा् की सरोद की युगलबंदी के साथ हुईजिसमें तबले पर पापा के संग हम भी रहे। हमें पं. जसराज ने बुला कर अपने कार्यक्रम कराया। पं. पूरण महराज की दो पुत्रियां भी हैं जिनमें अवन्तिका पूरण महराज (11 वर्ष) की है जबकि दूसरी अवनी मिश्रा (18 वर्ष की हैं। अवन्तिका पूरण महराज तबला वादव करती हैं। पूरण महराज के शिष्यों में पं. नंदन मेहता की सुपुत्री हेतल मिश्रा, निहार मेहता फ्रांस,विनीत व्यास कनाडा व देवनारायण मिश्र, भवेश मालवीय आदि कई हैं।

इक रात में सौ बार जला और बुझा हूं...

मुफलिस का दीया हूं मगर आंधी से लड़ा हूं...

गंगा-जमुनी भाषा व तहजीब के नायक थे शायर नजीर बनारसी

बेनजीर बनारस के नजीर बनारसी की यौमे पैदाइश 25 नवम्बर शायद इस बार भी तकरीबन खामोशी की चादर में लिपटी रहेगी। हैरत है इस सन्नाटे पर । इस शहर को ये सवाल अक्सर बेचैन करता है कि जिस अदबी शख्सियत का शुमार नज्म और गजल के मारूफ तरीन शाइरों में होता है, जिसकी रचनाएं बनारसी तहजीब की दस्तावेज हैं और जिसने फिरकापरस्ती पर बराबर खुली चोट की हो उससे जुड़ीं तारीखों पर इतना ठंडापन क्यों ? नजीर साहब ने बनारसीपन को टूटकर जिया। उन्होंने अपनी नज्मों के मौजूआत इस शहर की दरो दीवार पर बिखरे जिंदगी के हकीकी रंगों से चुने । ये लाइनें नजीर ही लिख सकते थे, जो अब बेनजीर हैं ...

सोयेगें तेरी गोद में एक दिन मरके ,
हम दम भी जो तोड़ेंगे तेरा दम भर के,
हमनें तो नमाजें भी पढ़ीं हैं अक्सर ,
गंगा तेरे पानी से वजू करके ।

अब जरा बनारस की दिलकश गलियों से उनकी आशिकी देखिये , हर लफ्ज बयां करता है बनारसी तहजीब और रवायत और खुसूसियत ...

हर गाम पे हुशियार बनारस की गली में ,
फितने भी हैं बेजार बनारस की गली में ।
ऐसा भी है बाजार बनारस की गली में ,
बिक जाएं खरीदार बनारस की गली में।
हुशियारी से रहना नहीं आता जिन्हें इस पार,
हो जाते हैं उस पार बनारस की गली में ।
सड़कों पे दिखाओगे अगर अपनी रईसी,
लूट जाओगे सरकार बनारस की गली में।
हैरत का ये आलम है कि हर देखने वाला,
है नक्श ब दीवार बनारस की गली में ।
मिलता है निगाहों को सुकूँ हृदय को आराम,
क्या प्रेम है क्या प्यार है बनारस की गली में ।
शंकर की जटाओं की तरह साया फिगन है,
हर साया ए दीवार बनारस की गली में
गर स्वर्ग में जाना हो तो जी खोल के खरचो ,
मुक्ति का है व्योपार बनारस की गली में ।

नजीर साहब की नजर में बनारस की खाक भी पारस है। उन्होंने बेलौस लिखा ...

खाक भी जिस जमीं का पारस है
शहर मशहूर यह बनारस है ।

अपनी गजलों , नज्मों, कलामों में उन्होंने ऐसा कुछ भी नहीं छोड़ा जिसका ताल्लुक बनारस से हो । वो चाहे गंगा की पाकीजगी हो या बाबा विश्वनाथ का अकीदा , मंदिरों की घण्टी हो या मस्जिदों की अजान । सबको समेटा , सब पर पूरी गहराई और संजीदगी से लिखा ।आज भी उसका हर कतरा दिल को छू जाता है । ऐसे अजीम शायर को खिराजे अकीदत पेश करने में कोताही न सिर्फ अंदर से कचोटती है बल्कि हमसब को शर्मसार भी करती है । इस शहर में उर्दू अदब की दुनिया से लगाव रखने वालों से निहायत अदब से गुजारिश है कि नजीर की बेनजीरी से नई पीढ़ी को वाकिफ कराने के लिए कुछ बड़ा , कुछ खास करने की पहल करें । ये इस शहर और यहां के अदबी लोगों का फर्ज बनता है और नजीर साहब इसके मुश्तहक हैं । उम्मीद है कि अगली बार ऐसा ठंडापन , ऐसी खामोशी , ऐसा सन्नाटा टूटेगा । मेरे दिलो दिमाग में उनकी ये लाइनें आज भी गूंजती हैं ...

मेरे बाद ए बुताने-शहर- काशी,
मुझ ऐसा अहले ईमां कौन होगा !
करे है सजदा-ऐ- हक बुतकदे में,
'नजीर' ऐसा मुसलमां कौन होगा ?

शहर के साहित्यकार व गजलकार जवाहर लाल शास्त्री चंचल एडवोकेट बताते हैं कि काशी के पांडे हवेली मुहाल के पुश्तैनी हकीम परिवार में 25 नवम्बर 1909 को जन्मे नजीर अहमद जो नजीर बनारसी के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनके वालिद हकीम मूर मोहम्मद व मां कुलसुम बीबी थी। उनके बड़े भाई हकीम यासीन मसीह के अच्छे शायर थे। नजीर साहब की जिंदगी सुधारेन में उनका बड़ा हाथ था। नजीर साहब की कविताएं, गजलें काफी चर्चित रही हैं। इनकी गजलों का राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री से लेकर हर ***किसी ने प्रशंसा की है। उनकी कुछ शायरी-***

अंधेरा हमसे मांगने आया था रोशनी की भीख,
हम अपना घर न जलाते तो और क्या करते।
बदगुनामी को बढ़ा कर तुमने ये क्या कर दिया,
खुद को तन्हा हो गये, हमको भी तन्हा कर दिया।
सोयेंगे तेरी गोद में एक दिन मर के,
हम दम भी जो तोड़ेगे तेरा दम भर के।

सुबह-ए-बनारस में मालिनी अवस्थी ने किया भावविभोर

कई विशिष्टजनों का हुआ सम्मान

सुबह-ए- बनारस का नौवां वार्षिकोत्सव

'मोहन जागो भोर की चिड़िया बोलन लागी...'

सुबह- ए- बनारस आयोजन के नौंवे आरम्भ दिवस के उपलक्ष्य में गुरुवार को भव्य समारोह साकार हुआ। जिसके अंतर्गत प्रभाती में पद्मश्री मालिनी अवस्थी का सुमधुर गायन सम्पन्न हुआ। आरम्भ में पद्मश्री मालिनी अवस्थी पद्मभूषण प्रो वशिष्ठ नारायण त्रिपाठी एवं सुबह बनारस के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. राजेश्वर आचार्य, पूर्व मेयर रामगोपाल मोहले तथा लोक गायिका पद्मश्री अजिता श्रीवास्तव एवं ख्यात चिकित्सक पूर्व कुलपति किंग जॉर्ज चिकित्सा विश्वविद्यालय पद्मश्री प्रो. सरोज चूड़ामणि गोपाल साथ मे पद्मश्री एवं कृषि विज्ञानी चंद्रशेखर ने दीप प्रज्वलित किया। इसी क्रम में लक्ष्मी नारायण के नेतृत्व में सप्त बटुकों ने आरती का शुभारंभ किया । इसी के साथ संजीवनी के नेतृत्व में पाणिनि कन्या महाविद्यालय की ऋषिकाओं ने वैदिक ऋचाओं के स्तवन के साथ यज्ञ का संचालन किया। जिसमें श्रद्धालुओं सहित विशिष्टजनो ने यज्ञ में समिधा रूपी आहुति अर्पित की। इसके उपरांत मा गंगा को पुष्पांजलि अर्पित की गयी अब समय आ गया प्रभाती में राग अर्पण का जिसमे अतिथि कलाकार थी पद्मश्री विदुषी मालिनी अवस्थी जिन्होंने प्रथम बार गंगा तट अपनी हाजिरी लगाई । उनके साथ तबला संगति रही पं कुबेर मिश्र की एवं संवादिनी पर साथ दिया बनारस घराने के वरिष्ठ कलाकार पं धर्मनाथ मिश्र ने । तानपुरा संगति रही सुश्री पूजा राय की थी। मालिनी अवस्थी ने ब्रह्म महूर्त में राग अहीर भैरव के अंतर्गत विलम्बित एकताल में निबद्ध बंदिश की भावपूर्ण प्रस्तुति में ब्रह्म मुहूर्त के इस राग में निहित शांत और कोमल दोनो भावों की कुशल अभिव्यक्ति रही बोल थे- मेरो मन मोहे जोगिया। बंदिश के बोल थे इसके उपरान्त द्रुत तीनताल में निबद्ध बंदिश के माध्यम से भक्ति रस का सृजन किया बंदिश के बोल थे- उठहूँ गोपाल भोर की चिरइया बोलन लागे्। इसके उपरान्त श्रोताओ के विशेष आग्रह पर उन्होंने अपने गुरु विदुषी पद्मविभूषण विदुषी गिरिजा देवी की प्रिय ठुमरी के मधुर गायन से बनारस के पारंपरिक संगीत से सबके मन को रससिक्त कर दिया जिसके बोल थे पिया के मिलन की आस। इसीके साथ एक और दादरा जिसके बोल थे गंगा तीरे बंगला छवाई द मोरे राजा की कर्ण प्रिय गायन से सभी के चित्त में लय स्वर की अनुगूंज प्रवाहित किया। मालिनी अवस्थी को प्रमाणपत्र पद्मश्री डॉ. राजेश्वर आचार्य ने प्रदान किया। प्रभाती की दूसरी हृदयस्पर्शी प्रस्तुति स्वीजरलैंड की निवासिनी कथक नृत्य कलाकार मीरा द्वारा बनारस के पारंपरिक दादरा पर आधारित कथक नृत्य की प्रस्तुति रही। बोल थे रंगी सारी गुलाबी चुनरिया जिसमें पद्मश्री मालिनी नृत्य में दादरा का गायन मणि कंचन संयोग रहा ।

प्रभाती की द्वितीय प्रस्तुति के अंतर्गत कथक नृत्य में तबला संगति रही राम कुमार मिश्र एवं संवादिनी पर साथ दिया गौरव मिश्र ने तथा बोल पठंत पर सुश्री मीरा के गुरु पं रविशंकर मिश्र ने संगत की। आयोजन के आरम्भ में कार्यकम की निरंतरता के विषय मे संक्षिप्त परिचय दिया सुबह ए बनारस के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ राजेश्वर आचार्य ने एवं स्वागत किया सुबह ए बनारस के संस्थापक सचिब डॉ रत्नेश वर्मा ने तथा धन्यवाद ज्ञापित किया। सुबह-ए- बनारस के उपाध्यक्ष प्रमोद मिश्र ने एवं अतिथियो का संम्मान किया। इस अवसर प्रमुख रूप से पूर्व संस्कृति मंत्री डॉ नीलकंठ तिवारी, पूर्व मेयर वाराणसी राम गोपाल मोहले एवं बाबा हरिहर रामजी अघोर संत एवं सदस्य पं दीपक मिश्र तथा योगिराज पं विजय प्रकाश मिश्र तथा चित्रकार मनीष खत्री पाणिनि कन्या महाविद्यालय की प्राचार्या नंदिता शास्त्री तथा एच डी एफ सी बैंक के अधिकारी मनीष टंडन तथा एम जी राय एवं वाराणसी विकास समिति के प्रमुख व्यवसायी आर के चौधरी तथा गायक कलाकार पं देवाशीष डे तथा पूर्व निदेशक आई एम एस बी एच यू चिकित्सक प्रो टी एम महापात्र वरिष्ठ सदस्य सुबह ए बनारस रमेश तिवारी तथा कोषाध्यक्ष सुनील शुक्ला एवं सदस्य सुबह ए बनारस अजय गुप्ता तथा मंजू मिश्रा श्याम केसरी यू पी सिंह, देवेंद्र मिश्र, कृष्णमोहन पांडेय, कैलाश बर्मन, जयप्रकाश मित्तलू, अमर अग्रवाल, ज्योतिषविद पं. हरेंद्र उपाध्याय , दिलीप गुप्ता, अशोक मिश्र आदि विशिष्टजन उपस्थित रहे ध्वनि व्यवस्था में सहयोग रहा संतोष का। इस अवसर पर महिला सदस्यों में प्रमुख रही मंजू गुप्ता विभा शुक्ला सीमा केसरी डॉ. शिवानी शुक्ला डॉ. रागिनी सरना, अर्चना अग्रवाल आदि प्रमुख रहीं। संचालन डॉ. प्रीतेश आचार्य ने किया। इस अवसर पर सुबह ए बनारस के आयोजन से जुड़े समर्पित लोगों को सम्मानित किया गया।

सर्वप्रथम प्रभाती की मुख्य कलाकार पद्मश्री मालिनी अवस्थी को उनका हस्त निर्मित छवि चित्र साथ में अंगवस्त्रम एवं पुष्पगुच्छ प्रदान कर सुबह-ए-बनारस के अध्यक्ष पद्मश्री डॉ. राजेश्वर आचार्य ने सम्मानित किया। अन्य सम्मानित लोगों में प्रमुख रहे। मंजू मिश्रा, मंजू गुप्ता , सरोजनी महापात्रा एवं सीमा केसरी तथा योगगुरु पं. विजय प्रकाश मिश्र संचालक डॉ. प्रीतेश आचार्य रहे। इस अवसर पर सुबह ए बनारस के अध्यक्ष ने कहा कि मालिनी की साधना यात्रा का मैं तब से साक्षी रहा हूँ जब वो बाल अवस्था में थी। आज यह सुरों की मालिका अर्पित कर रही है पावन मा गंगा जी के तट पर बाबा विश्वनाथ जी के दरबार में यह सुखद संयोग है।